શ્રી યશોવિજયજી
જૈન ગ્રંથમાળા
દાદાસાહેબ, ભાવનગર.
ફોન : ૦૨૭૮-૨૪૨૫૩૨૨
૩૦૦૪૮૪૬

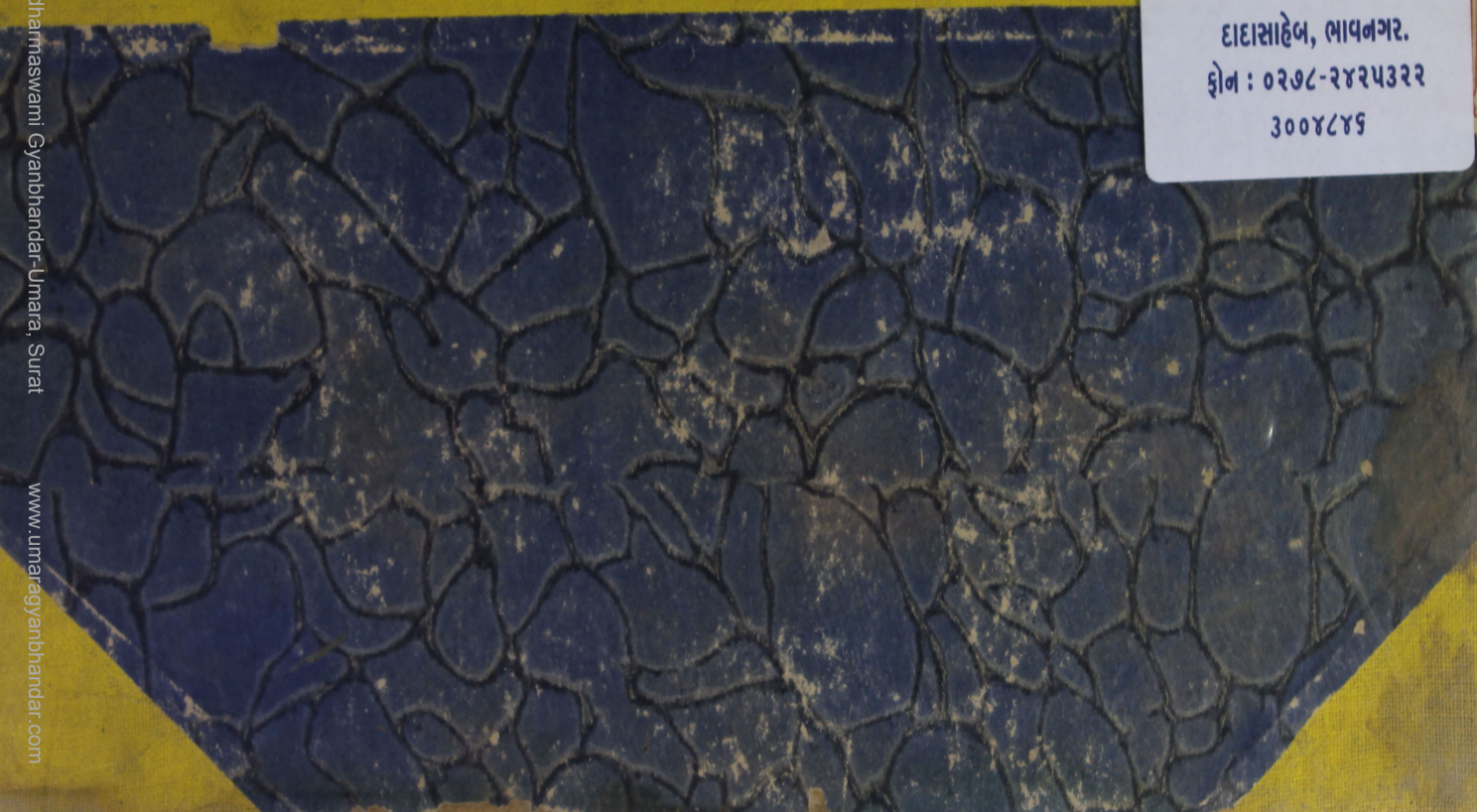

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat
www.umaragyanbhandar.com

जैन और बौद्ध का भेद

JAIN AND BAUDHS

TAKEN FROM THE

INTRODUCTION

TO THE

BHADRABAHU'S KALPASUTRA

BY

HERMANN JACOBI

(LEIPZIG 1879.)

BY

RAJA SIVA PRASAD C. S. I.
FELLOW OF THE UNIVERSITIES OF CALCUTTA AND ALLAHABAD.

राजा शिवप्रसाद सितारेहिंद कृत

लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपा

फ़रवरी सन् १८९० ई०

2nd edition 1 200 copies. Price per copy, 3 pies.

दूसरी बार १२०० प्रति कीमत प्रति पुस्तक)i

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जैन और बौद्ध का भेद

JAIN AND BAUDHS

TAKEN FROM THE

INTRODUCTION

TO THE

BHADRABAHU'S KALPASUTRA

BY

HERMANN JACOBI

(LEIPZIG 1879.)

BY

RAJA SIVA PRASAD C. S. I.
FELLOW OF THE UNIVERSITIES OF CALCUTTA
AND ALLAHABAD.

राजा शिवप्रसाद सितारेहिंद कृत

लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपा

फ़रवरी सन् १८८० ई०

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जैन और बौद्ध का भेद ॥

अक्सर फ़रंगी विद्वान जैन और बौद्ध दोनों को आरम्भ ही से अलग२ न समझ कर एक को दूसरेसे निकला बतलाते हैं कोल्ब्रूक ने गौतम बुद्ध को वर्द्धमान महावीर का चेला समझा क्योंकि महावीर का एक चेला इन्द्रभूति था कि जिस को गोतम स्वामी और निरा गौतम के नाम से भी पुकारते हैं प्रिंसिप और टामस इन दोनों की भी यही राय है लेकिन बेबर कहताहै कि ऐसा नहीं होसक्ता क्योंकि इन्द्रभूति ब्राह्मण था और गौतम बुद्ध क्षत्री उसका गोत्र गौतम होने से वह बुद्ध नहीं होसक्ता अगर इन्द्रभूति वर्द्धमान महावीर का मत छोड़कर दूसरा मत अंगीकार करता तो जैन सूत्र कभी उसको अच्छा न कहते उसकी पूरी बुराई लिखते क्योंकि सूत्र साफ़ कहते हैं कि महावीर के भानजे जमालिने मतमें पहला भेद डाला और महावीर के दूसरे चेले गोसाले मक्खलि पुत्र का भी ठट्ठा किया है यह ज़ाहिरा पाली सूत्र का मक्खलि गोसाला है कि जो बुद्ध के छः अनुमती आचार्य्यवादियों में से एक था ॥

विलसन जैनियों को बौद्धों की एक शाखा बतलाता है और उस को दसवींसदी में यहां बौद्धों के

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

नाश होनेपर निकला समझता है वेबर जैन को इस से पुराना जानता है लेकिन बौद्धों को उस से भी आगे लासन वेबर का साथी है बिलसन के अनुसार यह कहा जासक्ताहै कि जैन सूत्र महावीर को केवल विहार का रहनेवालाही नहीं बतलाते कि जहां बुद्ध रहा और उपदेश दिया बल्कि बुद्धका सहकाली और उन्हीं राजाओं की सहाय में उसे लिखते हैं जो बुद्ध के सहकाली थे अगर्चि श्रेणिक और कूणिक या कोणिक वह नहीं हैं जिनका नाम अक्सर बौद्ध ग्रन्थोंमें पाया जाता है तौ भी श्रेण्य या श्रेणिक बिम्बिसार का विरुद मालूम होता है और उस के बेटे कूणिक का नाम औपपात्तिक सूत्र में बिम्बिसार पुत्र लिखा है हेमचन्द्र बम्भसार लिखता है यह बिम्बिसार का बेटा अजातशत्रु मालूम होता है क्योंकि जैन और बौद्ध दोनों उन दोनों को लिखते हैं कि अपने बाप को मारडाला था कूणिक का बेटा उदायिन जिसने जैनियों के मुताबिक़ पाटलिपुत्र बसाया था वही उदयि अजातशत्रु का बेटा है जिसको बौद्ध पाटलिपुत्र का बसानेवाला मानते हैं इस में किसी तरह का संदेह नहीं कि बुद्धके सहकाली बिम्बिसार और अजातशत्रु श्रेणिक और कूणिक के नाम से जैन अंगों में महावीर के सहकाली लिखे हैं इन से छोटों पर भी यह बात ठीक ठहरती है जैसे गोसाल मंखलिय

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मक्खलि मंखलि या मक्खलि का बेटा बिम्बिसार या बिम्भिसार और लिच्छवि या लेच्छई राजा विलसन के मुवाफ़िक़ यह दलील ठहरती है कि शाक्यसिंह और वर्द्धमान के लक़ब और नाम वही बुद्ध जिन और महावीर दोनों दर्ज करते हैं और स्त्री दोनों की यशोदा लिखी है लेकिन इसके सिवाय और कोई बात जो बुद्ध के लिये लिखीगई है वर्द्धमान के मुवाफ़िक़ नहीं पड़ती है मसलन् दोनों के रिश्तादारों के नाम और जन्मभूमि चेले उमर और उनके वाक़िआत और दोनों के चाल चलन जहांतक कि वे उन के उपदेश से मालूम होते हैं बिल्कुल जुदा २ हैं निदान महावीर और बुद्ध दो आदमी थे परन्तु एकही समय में और इसीलिये दोनों का मत एकसा मालूम होता है क्योंकि दोनों की जड़ एक थी और दोनों ब्राह्मणों के बर्ख़िलाफ़ कि जैसी उस समय के लोगों की तबीअत ही होगई थी क्योंकि सामन्नफलसूत्र में छओं वादियों का हाल पढ़ने से जो बुद्ध के समयमें थे ज़ाहिर होता है कि सब नये नये मत निकालना चाहते थे बुद्ध बढ़गया तो क्या अचरज है कि महावीर का मत भी जड़ पकड़ गया अब हमको उनकी भी सुननी चाहिये जो बौद्ध को जैन से पहले मानते हैं वह कहते हैं कि जैनियों में जातिभेद है अर्थात् ब्राह्मण जब बौद्धों को निकालने लगे बौद्ध जाति भेद

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मानकर जैनी होगये पर यह वाहियात है जैनियों में दोही भेद हैं साधु (यति) और श्रावक और अगर वह जातिभेद मानते हैं तो लंका के बौद्ध भी मानते हैं इस्से मत से कुछ इलाक़ा नहीं यह तो आपस का ब्यौहार है यहबात भी कि बौद्धों की पाली भाषा जैनियों की प्राकृत से पुरानी है लिहाज़ के लाइक़ नहीं क्योंकि जैनियों के सूत्र जैसे अब हैं महावीर के निर्वाण से प्रायः एक हज़ार बरस पीछे लिखेगये इस अर्से में ज़रूर बोली बदली होगी सिवाय इसके जैनियों के १४ पूर्व नाश होगये ॥

जैनियों के शास्त्र से साबित है कि महावीर बिम्बिसार और अजातशत्रु के समय में थे सूत्रों में जैन साधुओं को निग्रंथ और साध्विओं को निग्रंथी लिखा है बराहमिहिर और हेमचंद्र उनको निग्रंथ लिखते हैं शंकर और आनंदगिरि इत्यादि और २ लिखनेवाले उसके बदल उनको विबसन और मुक्तांवर के नाम से लिखते हैं अशोक के शिलास्तंभों पर बौद्ध श्रमणों से जुदा साधुओं को निगंठ कहा है कि जिसको डाक्टर बुहलर जैनियों का निर्ग्रंथ समझता है बौद्धों के पीटकों में अक्सर निगंठों को बुद्ध और बौद्धों का वादी लिखा है निदान इन बातों से साबित होताहै कि जैनी और बौद्ध बराबर के मत वाले थे और आरंभही से इस बराबरी का प्रमाण

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

उनके कई पुराने इतिहासों से हाथ लगता है जैसे बौद्ध लोग साफ़ कहते हैं कि अजातशत्रु ने अपने बापको मारडाला और वह बौद्ध होनेसे पहले बहुत बद और ख़राब था जैनी लोग कूणिक अर्थात् उसी अजातशत्रु को जानी बूझी पितृहत्या के दाग़ से बचाने की कोशिश करते हैं क्योंकि निरयावलि सूत्र के अनुसार कूणिक ने अपने बापको अपने लिये अन्याई समझ के क़ैद कर दिया था परंतु जब अपनी मा से सुना कि उसका बाप तो उसे सदा प्यार करता रहा है और कोई बात ऐसी नहीं की कि जिस से क़ैद के योग्य हो कूणिक अपनी माकी बात मान के एक कुठार लेके अपने बाप की बेड़ियां काटने को चला उसके बाप श्रेणिक अर्थात् बिम्बिसार ने यह समझके कि कुठार से मुझे मारने को आता है उसे इस पाप से बचाने के लिये अपने तईं आप मारडाला अर्थात् आत्मघात किया कूणिक बहुत पछताया और बाप को मरा देख के बड़ा दुखी हुआ इस से मालूम होता है कि अजातशत्रु ने बौद्धों को मदद देने से पहले जैनियों पर कृपादृष्टि की थी॥

मथुरा में कंकली टीले से जेनरल कनिंघम ने एक नंगी खड़ी मूरत निकाली है उस पर खुदाहुआ है "नमो अर्हत महावीर देवनास" इस से ज़ाहिर है कि यहां महावीर से मुराद वर्द्धमान है बुद्ध नहीं

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

और उस मूरत पर संवत्सर ९८ खुदा है और उसी जगह से निकले हुए दूसरे पत्थरों पर हविश्क और कनिश्क के नाम रहने से साबित है कि वह विक्रमही का संवत्सर है सिवाय इसके बौद्धों के शास्त्रों में जैन मत स्थापन करनेवाले अथवा उसे दुरुस्त करनेवाले का चरचा है कुछ जैनियों के नाम से नहीं किन्तु निगंठनाथ या निगंठनात पुत्त के नाम से निगंठ तो जैनी साधुओं का नाम मालूम ही है नातपुत्त हम नायपुत्त जो कल्पसूत्र और उत्तराध्ययन सूत्र में महावीर का विरुद लिखा है समझते हैं नयपाल के बौद्ध पुस्तकों में निगंठनाथ को ज्ञाति का पुत्र लिखा है और जैन लोग महावीर को ज्ञात पुत्र कहते हैं हेमचन्द्र के परिशिष्ट पर्व्व का यह श्लोक है "कल्याणपादपरमं श्रुतगङ्गाहिमाचलम् । विश्वां भोजरविं देवं वन्दे श्रीज्ञातनन्दनम् ॥ ,, महावीर को ज्ञातनन्दन इसवास्ते कहा कि कल्पसूत्र में उनके बाप को ज्ञात क्षत्रिय लिखा है सामन्नफल सूत्र में निगंठनाथ पुत्र को अग्नि वैश्यायन लिखा है यह बौद्धों कीभूल मालूम होती है उन्होंने शायद महावीर को उस के मुख्य शिष्य सुधर्मासे मिलाकर एक कर दिया क्योंकि सुधर्मा अग्नि वैश्यायन था अफ़सोस सामन्नफल सूत्र में जहां निगंठनात पुत्त का मत वर्णन किया है शाक़ा और संवत् नहीं लिखा

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

तौ भी उस में कोई बात ऐसी नहीं है कि जिस से निगंठनात पुत्त और महावीर दोनों एक न होसकें आत्मावतार और वैश्यन्तर इत्यादि बौद्ध पुस्तकों में लिखाहै कि अपने पहले शिष्य उपालि से कि जो बौद्ध होगया था लड़कर निगंठनात पावा में मरे कल्पसूत्र महावीर का निर्वाण पावा में बतलाता है और जैन जती निगंठ कहलाते थे पस इसमें कुछ संदेह नहीं कि निगंठनाथसे मतलब महावीरहीसें है ॥

सिवाय इसके इस बात का कि बुद्ध और महावीर दोनों जुदा जुदा थे पर एकही समय में जैनकी तारीखों से पक्का पता लग जाता है बुद्ध का निर्वाण सन् ईसवी से ४७७ बरस पहले हुआ और महावीर का निर्वाणस्वेताम्बरी जैनियों के कहने बमूजिब विक्रमके संवत्से ४७० बरस पहले और दिगम्बरियों के बमूजिब ६०५ बरस पहले हुआ यह १३५ बरस का फ़र्क़ जो दोनों आमनायवालों के बीच में पड़ा है विक्रमके संवत् और शालिवाहनके शाके का है विक्रम के संवत् से ४७० बरस पहले निर्वाण हुआ यह स्वेताम्बरियों की बहुत पुस्तकों में लिखा है सब से पुराना प्रमाण वह है जो मेरुतुंगके विचार श्रेणी की जड़ है और निर्वाण का संवत् राजाओं के काल से निर्णय किया है ॥

"जंरयणिं काल गओ अरिहा तित्थं करो महावी-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

रो तं रयणिं अवंति वई अहिसितो पालगोराया॥ १ ॥
सट्ठी पालग रण्णोपणवण्ण सयं तु होइनं दाण
अट्ठसयं मुरियाणं तीसं चिअ पूसमित्तस्स ॥ २ ॥
बलमित्त भानुमित्ता सट्ठीवरिसाणि चत्तनहवहणे
तहगद्दभिल्लरज्जं तेरसवरिसा सगस्सचौ ॥ ३ ॥,,
अर्थात् पालक अवन्ती के राजा का उस रात को रा-
ज्याभिषेक हुआ कि जिस रात को अर्हत तीर्थंकर
महावीर का निर्वाण हुआ ॥ १ ॥ साठ बरस राजा
पालक के लेकिन १५५ बरस नन्दों के १०८ मौर्यों
के और ३० पूसमित्त अर्थात् पुष्पमित्र के ॥ २ ॥
६० बरस बलमित्र और भानुमित्र ने राज किया ४०
नभोवाहन ने १३ बरस इसी तरह गर्दभिल्ल का
राज रहा और शाका ४ है ॥ ३ ॥ यह श्लोक बहुत
पोथियों में लिखे हैं और पुराने जैनियों ने इसी
के अनुसार महावीर और विक्रम के संवत् ठहरा-
ये हैं पर इन की असल नहीं मालूम होती ४
शाके का १३ गर्दभिल्ल का ४० नभोवाहन का ६०
बलमित्र और भानुमित्र का ३० पुष्पमित्र का और
१०८ मौर्यों का जोड़ने से २५५ होता है और उस
में विक्रम के संवत् का ५७ बरस मिलाने से चन्द्रगुप्त
का अभिषेक ३१२ बरस सन् ईसवी से पहले
ठहरता है और यूनानियों के संवत् से इस संवत् के
पास पास मिलजाने से साबित होता है कि विक्रम

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जो तीसरे श्लोक में लिखा है वही विक्रम है जिसने सन् ईसवी से ५७ बरस पहले संवत् चलाया और सन् ईसवी ७८ का शाका चलानेवाला शालिवाहन हीं है ६० बरस पालक के राज के और १०५ नवनन्दों के अर्थात् २१५ बरस चंद्रगुप्त के अभिषेक में अर्थात् सन् ईसवी से पहले ३१२ में मिलाने से महावीर का निर्वाण सन् ईसवी से ५२७ बरस पहले ठहरता है सिंहल अर्थात् लंकावाले बुद्ध का निर्वाण सन् ईसवी से ५४३ बरस पहले मानते हैं पस कुल १६ बरस का फ़र्क रह जाता है ॥

हेमचन्द्र अपने परिशिष्टापर्व में लिखता है "एवं च श्रीमहावीरे मुक्ते वर्ष शते गते। पंच पंचाशदधिके चंद्रगुप्तो भवन्नृपः ॥ १ ॥" इससे यह बात निकलती है कि महावीर के निर्वाण से १५५ बरस पीछे चंद्रगुप्त का अभिषेक हुआ हेमचंद्र पालक के राज का ६० बरस नहीं लेता इस कारन महावीर का निर्वाण हेमचंद्र के अनुसार ४६७ बरस सन् ईसवी से पहले पड़ता है और सिंहलवालों की भूल जो अब सही की गई है उस के अनुसार बुद्ध का निर्वाण भी ४७७ बरस सन् ईसवी से पहले पड़ता है कि जिस से कुल १० बरस का फ़र्क रह जाता है और यही शुद्धतर मालूम होता है ॥ इति

—०—

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

निवेदन

(अर्थात् दयानंदीमत का खंडन)

राजा शिवप्रसाद सितारैहिन्द

इलाहाबाद और कलकत्ते की यूनिव-
र्सिटी के फ़ेलो का

सज्जन आर्य्य पुरुषों से

NIVEDAN

BY

RAJA SIVA PRASAD, C. S. I.,

FELLOW OF THE UNIVERSITIES OF

ALLAHABAD AND CALCUTTA.

लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर (सी,आई,ई) के छापेखानेमें छापा गया

नवम्बर सन् १८९७ ई०

2nd edition 600 copies.
Price per copy 1 Anna.

दूसरीबार ६०० पुस्तकें
मोल प्रतिपुस्तक १

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

निवेदन

मैंने श्रीमत्स्वामि दयानन्दसरस्वतीजीका जो कुछ चर्चा देश देशान्तरों में सुना मन में आया कि जैसे किसी समय में विष्णु भगवान् ने वेदोद्धार किया बतलाते हैं कदाचित् फिर भी इस कलिकाल में उसी लिये दयानन्द जी ने अवतार लियाहो दैव संयोग से एक दिन मैं किसी मेम (१) और साहिब के देखने को गया था तो वहां उस बाग़ में पहले दयानन्दजी महाराजही का दर्शन हुआ मैंने जिज्ञासा की कुछ उपदेश चाहा प्रश्नोत्तर पूरे नहीं भये साहिब आगये और और बातें होनेलगीं मैं घर आया पर जितना महाराजजी के मुखारविन्द से सुना था बड़े सन्देहका कारण हुआ निवृत्यर्थ पत्रलिखा महाराज जी ने कृपा करके उत्तर दिया उसे देख मेरा सन्देह और भी बढ़ा महाराजजीके लिखने अनुसार ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका मँगा के पृष्ठ ६ से ८८ तक देखा विचित्र लीला दिखाई दी आधे आधे बचन जो अपने अनुकूल पाये ग्रहण किये हैं और शेषार्ध का जो प्रतिकूल पाये परित्याग उन आधे अनुकूल में भी जो कोई शब्द अपने भावसे विरुद्ध देखे उनके अर्थ पलटदिये मनमाने लगालिये घबराया कि छापेकी अशु-

(१) जगत् विख्यात मादम ब्लवट्स्की और कर्नल ओल्काट ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

हुताहै वा मेरी समझ और आंखों का दोष फिर पत्र लिखा उसका जो उत्तर पाया तो जाट और खाट और मुग़ल और कोल्हूकी कहावत याद आयी श्रीमत्पण्डितवर वालशास्त्री जी तो बाहर गये हैं परम पूजनीय जगत्गुरु श्री स्वामी विशुद्धानन्दजी के चरणों में पहुंचा पत्र और उत्तरों को देखकर बहुत हँसे और पिछले उत्तर पर जिसमें इन दोनों महात्माओं का नाम है कुछ लिखवा भी दिया अब मैं महा विकट विस्मयावर्त्त में पड़ाहूं न तो यह कह सक्ताहूं कि स्वामी दयानन्दजी संस्कृत शब्दों का अर्थ नहीं समझते और न यह अपने मन में लासक्ताहूं कि आपतो समझतेहैं दूसरों के बहकाने और भुलाने को यह अर्थाभास रचाहै क्योंकि ऐसा काम सत्पुरुषों का नहीं है जो हो मैंने अपने पत्र और स्वामी दयानन्द जीके उत्तरों का इसमें छपवा देना बहुत उचित समझा कि जो सज्जन आर्य लोग उन की बनायी ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका देखते हैं अपनी बुद्धि को कुछ काममें लावें और दूसरे पण्डितोंसे भी सम्मति लेवें ऐसा न हो कि अंधेनैव नीयमाना यथान्धाःके सदृश केवल दयानन्दजीके भाष्य और भूमिका ही की लाठी थामे किसी अथाह गढ़े वा नरककुण्ड में जा गिरें क्योंकि किसी पारसी कवि ने कहा है

اگر بینم کہ نا بینا و چاہست وگر خامرش بنشینم گناہست

इत्यलम् किमधिकम् ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मेरा पहलापत्र ।

काशी सम्वत् १६३७ चैत्र शुक्ला ११

श्री ५ मत्स्वामि दयानन्द सरस्वतीभ्यो नमोनमः

जब दर्शन पाया कुछ बात हुई अधूरी रह गयी इच्छा थी फिर दर्शन करूं बन नहीं पड़ा अब सुना आप बाहर पधारने वाले हैं इसलिये उस दिन के अपनेप्रश्न और आपके उत्तर अपने स्मरणानुसार नीचे लिखताहूं यदि भूल हो आप सुधार दें आगे भी कृपा करके इसी पत्र पर कुछ उत्तर लिख भेजें

मेरा प्रश्न	स्वामीजी महाराजकाउत्तर
१ आपका मत क्याहै ?	१ हम केवल वेदकी संहिता मात्र मानते हैं एक ईशावास्य उपनिषद संहिता है और सब उपनिषद ब्राह्मण हैं ब्राह्मण हम कोई नहीं मानते सिवाय संहिता के हम और कुछ नहीं मानते ।
२ यदि वादी कहे कि आप वेद के ब्राह्मण नहीं मानते तो हम वेद की संहिता नहीं मानते तो आप संहिता के मण्डन और	२ संहिता स्वयं प्रकाश है अनुभव सिद्ध है ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

ब्राह्मण के खंडन का ऐसा प्रमाण दीजिये जिस से ब्राह्मण का मंडन और संहिता का खंडन न होसके वादी को आप अपना प्रतिध्वनि समझिये प्रमाण चाहे ४ मानिये चाहे ६ चाहे ८ चाहे सहस्रों सिवाय शाब्दके और सब का सहारा प्रत्यक्षहै सो इसमें प्रत्यक्ष होसकेगा नहीं और शाब्द जोआपने ब्राह्मणही को नहीं माना तो दूसरा कहां से लाइयेगा केवल आपके कहने से कोई कुछ क्यों मान लेगा ?

३ वादी कहता है कि ब्राह्मण स्वयं प्रकाश और अनुभव सिद्ध हैं ?

आपका दास शिवप्रसाद

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

स्वामीदयानन्दजीकाउत्तर

॥ ओ३म् ॥

सम्वत् १९३७ चैत शुदी १२ गुरुवार । राजा शिवप्रशादजी आनन्दित रहो आप का चैत शुक्ला ११ बुधवार का लिखा पत्र मेरे पास आया देखि के आप का अभिप्राय विदित हुआ उस दिन आप से और मुझ से परस्पर जो २ बातें हुई थीं तब आप को अवकाश कम होने से मैं न पूरी बात कह सका और न आप पूरी बात सुन सके क्योंकि आप उन साहबों से मिलने को आये थे आप का वही मुख्य प्रयोजन था पश्चात् मेरा और आप का कभी समागम न हुआ जो कि मेरी और आप की बातें उस विषय में परस्पर होतीं अब मैं आठ दश दिनों में पश्चिमको जाने वाला हूं इतने समय में जो आप को अवकाश होसके तो मुझ से मिलिये फिर भी बात होसकी है और मैं भी आप को मिलता परन्तु अब मुझ को अवकाश कुछ भी नहीं है इस से मैं आप से नहीं मिलि सकूंगा क्योंकि जैसा सन्मुख में परस्पर बातें होकर शीघ्र सिद्धान्त होसका है वैसा लेख से नहीं इसमें बहुत काल की अपेक्षा है।

आपका प्रश्न	मेरा उत्तर
१ आप का मत क्या है	१ वैदिक

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

२ आप वेद किसको मानते हैं

२ संहिताओं को

३ क्या उपनिषदों को वेद नहीं मानते

३ मैं वेदों में एक ईशावास्य को छोड़के अन्य उपनिषदों को नहीं मानता किन्तु अन्य सब उपनिषद ब्राह्मण ग्रन्थोंमें हैं वे ईश्वरोक्त नहीं हैं

४ क्या आप ब्राह्मण पुस्तकोंको वेदनहीं मानते

४ नहीं क्योंकि जो ईश्वरोक्तहै वही वेद होताहै जीवोक्त नहीं जितनेब्राह्मण ग्रन्थ हैं वे सब ऋषि मुनि प्रणीत और संहिता ईश्वर प्रणीत है जैसा ईश्वरके सर्वज्ञ होनेसे तदुक्त निर्भ्रान्त सत्य और मतके साथ स्वीकार करने के योग्य होताहै वैसा जीवोक्त नहीं होसक्ता क्योंकि वे सर्वज्ञ नहीं परन्तु जो २ वेदानुकूल ब्राह्मण ग्रन्थ हैं उनको मैं मानता और विरुद्धार्थों को नहीं मानता

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

हूं वेद स्वतः प्रमाण और ब्राह्मण परतः प्रमाण हैं इससे जैसे वेदविरुद्ध ब्राह्मण ग्रन्थोंका त्यागहोता है वैसे ब्राह्मण ग्रन्थों से विरुद्धार्थ होनेपर भी वेदोंका परित्याग कभी नहीं होसक्ता क्योंकि वेद सर्वथा सबको माननीयही हैं

अब रहगया यह विचार कि जैसा संहिताही को ईश्वररोक्त निर्भ्रान्त सत्य वेद मानना होता है वैसा ब्राह्मण ग्रन्थों को नहीं इसका उत्तर मेरी बनाई ऋग्वेदादि भाष्य भूमिकाके नवमें पृष्ठ से ६ लेके ८८ अट्ठासी के पृष्ठ तक वेदोत्पत्ति, वेदों का नित्यत्व, और वेद संज्ञाविचार विषयों को देख लीजिये वहां मैं जिसको जैसा मानता हूं सब लिखरक्खाहै इसी को बिचारपूर्वक देखनेसे सब निश्चय आपको होगा कि इन विषयों में जैसा मेरा सिद्धान्त है वैसाही जानि लीजियेगा ॥

(दयानन्दसरस्वती)

। काशी ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मेरा दूसरा पत्र

श्री काशी वाराणसी सम्वत् १९३७ चैत्रशुक्ला पूर्णिमा
श्री ५ मत्स्वामि दयानन्द सरस्वतीभ्यो नमो नमः

आप का कृपापत्र चैत्र शुक्ला १२ का पा अत्यन्त कृतार्थ हुआ ग्रीष्म का प्रचंड उत्ताप अवकाश नहीं देता कि आपके दर्शनानन्द से मन ठंढा करूं तब तक आप कृपा करके पत्र द्वारा मेरे मनको सन्देह के ताप से बचावें ॥

आपने लिखा " ब्राह्मण ग्रन्थ+सब ऋषि मुनि प्रणीत और संहिता ईश्वर प्रणीतहैं " वादीकहताहै जो "संहिता ईश्वर प्रणीतहै"तो ब्राह्मणभी ईश्वर प्रणीतहै और जो "ब्राह्मण ग्रन्थ+सब ऋषि मुनि प्रणीत" है तो संहिता भी ऋषि मुनि प्रणीत है आपने लिखा"वेद (संहिता) स्वतः प्रमाण और ब्राह्मण परतः प्रमाण हैं" वादी कहताहै जो ऐसा तो ब्राह्मणही स्वतः प्रमाण है आपका संहिता परतः प्रमाण होगा (२) आपने प्रमाण ऐसा कोई दिया नहीं (३) जिस्से जिज्ञासू की तुष्टि

---

(२) मैं अपने पहले पत्रमें लिखचुका हूं कि "वादी को आप अपना प्रतिध्वनि समझिये" ॥

(३) स्वामीजी महाराज प्रमाण कुछ भी नहीं देते जो आप अपने मनमानी कह देते हैं उसी को चाहेते हैं कि लोग विधाता का लेख जानें ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

प्रश्न की पूर्ति और सिद्धान्त की आशा हो आपने लिखा कि "मेरी बनायी हुई ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के नवमें पृष्ठसे (६ लेके ८८) अट्ठासीके पृष्ठ तक वेदोत्पत्ति वेदोंका नित्यत्व और वेद संज्ञा विचार विषयों को देख लीजिये" "निश्चय+होगा" सो महाराज "निश्चय" के पलटे में तो और भी भ्रान्ति में पड़गया मुझे तो इतनाही प्रमाण चाहिये कि आपने संहिता को "माननीय" मानकर ब्राह्मण का क्यों "परित्याग" किया और वादी तो संहिता जैसा ब्राह्मणको वेद मान जो आपने "वेद" के अनुकूल लिखा अपने अनुकूल और जो कुछ ब्राह्मण के प्रतिकूल लिखा उसे संहिता के भी प्रतिकूल समझता है तौ भी मैंने आपकी "भाष्य भूमिका" मँगा के देखी पर उसमें क्या देखताहूं कि पहलेही (पृष्ठ ६ पंक्ति ८) लिखा है "तस्माद्यज्ञात् + + + अजायत" अर्थात् उस यज्ञसे (वेद) उत्पन्न हुए पृष्ठ १० पंक्ति २६ में आप शतपथ आदि ब्राह्मणका प्रमाण देकर यह सिद्ध करतेहैं कि यज्ञ विष्णु और विष्णु परमेश्वर (४) और फिर पृष्ठ ११ पंक्ति १२ में आप यह लिखतेहैं कि "याज्ञवल्क्य महाविद्वान् जो महर्षि हुए हैं अपनी पंडिता मैत्रेयी स्त्री को उपदेश करते हैं

---

(४) कैसा आश्चर्य है कि आपही तो संहिताको "स्वतःप्रमाण" और ब्राह्मण को "परतःप्रमाण" लिखते हैं और फिर आपही

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

कि हे मैत्रेयि जो आकाशादि से भी बड़ा सर्व व्यापक परमेश्वर है उससे ही ऋक् यजुः साम और अथर्व ये चारों वेद उत्पन्न हुए हैं" परन्तु आपने याज्ञवल्क्यजी का यह वाक्य आधाही अपना उपयोगी समझ क्यों लिखा क्या इसीलिये कि शेषार्द्ध वादी का उपयोगी है? वाक्य तो यही हैः—एवंवा अरेऽस्य महतो भूतस्य निश्वसितमेतद्यद्दग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदो ऽथर्वांगिरस इतिहासः पुराणं विद्या उपनिषदः श्लोकाः सूत्राण्यनुव्याख्यानानि व्याख्यानानीष्टगं हुतमाशितं पायितमयंच लोकः परश्च लोकः सर्वाणिच भूतान्यस्यैवै तानि सर्वाणि निश्वसितानि अर्थात् अरी मैत्रेयि इस महाभूत के यह ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद इतिहास पुराण विद्या उपनिषद् श्लोक सूत्र अनुव्याख्या व्याख्या इष्ट हुत खाया पीया यह लोक परलोक सब भूत सब निश्वसित हैं (५) मुझे इस समय और कुछ

संहिता के "ईश्वरप्रणीत" होने के लिये "परतःप्रमाण" शतपथ ब्राह्मण का प्रमाण देते हैं जैसे किसी मुद्दई का गवाह गवाही दे कि मुद्दई का तमस्सुक सच्चा है पर मुद्दाअलेह की रसीद भी सच्ची है रुपया चुक गया और मुद्दई कहे कि गवाह झूठा है भरोसे के योग्य नहीं परन्तु अपना तमस्सुक ठीक होने के प्रमाण में उसी गवाह को आगे लाने अथवा अन्य प्रमाण (सबूत) मांगे तो कहे मैं कहता न हूं मेरा दावा सच्चा है!

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

तर्क वितर्क आवश्यक नहीं इतना कहना अलम् कि आपके इस प्रमाण से तो कि जो बृहदारण्यक ब्राह्मण का है जैसे वेद ईश्वर प्रणीत हैं वैसे ही उपनिषदादि सब ईश्वर प्रणीत हैं यदि इसका अर्थ यह कीजियेगा कि उपनिषद् जीव प्रणीत है तो आपका चारों वेद भी वैसाही जीव प्रणीत ठहर जायगा आपने संहिता स्वतः प्रमाण और ब्राह्मण को परतः प्रमाण लिखा और फिर संहिताके स्वतः प्रमाण सिद्ध करने को उन्हीं परतः प्रमाण ब्राह्मणों का आप प्रमाण लातेहैं सो इस व्याघात से छुटने के लिये यदि कुछ उत्तर हो आप कृपा करके शीघ्र लिख भेजें तब तक मैं आप की भाष्य भूमिका आगे नहीं देखूंगा पृष्ठों को कुछ उलट पुलट किया तो विचित्र लीला दिखाई देती है आप पृष्ठ ८१ पंक्ति ३ में लिखते हैं "कात्यायन ऋषि ने कहा है कि मंत्र और ब्राह्मण ग्रन्थों का नाम वेद है" पृष्ठ ५२ में लिखतेहैं प्रमाण ८ हैं और फिर पृष्ठ ५३ में लिखते हैं

---

(५) यह तो बड़ी हँसीकी बात है कि स्वामीजी महाराजने जिस बचन को संहिता "ईश्वर प्रणीत" होने के लिये प्रमाण दिया है उसमें से चारों वेद का नाम तो लेलिया और वेदों के आगे जो उपनिषदादि का नाम लिखा है उसे सम्पूर्ण छोड़ दिया मानो यह समझा कि हमारे सिवाय किसी ने बृहदारण्यक उपनिषद् देखाही नहीं है ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

चौथा शाब्द प्रमाण "आप्तों के उपदेश" पांचवां ऐतिह्य "सत्यवादी विद्वानों के कहे वा लिखे उपदेश" तो आपके निकट कात्यायन ऋषि "आप्त" और "सत्यवादी विद्वान्" नहीं थे (६) पृष्ठ ८२ में आप लिखते हैं कि ब्राह्मण में जमदग्नि कश्यप इत्यादि जो लिखे हैं सो देहधारी हैं अतएव वह वेद नहीं और संहिता में शतपथ ब्राह्मण (!) के अनुसार जमदग्नि का अर्थ चक्षु और कश्यप का अर्थ प्राण है अतएव वेद है (! !) फिर आप उसी पृष्ठ में लिखते हैं कि "ब्राह्मणानीतिहासान्पुराणानिकल्पान् गाथानाराशंसीः" (७) "इस वचन में ब्राह्मणानिसंज्ञी और इतिहासादि संज्ञा है" तो इसयुक्तिसे बृहदारण्यक का वचन जो मैंने ऊपर लिखा है उसमें भी क्या उपनिषद संज्ञी और इतिहास पुराणादि संज्ञाहै अथवा ऋग्वेदादि क्रमानुसार उनका संज्ञी वा संज्ञा है ? पृष्ठ ८८ पंक्ति १२ में आप लिखते हैं कि "ब्राह्मण+++

---

(६) भाई ! आपही कहो कि कात्यायन ऋषिजी को झूठ बोलने का क्या प्रयोजन था क्या कोई उनका भी मुकद्दमा किसी अंगरेजी अदालत वा कचहरी में पेश था भला वह झूठ लिखते तो उनके सहकाली लोग उसे कब चलने देते पर जो हो दयानन्दजी ने कात्यायनजी को झूठा बनाया तो मैं पूछताहूं कि जब कात्यायनजी ही झूठे ठहरे तो अब दयानन्दजी की बातयोंही कौन मान लेगा ! (७) इस का अर्थ बहुत स्पष्ट है अर्थात् ब्राह्मण (और) इतिहास (और) पुराण (और) कल्प (और) गाथा (और) नाराशंसी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

वेदोंके अनुकूल होनेसे प्रमाण के योग्य तो हैं" यदि आप इतना और मान लें कि सम्पूर्ण ब्राह्मणों का प्रमाण संहिता के प्रमाण के तुल्य है अथवा पृष्ठ ४२ पंक्ति ७ में आप लिखतेहैं "तत्रापरा ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदो ऽथर्ववेद शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं छन्दो ज्योतिषमिति अथ परा यया तदक्षरमधिगम्यते" इसका अर्थ सीधा सीधा यह मान लेवें कि आप के चारों वेद और उनके छओं अंग "अपरा" हैं जो "परा" उससे अक्षर में अधिगमन होताहै अपना फिरवटका अर्थ वा अर्थाभास छोड़दें (८) तो बड़ा अनुग्रह हो मेरा सारा परिश्रम सफल होजावे और आपके दर्शन का उत्साह बढ़े किमधिकमित्यलम् । आप का दास शिवप्रसाद

परन्तु स्वामीजी महाराज ने पहले (और) की जगह (अर्थात्) कल्पना कर लिया अर्थात् ब्राह्मण अर्थात् इतिहास पुराणादि !

(८) स्वामीजी महाराज अपनी भाष्य भूमिका में पृष्ठ ४२ पंक्ति (७ , इस के अर्थ यों लिखते हैं "(तत्रापरा०) वेदों में दो विद्या हैं एक अपरा दूसरी परा इन में से अपरा यह है कि जिससे पृथिवी और तृण से लेके प्रकृति पर्यन्त पदार्थों के गुणों के ज्ञान से ठीक ठीक कार्य सिद्ध करना होता है और दूसरी परा कि जिस से सर्वशक्तिमान् ब्रह्म की यथावत् प्राप्ति होती है यह परा विद्या अपरा विद्यासे अत्यन्त उत्तम है क्योंकि अपराकाही उत्तम फल परा विद्या है" निदान स्वामीजी महाराज ने इतना तो लिखा परन्तु सीधा अर्थ वा आशय नहीं लिखा कि चारोवेद (संहिता) और उनके छओं अंग अपराहै परा उनके सिवाय अर्थात् उपनिषद् है ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

स्वामी दयानन्दजी का पिछला उत्तर ॥

राजा शिवप्रसादजी आनन्दित रहो आप का पत्र मेरे पास आया देख कर अभिप्राय जान लिया इस से मुझ को निश्चित हुआ कि आप ने वेदों से लेके पूर्व मीमांसा (९) पर्यन्त विद्या पुस्तकों के मध्य मेंसे किसी भी पुस्तक के शब्दार्थ सम्बन्धों को जाना नहीं है इसलिये आप को मेरी बनाई भूमिका का अर्थ भी ठीक २ विदित न हुआ जो आप मेरे पास आके समझते तो कुछ समझ सकते परन्तु जो आप को अपने प्रश्नों के प्रत्युत्तर सुननेकी इच्छा हो तो स्वामी विशुद्धानन्द सरस्वती वा बालशास्त्री जी को खड़ा करके (१०) सुनियेगा तोभी आप कुछ २ समझलेंगे क्योंकि वे आपको समझावेंगे तो कुछ आशा है समझ जायँगे भला विचार तो कीजिये कि आप उन पुस्तकों के पढ़े विना वेद और ब्राह्मण पुस्तकों का

---

(९) जान पड़ताहै कि स्वामीजी महाराजने पूर्वमीमांसाही तक देखा है उत्तर मीमांसा नहीं देखा नहीं तो ऐसा न लिखते ॥

(१०) तो जहां जहां जिसके जिसके पास भाष्य भूमिका जाता है उसके पास स्वामी विशुद्धानन्दजी और पंडित बालशास्त्रीजी को जाना चाहिये अथवा उनसबको समझने के लिये दयानन्दजी के पास जाना चाहिये ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

कैसा आपस में संबन्ध क्या २ उनमें हैं और स्वतः प्रमाण तथा ईश्वरोक्त वेद और परतः प्रमाण और ऋषि मुनि कृत ब्राह्मण पुस्तकहैं इन हेतुओं से क्या २ सिद्धान्त सिद्ध होते और ऐसे हुए विना क्या २ हानि होती है इन विद्यारहस्यकी बातों को जाने विना आप कभी नहीं समझ सक्ते ॥ सं० १९३७ मि० वै० व० सप्तमी शनिवार (दयानन्दसरस्वती)

(स्वामी विशुद्धानन्दजी का लिखवाया) राजा साहिब के प्रश्नों का उत्तर दयानन्द से नहीं बना ! ॥

इति ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

दूसरा वा पिछला

निवेदन

(अब इस विषय में आगे कुछ नहीं लिखा जायगा)

एक पुस्तक भ्रमोच्छेदन नाम मेरे "निवेदन के उत्तर में" श्रीमत्स्वामि दयानन्द सरस्वतीजी का निर्माण किया हुआ आया समझा कि अब अवश्य स्वामी जी महाराज ने यथा नाम तथा गुणः दया करके मेरे प्रश्न का उत्तर भेजा होगा बड़े उत्साह से खोल के देखा तो शिवप्रसाद कम समझ, आलस्यी, उसको संस्कृत विद्या में शब्दार्थ सम्बन्धों के समझने की सामर्थ्य नहीं, वह अयोग्य, उसकी समझ अति छोटी, वह अविद्वान्, अधर्म कर्मसे युक्त, अनधिकारी, उसके नेत्र फूट गये हैं, उसकी अल्प समझ, वह श्वानके समान, जैसी उसकी समझ वैसी किसी छोटे विद्यार्थी की भी नहीं, उसकी उलटी समझ, वह प्रमत्त अर्थात् पागल, उसको वाक्य का बोध नहीं, वह अन्धानां मध्ये काणो राजा, तात्पर्यार्थ ज्ञानशून्य, पक्षपातान्धकार से बिचार शून्य, अशास्त्रवित्, अव्युत्पन्न, व्यर्थ वैतण्डिक, अन्धा, उसकी मिथ्या आडम्बर युक्त लड़कपनकी बात, वह वादके लक्षण युक्त नहीं उसकी बुद्धि और आंखें अंधकारा-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

वृत्त, वह सन्निपाती, वह कोदों देके पढ़ा, वह अविद्या-युक्त, बालक, बधिर, बिचारा संस्कृत विद्या पढ़ाही नहीं, ऐसे ऐसे शब्द और वाक्यों से परिपूर्ण पाया खेदकी बातहै क्यों वृथा इतना काग़ज़ बिगाड़ा मैं तो आपही अपने को बड़ा बेसमझ बड़ा अविद्वान् बड़ा अधर्मी बड़ा अशास्त्रवित् बड़ा अव्युत्पन्न बड़ा अंधा पहलेसे मानेहुये हूं यदि इनकी जगह राम नाम लिखा होता कदाचित् कुछ पुण्यभी होसकता (राम राम) मेरे शिरपर जाट खाट और कोल्हू चढ़ाया है (भ्रमोच्छेदन पृष्ठ १०) (Thanks) पर मैं तो पहाड़ का भी बोझ सहसकता हूं हां मुझको छली और कपटी जो लिखा है उसका कारण कुछ समझमें नहीं आया यदि कहेंकि जो जैसाहोताहै वैसाही दूसरोंकोभी समझता है तो ऐसी बात मनमें लाने के भी पापका भागी मैं नहीं हुआ चाहता जो हो मैं तो अपने प्रश्नका उत्तर देखनेको विह्वल था प्रश्न मेरा एकही इतना कि " आपने लिखा 'ब्राह्मण ग्रंथ सब ऋषि मुनि प्रणीत और संहिता ईश्वर प्रणीत है' वादी कहताहै जो 'संहिता ईश्वर प्रणीत है' तो ब्राह्मण भी ईश्वर प्रणीत है और जो 'ब्राह्मण ग्रन्थ सब ऋषि मुनि प्रणीत' है तो संहिताभी ऋषि मुनि प्रणीत है आप ने लिखा वेद (संहिता मात्र) स्वतः प्रमाण और ब्राह्मण परतः प्रमाण हैं, वादी कहता है जो ऐसा तो ब्राह्मण

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

ही स्वतः प्रमाण है आप का संहिता परतः प्रमाण होगा (निवेदन पृष्ठ ८) "आप संहिता के मण्डन और ब्राह्मण के खण्डन का ऐसा प्रमाण दीजिये जिस से ब्राह्मण का मंडन और संहिता का खण्डन न होसके केवल आप के कहने से कोई कुछ क्यों मान लेगा" (नि० पृष्ठ ५) निदान भ्रमोच्छेदन की बाईसों पृष्ठें बाईस बार उलट डालीं इसके सिवाय उसमें और कुछ उत्तर नहीं पाया कि "देखिये राजाजी की मिथ्या आडम्बर युक्त लड़कपन की बात को जैसे कोई कहे कि जो पृथिवी और सूर्य ईश्वर के बनाये हैं तो घड़ा और दीप भी ईश्वर ने रचे हैं" और "जो सूर्य्य और दीप स्वतः प्रकाशमान हैं तो घटपटादि भी स्वतः प्रकाशमान हैं" (भ्र० पृष्ठ १२ और १३) भला सूर्य और घड़े की उपमा संहिता और ब्राह्मण में क्योंकर घट सकेगी उधर सूर्य के सामने कोई आध घंटे भी आंख खोल के देखता रहे अंधा नहीं तो चक्षु रोग से अवश्य पीड़ित होवे जेठ की धूप में नंगे शिर बैठे सन्निपाती नहीं तो ज्वरग्रस्त अवश्य होजावे यदि [illegible]युत्तेजक काच सामने धर दे कपड़ा लत्ताही जल जावे जनम भर उछले कूदे कैसे ही बलून पर चढ़े कभी सूर्य तक न पहुंचे इधर कुम्हार से यदि चाक डंडा और कुछ मिट्टी लेआवे चाहे जितने घड़े आप अपने हाथ बना लेवे और फिर जब

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

चाहे तोड़ डाले संहिता और ब्राह्मण दोनों ग्रन्थ हैं एक से काग़ज़ पर एक सी सियाही से लिखे हुए वा छपे हुए और एक से कपड़ों में बंधे हुए जब तक बतलाया न जावे जानना भी कठिन कि कौन संहिता है और कौन ब्राह्मण पर हां उस काल से लेकर कि जिससे पहले किसी को कुछ विदित नहीं आजतक सब वैदिक हिन्दू अर्थात् जो हिन्दू वेद को मानते हैं संहिता और ब्राह्मण दोनोंको बराबर माननीय मानते चले आये स्वामीजी महाराज को अपने ही इस न्याय से कि "जो सैकड़ों आप्त ऋषियों को छोड़ कर एक ही को आप्त मान कर, संतुष्ट रहता है वह कभी विद्वान् नहीं कहा जा सक्ता" (भ्र० पृष्ठ १५) ब्राह्मण का परित्याग न करना चाहिये आपस्तम्बादि मुनि प्रणीत सूत्रों के परिभाषा सूत्र में भी " मंत्र ब्राह्मणयोर्वेद नामधेयम्" ऐसाही लिखा है और स्वामी जी महाराज जो यह कहते हैं कि "क्या आप जैसा कात्यायन को आप्त मानते हैं वैसा पाणिनि आदि ऋषियों को आप्त नहीं मानते +++ जो उन को भी आप्त मानते हो तो मंत्र संहिता ही वेद है उन के इस वचन को मान कर तद्विरुद्ध ब्राह्मण को वेद संज्ञा के प्रतिपादक वचन को क्यों नहीं छोड़ देते" (भ्र० पृष्ठ १५) सो पहले तो स्वामी जी महाराज यह बतलावें कि पाणिनि आदि ऋषियों ने कहां ऐसा

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

लिखा है कि "मन्त्र संहिता ही वेद है" ब्राह्मण वेद नहीं है बरन पाणिनि ने तो जहां मन्त्र और ब्राह्मण दोनों के लेने का प्रयोजन देखा स्पष्ट "छंदसि" कहा अर्थात् वेद में अर्थात् मन्त्र और ब्राह्मण दोनों में और जहां केवल मन्त्र वा ब्राह्मण का देखा "मन्त्रे" वा "ब्राह्मणे" कहा और जहां मन्त्र और ब्राह्मण अर्थात् वेद के सिवाय देखा वहां "भाषायाम्" कहा भला जैमिनि महर्षि के पूर्व मीमांसा को तो स्वामी जी महाराज मानते हैं उस में इन सूत्रोंका अर्थ क्यों कर लगावेंगे "तच्चोदकेषु मन्त्राख्या" "शेषे ब्राह्मणशब्दः" (अ० २ पा० १ सू० ३३) इस का अर्थ बहुत स्पष्ट है कि वेद का मन्त्रों से अवशिष्ट जो भाग सो ब्राह्मण निदान जब मैंने गौतम और कणाद के तर्क और न्याय से न अपने प्रश्न का प्रामाणिक उत्तर पाया और न स्वामी जी महाराज की वाक्य रचना का उस से कुछ सम्बन्ध देखा डरा कि कहीं स्वामी जी महाराज ने किसी मेम अथवा साहिब से कोई नया तर्क और न्याय रूस अमरिका अथवा और किसी दूसरी विलायत का न सीख लिया हो फ़रंगिस्तान के विद्वज्जनमण्डलीभूषण काशिराजस्थापितपाठशालाध्यक्ष डाक्टर टीबो साहिब बहादुर को दिखलाया बहुत अचरज में आये और कहने लगे कि हम तो स्वामी जी महाराज को बड़ा पण्डित जानते थे पर

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अब उन के मनुष्य होने में भी संदेह होता है (तब तो भ्रमोच्छेदन को भ्रमोत्पादन कहना चाहिये !) और अंगरेज़ी में कुछ लिख भी दिया नीचे उस की भाषा सहित छापा जाता है---

The question at issue between Raja Sivaprasad and Dayanand Sarassvati is the authoritativeness of the several parts of what is commonly comprised under the name "Veda." Dayanand Sarassvati rejects the Brahmanas and Upnishads [with one exception] and acknowledges the authority of the Sanhitas only. As this procedure is not in agreement with the religious belief of the Hindus of the present day as well as of past ages of which we have records, Dayanand Sarassvati is bound to produce convincing proofs for the validity of the distinction he makes. He mentions that the Sanhitas are "**ईश्वरोक्त**" while the Brahmanas and Upnishads are merely "**जीवोक्त**"; but how does he prove this assertion ? (for as it stands it cannot be called anything but a mere assertion). The assertion of the Sanhitas being **स्वतःप्रमाण** while the Brahmanas and Upnishads are merely **परतःप्रमाण** can likewise not be admitted before it is supported by arguments stronger than those which Dayanand Sarassvati has brought forward up to the present. Raja Sivaprasad is right to ask "why should not both be **स्वतःप्रमाण** if one is so ?" or again "why should not both be **परतःप्रमाण** if one is so ?" and this reasoning could certainly not be employed by any one for proving that other non-vedic books as well are to be considered equal to the Veda; for the Veda alone [including Brahmanas and Upnishads] enjoys the privilege of having—since immemorial times—been acknowledged by all Hindus as sacred and revealed books.

With regard to the passage quoted by Dayanand Sarassvat from the Satapatha Brahmana (Brihadaranyaka Upanishad) it must be admitted that the objection of Raja Sivaprasad is well-founded; if one part of the

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

passage is authoritative, the other part is so likewise. The assertion whether the whole passage is a **वाक्य** or a **वाक्य समूह** is wholly irrelevant to the point at issue.

Dayanand Sarassvati has certainly no right to declare the passage from Katyayana—according to which the Veda consists of Mantra and Brahmana—oninterpolation. Acting in this way anybody might declare any passage contrary to his pre-conceived opinions an interpolation.

Dayanand Sarassvati rejects the authority of the Brahmanas. How then does he prepare to deal with Brahmana portions of the Taittiriya Sanhita, which in character nowise differ from other Brahmanas, like the Satapatha, Panchavinsa, &c. And on the other hand does he reject all the mantras contained in the Taittiriya Brahmana ?

G. THIBAUT.

(भाषा) "राजा शिवप्रसाद औ दयानन्द सरस्वती में जो विवाद उपस्थित है उसका निचोड़ यह है कि "वेद" नाम से प्रसिद्ध ग्रन्थों के कौन भाग प्रमाण और कौन अप्रमाण हैं। दयानन्दसरस्वती सिवाय एक उपनिषद् के ब्राह्मण औ उपनिषद् ग्रन्थों को छोड़ देते हैं और केवल संहिताओं को प्रमाण मानते हैं। यह रीति न आज कलके हिन्दुओं के मतानुसार है, न अतीतकालों के आर्य्यों के मत से, जिनका लेख हमको मिलता है, अनुकूल है। इस कारणसे दयानन्द सरस्वती को अवश्य उचित है कि बलवत् प्रमाण देवें जिस से उन के अभिमत भेद की सिद्धि हो। वे कहते हैं कि संहिता " ईश्वरोक्त " हैं और ब्राह्मण और उपनिषद्

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

केवल "जीवोक्त"। परन्तु इस बात का प्रमाण क्या देते हैं ? अब तक उन्होंने दन्तकथा ही केवल कह रक्खी है, संहिता मात्र का स्वतः प्रमाण होना और ब्राह्मण औ उपनिषद् वाक्यों का निरा परतः प्रमाण होना तभी माना जासक्ता है जब दयानन्द सरस्वती दृढ़तर युक्ति देवें। आज तक जो युक्तियां दी हैं उनसे कुछ भी सिद्ध नहीं होता है। राजा शिवप्रसाद का यह पूछना न्याय्य है कि "यदि एक स्वतः प्रमाण है तो दोनों क्यों न हों" अथवा "यदि एक परतः प्रमाण है तो दोनों क्यों न हों" और यह तो कभी युक्ति युक्त हो ही नहीं सक्ता कि वेदभिन्न पुस्तकों को भी कोई इसी रीति से कह दे कि वे भी वेद के समान हैं क्योंकि केवल वेदही को (ब्राह्मण औ उपनिषदों के सहित) अनादि काल से (since immemorial times अर्थात् इतने प्राचीन काल से कि जिसका ठिकाना कोई नहीं बता सक्ता) सब आर्य्य लोग अपने धर्म्म का मूल ग्रन्थ और परमेश्वर की वाणी मानते रहे हैं।

दयानन्द सरस्वती ने शतपथ ब्राह्मण (बृहदारण्यक उपनिषद्) से जो वचन उद्धार किया है उस पर तो इस बात का अवश्य स्वीकार करना उचित है कि राजा शिवप्रसाद की विप्रतिपत्ति अर्थात् दूषण सयुक्तिक है उस वाक्य का एक भाग यदि प्रमा-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

ण हो दूसरा भाग भी अवश्य प्रमाण है। वह वाक्य एक है अथवा वाक्य समूह है इस की चर्चा प्रकृत विषय से कुछ सम्बन्ध नहीं रखती।

निःसन्देह दयानन्द सरस्वती को अधिकार नहीं कि कात्यायन के उस वाक्य को प्रक्षिप्त बतावें जिस के अनुसार मन्त्र औ ब्राह्मण का नाम वेद सिद्ध होता है। ऐसे तो जो जिस किसी वचन को चाहे अपने अविवेक कल्पित मत से विरुद्ध पाकर प्रक्षिप्त कहदे।

दयानन्द सरस्वती ब्राह्मण ग्रन्थों की प्रमाणता नहीं मानते तो तैतिरीय संहिता के ब्राह्मण भागों को क्या कहेंगे। इन ब्राह्मण भागों में और शतपथ पञ्चविंश आदि ब्राह्मण में कुछ भी अन्तर नहीं है। और फिर तैतिरीय ब्राह्मण के जो मन्त्र हैं क्या उन सब को भी छोड़ देंगे ?"

यहां इस के लिखने की आवश्यकता नहीं कि स्वामीजी महाराज जो लिखते हैं कि "वेदों (संहिता) में इतिहास होते तो वेद आदि और सब से प्राचीन नहीं होसके ++ इस लिये ++ जमदग्नि आदि शब्दों से चक्षु आदि ही अर्थों का ग्रहण करना योग्य है" (भ्र० पृष्ठ १६) सो मेरा अभिप्राय तो इतना ही है कि यदि ब्राह्मण ग्रन्थों के अनुसार जमदग्नि आदि का अर्थ योंही माना जावे तो संहि-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

ता के समान ब्राह्मणको भी वेद भाग अथवा माननीय मानने में उन्हीं ब्राह्मण ग्रंथों की युक्तियां क्यों न मानी जावें और स्वामीजी महाराज यह जो लिखते हैं कि वेदों में "परा विद्या न होती केन आदि उपनिषदों में कहां से आती" (भ्र० पृष्ठ १८) सो यहां भी मेरा अभिप्राय तो इतना ही है कि वेद के नाम से मंत्र भाग अर्थात् संहिता और ब्राह्मणों को मान कर जहां वेदों को अपरा कहा जाय वहां मंत्र और ब्राह्मणों का कर्म्म काण्ड और जहां वेदों को परा कहा जाय वहां मंत्र और ब्राह्मणों का ज्ञान काण्ड मानना चाहिये और ऐसाही आज तक वैदिक हिन्दू परम्परा से मानते चले आये हैं अधिक जो कुछ स्वामीजी महाराज ने लिखा है वा आगे लिखें उस का तत्व पंडित लोग आप बूझ लेंगे हम फिर भी हाथ जोड़ कर स्वामीजी महाराज के चरणों में विनय पूर्वक विनती करते हैं कि आप एक क्षणमात्र पक्षपात और क्रोध रहित होकर सोचिये और सत्य को हाथ से न दीजिये सत्यमेव जयति नानृतं और मुझे तो यदि एक भी दयानन्दी के चित्त में यह बात जम जायगी कि स्वामीजी महाराज का आदेश विधाता का लेख अर्थात् पोप की तरह इनफ़ेलिबूल (infallible) नहीं है अपनी बुद्धि काम में लानी चाहिये और दूसरे पंडितों की भी सुननी चा-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

हिये सनातन धर्म को अथवा जो बात परम्परा से चली आयी है एकाकी किसी एक के कहने सुनने से बेसमझे बूझे न छोड़ देनी चाहिये मैं कृतकृत्य और अपना सारा परिश्रम सफल समझूंगा ॥

निदान अब मैं इन सब बातों को एक ओर रख कर जो इस २२ पृष्ठ के भ्रमोच्छेदन में स्वामीजी महाराज का अभीष्ट खोजता हूं तो आदि से अंत तक यही अभीष्ट पाता हूं--यही अभीष्ट है यही अभिप्राय है यही कामना है यही इच्छा है यही ईप्सा है यही लालसा है--कि एक बार श्रीमत् पंडितवर धुरन्धर अज्ञानतिमिरनाशनैकभास्कर बाल शास्त्री जी महाराज स्वामीजी महाराज के साथ शास्त्रार्थ स्वीकार करलें सज्जन पुरुषों का स्वभावही है कि याचकों की याचना पूरी करने में उद्योग करें मैं शास्त्रीजी महाराज के चरणों में पहुंचा और भ्रमोच्छेदन दिखलाया आज्ञाकीः--

कि "भला आप के (शिवप्रसाद के) एक सहज से प्रश्न का तो उत्तर श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी से कुछ बना ही नहीं उत्तर के बदले दुर्वचनों की वृष्टि की यदि काशी के पण्डित उनसे शास्त्रार्थ करने को उद्यत भी हों उत्तर के स्थान में उन्हें वैसीही दुर्वचन पुष्पाञ्जलि का लाभ होगा इस से अतिरिक्त और कुछ भी सार उस में से नहीं निकलेगा सिवाय

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

इस के संवत् १९२६ में यहां दुर्गाजी पर आनन्द-बाग़ में श्रीमन्महाराजाधिराज द्विजराज श्री ५ काशीनरेश महाराज प्रभृति प्रायः सब काशी के मान्य प्रतिष्ठित और विद्वज्जनों के समाज में जो कुछ शास्त्रार्थ हुवा था उसी को उक्त स्वामीजी नहीं मानते तो अब आगे उन से क्या आशा है" ॥

निदान स्वामीजी महाराज से तो अब काशी के पंडित लोग फिर शास्त्रार्थ करते नहीं दिखलायी देते किन्तु स्वामीजी महाराज यदि अपने किसी गुरु को आगे खड़ा करके शास्त्रार्थ करना चाहें तो क्या आश्चर्य है कि फिर भी यहां के पंडित लोग बद्धपरिकर हो जावें हां बाबू रामकृष्णजी ने जो अबोध निवारण ग्रंथ छपवाया है ऐसे ऐसे ग्रंथ स्वामीजी महाराज अपना जी बहलाने को चाहे जितने ले लेवें ॥

॥ इति ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

ओ३म

जोतिष दर्शन

जिसको चौधरी नवल सिंह बर्मा प्रधान आर्य्य
समाज मुजफ्फराबाद जिला सहारन पुरने
देशोपकार के वास्ते बनाया
पहिले सन् १८८४ मे
उर्दू
अक्षरों में बनाया था
अब उसका नागरी अक्षरों में
उल्था कर दिया सन् १८८७ मे
अब कातिक सम्बत् १९४४ में लाला किदारनाथ
सभासद आर्य्य समाज मेरठने छपवाया

निवेदन

यह पुस्तक बहुत शुद्ध करके हरद्वार
गोरक्षणी सभाकी आज्ञानुसार छपवाई
गई है कोई महाशय विना आज्ञा ग्रन्थ कर्ता वा
उक्त सभाके न छापे

प्रथम बार १००० कीमत ≡)

१०) रुप्ये के खरीदार को २०) रुपये सैंकड़ा कमी
शन मिलेगा और कमीशन में किताबें मिलेंगी

ये किताबें चौधरी नवलसिंह की बनाई उर्दू
वा नागरी लाला किदारनाथ के पास मिलेंगी

स्वामी प्रेस मेरठ में छपी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

ओ३म नन्लन

ओ३म् बिश्वानि देव सवितर्दुरितानि
परा सुव। यद्भद्रं तन्न आसुव॥
ओ३म शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

(देव) हे सर्व्यादि सर्वविद्या प्रकाशक (सवितः) हे सर्व जगदुत्पादक (नः) हमारे (बिश्वानि) संपूर्ण (दुरितानि) दुःखोंको (परा सुव) तुम दूर करो (नः) हमारे लिये (यत्) जो (भद्रं) सुख हैं (तत्) उनको (आसुव) तुम प्राप्त करो हे परमात्मन् (आध्यात्मिक) रोग, शोक शरीर पीड़ा आदि (आधिभौतिक) शत्रु सिंह, सर्प आदि से पराजय और पराग्न आदि (आधि दैविक) अति शीतोष्ण वर्षा आदि होना वा न होना आदि जो ये तीन प्रकार के क्लेश और संताप हैं उनको तुम दूर करो॥

परमेश्वर की प्रार्थना स्तुति के पीछे हम अपने देशीभाइयों की सेवा में निवेदन करते हैं कि आप कब तक

घोर निद्रामें सोते रहोगे अब सूर्य निकल आया ग़फ़ल त की सज्जा को त्याग उठ बैठो बड़ा शोक है विद्यारू पी सूर्य के निकलने पर भी ठगों का समूह दिन धौले हमको लूट रहा है चेतन हो कर देखो तो यह क्या धों कल गर्दी मच रही हैं हमने शुमार किया है कि हमारे देश बासी एक चौथाई लोग कुछ भी पुरषार्थ नहीं करते आलसी और स्वार्थियोंने भीख माग कर खाना या कपट छलसे लूट कर खाना अपना पेशा ठहरा रक्खा है भला जब एक चौथाई हमारे बीच में से स्वार्थी आलसी हो कर हमारी कमाई को ठग कर खाजावें तो हमारा देश कब उन्नति को प्राप्ति हो सकता है अब हम उन की एक छोटी सी ठगई को बर्णन कर तेहैं हमको आशा है कि पाठक गण इसको पढ़ कर उनके धोके से अपने दसों नखों की कमाई को बचा कर देशोन्नति में लगावेंगे और अपने बाल बच्चों के पालन और माता पिता आदि की सेवामें अपना कमाया धन खर्च करके अपना इस लो क और परलोक का सुधार करेंगे पाठकगण वह एक अदना सी ठगई झूठी ज्योतिष है जि सने यहां के लोगों को बैल की तरह ऐसा जोत रक्खा है कि जिधर ज्योतषी जी हांके उधर चलना होता है आगे चाहे कुये में गिरना पड़े परन्तु क्या

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मजाल बछिया के बाबा कान हिलावें अब हम इस झूठी ज्योतिष का अन्धेरा प्रश्नोत्तर के तौर लिखकर दूर करते हैं

(प्रश्न) क्या ज्योतिष सत्य शास्त्र है या झूठी बात है

(उत्तर) ज्योतिष सत्य शास्त्रों में से एक सत्य शास्त्र और वेद का अंग है परन्तु सूर्य सिद्धान्त आदि ग्रन्थ जो वशिष्ठ आदि ऋषि मुनियों के रचे हुए हैं वे सत्य हैं उन में गणित विद्या नक्षत्रों के घूमने आदि का वर्णन है और यह जो मुहूर्त चिन्तामणि और जन्म पत्र फलादेशादि ग्रन्थ है यह स्वार्थी मनुष्यों ने बना कर उन पर ऋषि मुनियों के नाम लिख मारे इन को कभी न मानना चाहिये क्योंकि वह वेद विरुद्ध होने से माननीय नहीं है

(प्रश्न) वाह जी वाह सूर्य सिद्धान्त आदि को कोई भी नहीं जानता आज कल तो जो लोग काशी जी पढ़कर आते हैं वह भी उन्हीं ग्रन्थों को पढ़ कर आते हैं जिन को तुम झूठ कहते हो फिर वह ज्योतिष और वह ज्योतिषी झूठे किस तरह हो सकते हैं

(उत्तर) काशी के पढ़ने ही से कोई ज्योतिषी नहीं हो सकता सत्य शास्त्र सत्य विद्या के पढ़ने से सच्ची विद्या आसकती है चाहे वह कहीं भी किसी विद्वान से पढ़े भला जो कोई काशी में पढ़ने को जावे और पादरियों के मिशन स्कूल में इनजील

पढ़ आवे तो क्या वह उस शहर के प्रताप से शास्त्र वक्ता हो जायगा सो कभी नहीं

(प्रश्न) तुम अपनी ही हांकते हो हमने सौ बेर परीक्षा कर देखी कि हम को इन्हीं हमारे आजकल ज्योतिषियों ने सब बात अगली पिछली ठीक ठीक ज्योतिष के बल से बतलादी और जो बात हमारे मन में थी वह भी प्रकट करदी यहां तक बता दिया कि तुम पिछले जन्म में फलां जूनी में थे-

(उत्तर) भाई ज़रा बुद्धि से काम लो भला ऐसा सिवाय उस अन्तर्यामी परमेश्वर के और कौन है जो किसी के पिछले जन्मों का हाल जाने जब जन्म लेने वाला ही नहीं जानता कि मैं कहां से चोला बदल कर आया हूं तो फिर दूसरा क्या जाने और ऐसी गप्प सप्प ज्योतिष के ग्रन्थ में है रहा यह कि तुम को बता दिया कि तुम फ़लां योनी में थे सो ऐसा गपोड़ा तो हम भी हांकदें कि तुम पहले जन्म में फ़कत या धोबी के कुत्ते थे उस समय एक ब्राह्मण अपने कपड़े लेने धोबी के घर आया था तुमने उसके पैर पर काट लिया था अब उस ब्राह्मण ने कुत्ता बन कर तुम्हारे पैर में काट लिया है बस अब तुम कहते फिरो कि हम पीछे कुत्ते की योनी में थे परन्तु बुद्धि मान कभी नहीं मानेंगे क्यों कि जो पिछले जन्म में ब्राह्मण था

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

उसको ईश्वर बदला दिलाने को उत्तम धाम छुड़ा
कर कुत्ता बना देना क्या वह आप दंड नहीं देसक्ता
था रहा अब अगला पिछला हाल बताना सो यहभी
ज्योतिष विद्या नहीं यह तो एक अनुमान कर लेना
है जैसे कोई किसी कुपथ्या हारी को अनुमानसे
कहदे कि तू बिमार हो जावेगा या असाध्य रोगीको
कहदें कि यह मरजावेगा या किसीका दुर्बल श
रीर देख कर कहदें कि तूने बड़ा देह कष्ट उठाया
जोहै सो कर कर के किसीका वृथा धन व्यय करने
जान कर कहदें कि थोड़ेही काल में तुझ पर ऐसा
क्रूर ग्रह आवेगा कि तू कंगाल होजावेगा औरफिर
उसका रहा सहा धन पूजा पाठ जप अनुष्ठान
का धोका दे कर आप ग्रह मूर्ति बन कर ग्रहण
करलें और उस को कंगाल दास बना कर और स
चे ज्योतषी बन कर कहने लगे कि देखो हमने प
हले बता दिया था कि तू कंगाल होजावे गा परन्तु
तेरा कोई पूर्व संस्कार अच्छा था जो उससमयपर हम
आनि कले और जप पाठ करके भला तेरी जानतो
बचाली ऐसेही किसी की टूटी हवेली देख कर उस
को कहा कि तेरे पुरषा धन वानथे परन्तु तेरा भाग
मंदहै किसी की नई हवेली देखी तो कहदियाकि
तेरे पुरषा तो मंद भागी थे तेरा नविरत्न चमन करीहै

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जो बसती के आस पास तालाव देखा तो कहा कि बाल अवस्था में तुमने एक बार जल में भी गोता खाया था परन्तु उस समय एक पूर्व जन्म का मित्र वहां खड़ा था उसने तुमको बचा लिया था जो कासा कार देखा तो कहा कि एक बार पशुने तुमपर चोट चलाई थी उसके एक सींग पर क्रूरग्रह चढ़ गया था पर तुम को एक शुभ ग्रह भी उसदिन आ मिला था उसने दूसरे सींग पर उस पशुके बैठ कर तुम्हारी रक्षा करली थी किसी अमीरके घर घोड़ा देखा तो कहा कि एक समय तुरंगने भी धोका दिया था पढ़ा लिखा फटे कपड़े पहने देखा तो कहा कि तेरी नोकरी की इच्छा है कई बार कारज जचा भी परन्तु एक मनुष्यने भांजी मार कर काम डिगा दिया किसी को खर्च खाते देखा तो कह दिया कि तेरे दौलत इस हाथ आती है और उस हाथ निकल जाती है और बहुत बातें ऐसी होती हैं कि उनको मूर्ख आपही स्वीकार कर लेते हैं जैसे किसी से कहा कि तेरे मित्र कम हैं और शत्रु अधिक हैं जिस को तू चाह करता है वह तेरी जड़ काटने लगता है तू सुन लेता है सबकी परन्तु करता है अपने मन की तेरा मन चंचल है स्थिर नहीं रहता

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

तुम को शत्रु का बड़ा डर रहताहै किसी को सर
कारी नौकर देखातो कहा तेरी राज दरबार में
एक आसा लग रही है परन्तु तुमको लाभ हो
गा किसी के घरमें घुसगये और बुढ़िया सेकहा
कि तेरी बहु कुपात्रहै तेरी सन्तान तेरी आज्ञा
कारी नहीं रही इत्यादि मन लगती बातें कहकह
कर भोगको आठवें बारहवें सूर्य चांद आदिग्रहों
का भय दिखा कर अपना लेलेने का पंजाजमा
लेतेहैं बहुत से परदेश में गुप्त क्रिया से मालूम
कर लेतेहैं कि अमुक ने अमुक मनुष्य की आ
ठ हजार रुपये की नालिश अदालत में दायर
कर रक्खीहैं बस एक ज्योतषी बीस गज की पग
ड़ी बांध नीची धोती बगल में पोथी पोप देवके
गाती मुद्दई के घर पहुंचा और दूसरे उसीके सा
थी ने वही रूप बना मुद्दअले के दरवाजे को जा
घेरा दोनों ने दोचार गुप्त क्रिया की पूछी गछी
हुई बातें कह कहा कर झट कह दिया कि एक
मनुष्यने राज दरबार में तुम पर द्रव्य की नालिश
कर दीहै और उसका ग्रह तुम से प्रबल पड़ा
हुवाहै उसकी जीत होगी परन्तु तुम घबराओ
मति हम ऐसा जप करदेंगे कि श्रीगंगाजी कोर
गी देवता के प्रताप से तुम्हारी जीत होगी और

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

एक यंत्र भी हम तुमको लिख देंगे उसको गूगल की धूनी देकर पगड़ी में बांध लेना राजा तेरी ही वाणी बोलेगा और एक और भी हम बतलाते हैं किसीसे इन बातों को प्रकट न करना कभी पीछे पछ्ताओ और हम को दोष दो परन्तु यजमान रूपये डेढ़ सो लूंगा और लूंगा कारज सिद्ध होने से दो दिन पीछे जब तू प्रसन्न होकर देगा और जो समग्री अनुष्ठान में खर्च होगी वह हम अभी लिखकर देते हैं गुपचुप आपही जाकर बाज़ार से ले आओ और हां भूल गये एक कष्ट तुमको भी उठाना पड़ेगा वह यह है कि तुमको प्रतिदिन पीपल सींचना होगा और हम ऐसे वैसे पण्डित नहीं कि योंही मांगते फिरते हों हमारी प्रतिज्ञा यह है कि कारज सिद्ध न होतो देवता को उलटा बांधकर लटका दें चलो इन्होंने डेढ़ सो की साई यहां थमाई और दूसरे से दो सो की चिप्पी जमाई दोनों में से एक को जीतनो होनी हीथी जो जीता उसने तो ज्योतषी जीको थैली झुका दी और आगे को इस घरमें और घरके मित्र आदि में रोज रोज को ज्योतषी जी की मानता हो गई चलो दिशा बाधा भी ज्योतषी जीको पूछ कर ही जाने लगे रहे अब हारने वाले के ज्योतषी बोले कि महा राज शास्त्रतो

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

दर्पन है जैसा दो वैसा ही उसमें दीख पड़ता है देखो हम ने पत्रा खोलने ही कह दिया था कि तुम्हारी हार होगी इतने उपाय करने से भी ग्रह चाल न टली पर वह तो महा राज अबभी तुम अपने दिन भले ही जानो लिखा तो ऐसा था कि उस मनुष्य के हाथ से तुम्हारा प्राण घात होना था पर देवता ने सहायता करी उस समय हम तुम्हारे भय मान होने के कारण इस लिख को अपने मन ही में थाम लिया था चलो अच्छा हुवा धन पर पड़े भाग वान के और जान पर पड़े निरभागी के महा राज यह बड़ा करूर ग्रह था लिखा भी है कि (धन धान्य हिरन्य बिनाश कारबि राहु शनिश्चर भूमि सुता) अच्छा महा राज बहुत मन सोच में संतोष ही बड़ी बात है वह के दिन तुम्हारा धन खायगा तुमको परमात्मा और देगा अच्छा महा राज हम तो जाते हैं और आपकी जय मनाते हैं हमारा तो यही मनोर्थ है कि तुम फूलो फलो चलो इनको भी चलते समय दश पांच मिल ही गये फिर दोनोंने आपसमें जा बांटे महीना बीस दिन फिर खूब भेखी चक्र के पवित्र उत्सव उड़ाये बड़ा शोक है बाजे चांडाल तो शहरोंमें जा कर बिज्ञापन देते हैं कि अमुक ज्योतषी अमुक स्थान पर आकर उतरे हैं और दो

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

चार गुप्त दूत उसी शाहर के पोषोंसे सब समाचार शा
हर कालेते रहते हैं फिर किसी प्रतिष्ठित पुरुष के
पुत्र का किसी तिथिमें मृत्यु का होना बताने लगते
हैं और फिर किसी दूतसे उसको बिष दिवा कर घा
त कर देते हैं और अन्तर्यामी बन कर बर्षों शाहरोंको
लूटते रहते हैं परन्तु मूर्ख लोग कुछ भी विचार नहीं कर
ते कि जो यह ऐसे अन्तर्यामी ज्योतषी हैं तो हजारों
कोश द्रव्य के पृथवीमें गुप्त दबे पड़े है यह ज्योतिष
से देख कर उनहीं को क्यों नहीं निकाल लेते शाहर
शाहर और गांव गांव पैसे २ को क्यों मारे फिरते हैं देह
रादूनमें एक किसम के लोग हैं उनको लोग बाकी क
हते हैं उनके ज्योतिष की ऐसी प्रशंसा करते हैं कि
वह मानो तीन काल के ज्ञाता हैं हमारे जिले सहा
रन पुरमें तो उनका ऐसा निश्चय मूर्खों को है कि जिस
के चोरी होती है या घरमें कोई रोगी होता है तो स
वा रुपया बाकी की भेटका ले कर झट पचास कोस
पहाड़ पर दौड़ जाते हैं और बाकी उन मूर्खों को कु
छ गप्पा सप्पा बना देते हैं फिर वह मूर्ख सवा रुपया
उसे भेट देकर पचास कोस सफ़र उठा कर आकर
अड़ोसी पड़ोसी से लड़ने बैठ जाते हैं कि बाकी देव
ताने बताया है कि तेरी बस्तु तेरे पड़ोसी ने चुराई है

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

ओर पृथवी में गाड़दी है बस उस मूरख के कहने से आ
पुस में लड़ने लगते हैं हमने आजतक कहीं नहीं दे
खा कि बाकी की बताई चौरी प्रकट हुई हो हां कभी
ऐसा तो हुवा कि किसी चालाक ने यह आकर कहदि
या कि मुझ को बाकी ने चोर को भी ओर जहां मेरी व
स्तु छिपाई धरी है सब बताई है पर मैं चाहता हूं कि
किसी का दोष प्रकट न हो बस मेरी चीज रात को मे
रे आगन आदि में फेंक दो नहीं कल अपने हाथ से
निकाल लूंगा इस धोके में आकर बाजों ने चीज फेंक
भी दी परन्तु यह झूठ है कि बाकी चोर को ज्योतिष से
बता दे भला जो ऐसा होतो तो सर्कार पुलिस क्यों रख
ती बस दो चार बाकी ही काफ़ी थे मेरे सामने देहरे दू
नमें बाकी की स्त्री को कोई साफ़ उड़ा ले गया बाकीजी
सारे टक्कर मार कर ओर थाने पुलिस में भी रपोट
कर के बैठ रहे कहीं पता नहीं चला जब उसका
ज्योतिष नहीं मालूम सो गया होगा भला जब अप
नी ही चोरी का हाल न मिला तो दूसरों को क्या धूल
बताता होगा- भाइयों इन ठग ज्योतिषियों के धोके
में कोई मत आवो ऐसी ऐसी धोके की बातें मुझ
को सहस्रों याद हैं जो कोई सुन कर कहे कि हां य
ह पूरा ज्योतषी है परन्तु ऐसी कपट की बात लिखने

और छापने से देशमें बड़ी हानी होती है क्योंकि कोई पोपउन्हें देख पढ़ कर लोगों को धोका देता फिरेगा और जो किसी को परीक्षा करना हो मुझ से देख सुन लेयर में उससे ऐसी बात बताउंगा जो ज्योतिष पेशगन हो और जिसके ऐसे झूठ ज्योतिष फैलाने का आगे कोभी हमको संदेह न हो-

(प्रश्न) क्या ग्रहभी झूठ हैं

(उत्तर)

हम सितारे और नक्षत्रोंके होनेसे इनकार नहींकरते परन्तु उनका संबन्ध मनुष्यों से इस प्रकार नहीं है जैसे आज काल पत्रा देख कर स्वार्थी लोग राहु केतू मंगल बुध आदि की करूरता मनुष्यों पर बतला देतेहैं हमको बड़ा आश्चर्य है कि करोड़ों सितारों में पांच या सात ही की क्यों करूर दृष्टी मनुष्यों पर होती है और वहभी मनुष्यों हीपर घोड़े हाथी आदि देह धारियोंपरक भी कोई नहीं बतलाता और मनुष्यों मेंभी सिरफहि न्दुओं पर और देखो हजारों मुसाफिर प्रति दिनरेल पर सवार हो कर पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण को जाते हैं उनको दशा शूल जोगनी आदि कुछभी अशुभ नहीं होते बलके वह आनन्द पूर्बक अपने ठिकाने पर पहुंच जाते हैं उनमें से कोई लग्न बिचारकर

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सवार नहीं होना है

(प्रश्न) घोड़ा हाथी देह धारी तो हैं परन्तु ग्रह नाम पर आना है और यह पशु हैं उनका क्या विचार बिचार तो मनुष्य की भलाई के वास्ते है रहे मुसल मान अंग्रेज आदि जो हैं सो म्लेक्ष हैं इन पर देवता करूर नहीं होते

(उत्तर) वाहजी वाह जो एक बूढ़ा मनुष्य मूर्ख जिस को कोई तीन रुपया मासिक भी न दे उसकी खातिर जोतिष का विचार हो और एक जवान पशू गौ आदि जिस के शरीर से लाखों मनुष्यों का पालन हो उसके कष्ट और गले कट जाने के उपाय के वास्ते ज्योतषी एक भी जप अनुष्टान न करें यहां तक पत्रा खोल कर इतना भी न बतादें कि गौ पर अमुक ग्रह या देवता क्रूर हैं बस जो कोई पूछे भी तो उसको कहदें कि यह तो ईश्वर की मरजी से और अपने पिछले कर्म के फल से मारी जाती हैं इन के उपाय करने में ईश्वर की मरज़ी को रोकना है और यह कि उनके नाम नहीं सो नाम तो सब हाथी घोड़े बैल गौ आदि के होते हैं किसी का मोती किसी का टीकू किसी का चोरा किसी का खैरी आदि और यह जो कहा कि मुसल मान आदि म्लेक्ष हैं इसलिये देवता उन पर कुछ दुख दाई नहीं होता सो धन्य आपके ज्योतिष और देवताओं को कि श्रेष्टों को दण्ड और म्लेक्ष

री कर दिये बहे देवतो हो नहीं सकते उनको चाण्डा ल कहो तो ठीक भी है और पुजारियें को जो कहो सो थोड़ा भला यह कोई बुद्धि मना है कि एक मनुष्य या एक फिरके को सूर्य क्रूर हो जावे और सब पर शान्ति हो हम तो देखते हैं जेष्ट मास में सूर्य सब को गरम और माघ पूषमें सब को नरम किसी ने इसके बिरुद्ध एक को नरम वा गरम होते हुये न देखे होंगे और यह भी जो मा ना जावे कि पित्त प्रकृति वाले को गरम और बातल सु भाव के मनुष्य या पशु को सूर्य नरम हो तो उसका य त्न शीतल औषधियें से करना उचित है और यह तो कुछ समझमें ही नहीं आता कि ज्योतिषयों को लोहा ताबा सोना चाँदी कपड़ा अनाज भैंस बकरी सन रूई तेल आदि पदार्थ भेट करने से सूर्यादि ग्रह क्यों झट न र्म होजाते हैं क्या यह पोप वाड कौन डकेत आदि उन ग्रहों के तहसील के सिपाही है जो इन को टैक्स देने से वह ग्रह शान्ति होजाते हैं क्या यह उनकी बिरादरी के हैं या उन के रिशते दार हैं और सब प्रजा के शत्रु हैं भाई लोग सूर्य चन्द्रमा किसी को कुछ नहीं कहते य हतो यही ज्योतषी ग्रहकी मूर्ती बन कर आते है और तुम्हारा धन यही ग्रहण और हरण करलेते हैं

(प्रश्न) सबको चन्द्रमादि क्रूर नहीं हो सकते जिस

की नाम रासी पर जैसा असर होगा उसी के अनुकूल दुख सुख होगा।

(उत्तर) यह बात झूठी है एक ही नाम के लाखों आदमी होते हैं हजारों इस समय बिमार हजारों आनन्द में हैं और नाम के उपर दुःख सुख आया करे तो संसार में कोई कभी भी दुखी न होने पावे क्योंकि नाम तो माबाप आदि संबान्धियों का कलपना किया हुवा उसके पुकारने आदि कारजों के वास्ते एक चिन्ह है फिर यह तो दुःख दूर करने का और सुख भोगने का सहज उपाव हुवा बस जब किसी ने देखा कि मेरा पुत्र गङ्गाराम बिमार होगया और तोता राम मोटा ताजा घूमता है बस गङ्गा राम का नाम बदल कर तोता राम रख दिया वह भी इनका कल्पना किया हुवा था और यह भी इन्ही की कल्पना है फिर ज्योतिषी जी के पत्रे में क्या शेख चिल्ली के मकबरे का नक्शा देखना है प्यारों यह तो सब ढकोसले हैं बनो दुःख मंगल से हो न बुध से दुःख सुख तो मनुष्य को अपने किये कर्म इस जन्म अथवा पूर्व जन्म के अनुसार परमात्मा सब को अपने न्याय गुण की सफलता से भी भुगवाता है

(प्रश्न) ऐसा नहीं इसकी बिध जन्म राशि पर मिलती है

(उत्तर) यह भी झूठी बात है एक क्षण में संसार में

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

लखूखा मनुष्य का जन्म होताहै और हमने ज्योतिषि
यों को देखा है कि वह कमसे कम अढ़ाई घड़ी का मु
हुर्त लगाया करते हैं इतने समय में न जाने कितने म
नुष्य का जन्म होता होगा फिर उनमें से न मालूम कित
ने तो उसी समय मर जाते हैं कितने कुछ दिन के पीछे
कितने अबरोगी होंगे कितने आनन्द करते फिरते होंगे
कितने ठग कितने धार्मिक साहूकार कितने कंगाल
और मूर्ख बहुत बुद्धिमान होंगे
(प्रश्न) एकही समय में दो का जन्म नहीं हो सक्ता
यह बहुत बारीक हिसाब है तुम्हारी मोटी बुद्धि में एक
समय दीखता है इसमें दृष्टांत है जैसे कोई सौ पत्ते ऊपर
नीचे तह बांधकर धरदे और फिर ऊपर से उस तह में सु
ई मारे तो ऐसा जान पड़ेगा कि सारे पत्तों में एकही साथ
सुई छेद गई परन्तु वास्तव में कुछ सूक्ष्म समय में एक पत्र
से दूसरे पत्र के छेदने में अन्तर हुवा है
(उत्तर) यह भी तुमको भ्रम है कि एक समय में दो का
म एक साथ नहीं होसक्ते देखो दोनों नेत्र एक साथ झ
बकते हैं इनमें कितने समय का अन्तर बताओगे जब गु
णी लोग गान करते हैं तब मृदंग मरचंग बीणा मजीरा
आदि साज और गवीय्रवर का एक साथ एकही समय में ता
ल पड़ा करता है जो तनक भी भिन्न भिन्न होजावे तो सब

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

कहा करते हैं कि समय नहीं बंधा देखो होती है कित
नी बूंदें एक ही साथ पृथवी पर गिरा करती हैं तो जो
हम यह कहैं कि एक ही भराक्षे एक क्षण में लाखों ज
न्मते हैं तो आपका पत्ते सुईका दृष्टांत हमारी बात
को काट सक्ता जब हम करोड़ों जन्मका होना संसार
में समझ कर लाखों योनियों से एक साथ और एक
समयमें हमारे पिछले दृष्टान्तोंसें सिद्ध होता है
बुद्धिमान विचारलेंगे

प्रश्न) तोबस जन्म पत्री बनानाभी निष्प्रयोजन
ठहरा और लाखों सेठ साहूकार अपनी सन्तानोंका
रोज जन्म पत्र बन वाते हैं और लाखों विद्वानोंकी
जीवका इसी परहै क्या वह सारे ही निर्बुद्धिहै एक
आज तुम्हीं बुद्धिमान पैदा हुये हो जो सभी बातोंप
र पानीफेरते जाते हो वाह भई वाह हमतो समाई
करते जाते हैं यह अपनी करते ही चले जाते हैं

उत्तर यह कुछ लड़ाई नहीं यहतो सत्या सत्यका
विचारहै लाखों जन्मपत्र वनाने की और बनवाने
कीतो यह बात है कि जब अन्धेरी रात होती है तब
संसारमें लाखों के घर लाखों फोड़कर माल उड़ा(
लेतेहैं और जब सूर्यका प्रकाश होता है दिनधौ ले।
कौन अपना घर अपना शहर अपने देशको चोरों

से लुटने देता है और जो चोर यह पुकारे कि हमारा टुकड़ा तो लाखों का चोरी ही से चलता है तुम हमको चोरी करने दो तो वह भी कोई बड़ा ही मूर्ख होगा जो अपने या दूसरे के घर चोरी करने की आज्ञा देगा सो महाराज अविद्या अन्धकार दूर हो कर विद्या रुपी सूर्य की किरणें हृदयों में प्रकाश कर रही हैं अब इस पाखंड को छोड़ कर देश उपकार का मार्ग पकड़ो जो तुम्हारी शाख बधे नहीं तो कुत्ते की तरह मारे मारे फिरोगे शिक्षे की बात नहीं अभी अपनी दशा देखो क्या लानती की बर्षों से न्हा रहे हो रहा जन्मपत्र बनाना उसको हम बुरा नहीं कहते परन्तु उसमें इतना ही लिखना ठीक है कि आज अमुक घड़ी अमुक दिन अमुक मास अमुक संवत में यह लड़का जिस का यह नाम सुन्दर विचार कर रखा अमुक माता पिता के घर अमुक शहर वा गाँव में हुवा और जो कुछ उसके जन्म उत्सव आदि संस्कार आदि का व्यतीत अवस्था हाल चाहे जो लिख दो जिसको कभी अवश्यकता होती तो उस जन्म पत्र से यह पता मिल जायगा कि आज दिन इस लड़के की आयु इतनी हुई या और कोई ज्ञात उसके जन्म के दिन की देखनी हो वह भी जो लिखी हो देखलें और जैसा जन्म आज वाल

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

रूठे जोतषीजी बनातेहैं उसको जन्म पत्रके बदले शोक पत्र कहना उचितहै क्योंकि उसमें बहुधाय ही जोतषीजी पूजा पाठ अनुष्ठान करके माल उड़ाने का पहलेही ढंग रख छोड़तेहैं कहीं लिख दिया कि यह हाथी की सवारी करेगा कहीं लिखा कि इसको छटे साल अमुक ग्रह आवेगा और प्राण हरण करलेगा इत्यादिक २ ऐसे भयानक और गेबक समाचार डालतेहैं कि माता पिताका सन्तान के पैदा होने का सारा आनन्द हरलेतेहैं जब छटे साल का आरंभ होता है तबतो इनके हृदय बड़े ही दुखी होते फिर जोतषीजी या उसके भाई बन्धु उस बिचारे के घर पर जप अनुष्ठान का पाना फेरतेहैं हमरोज़ अपनी आंखसे देखतेहैं कि जहां कोई बीमार पड़ा और इन जोतषियोंने जन्मपत्र दिखाया अपना संबत् ३८ का पत्र संबत् ४० में देख कुछ मुंह ही मुहमें मीन मेष कुंभ बुड़बुड़ा छः और छः बारा और तीन पन्द्राह कह कहाकर कह दिया कि इसको तो आठवें सूर्य या चन्द्रमा हैं या यह कह बैठे कि इसकी मरे हुये पितरोंकी खोड़या ऊपरी छाया या अमुक देवी देवकी क्रूरना है बस बैद्य की औषधी कदापि नहीं देने देते हज़ारों मनुष्य देवी धामड़ी के भरोसेमें महा कष्ट भोगतेहैं हमने हांस

मझ सके कि इनके बारह पत्रके पत्रमें उन सब देव
ताओंके नाम जिनकी संख्या तेतीस करोड़ बताते हैं
कैसे अक्षरोंमें लिखी हुई है हमको तो किसी बड़े पत्रों
के ग्रन्थमें तेतोस करोड़ अक्षर भी नहीं दीखते नाम
स्थानके लिखनेको तो बड़ा भारी एक दफ्तर चाहिये
और देखो कि जब किसी की गाय या भैंस माहमें
या भादोंमें व्या जावे तो यह उस को अशुभ बातब
ताकर आप उसको मालिक से लेलेते हैं सावनकी व्या
ई घोड़ी बुरी बता आपही छीनलेते पशु ही नहीं
बलके उसके साथ और भी अन्न दिसामग्री दान क
राते हैं वह सब आप अपनी जातिको लेते और दि
वाते हैं भोले भाले लोग इतनी बुद्धि नहीं दोड़ाते कि
उस परमेश्वरने माघके महीने सर्दी की ऋतुमें हम
को भैंसका गाढा दूध दिया गरम गरम आप पीकर
आनन्द करेंगे और हमारे बच्चे पीवेंगे या किसी माता
पिता दिया अतिथि की सेवा इस दुग्ध से करेंगे भग
वानने एक पशुके दो पशु करदिये दिनमें घोडी
व्याई हमारे अहोभाग्य रात्रिके व्यानेमें बच्चा ही
घोड़ी के पैरोंमें कुचला जाता भादोंमें गोउ व्याई
ईश्वरकी बड़ी ही कृपा हुई इस ऋतुमें घास बहुत
है हमको बिना परिश्रम किये ही माता के समान

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

दुग्ध मिलेगा भला एक स्वार्थीके बहकानेसे उसको प्रभु
भ मानकर उसको मुक्त क्यों देदें और जो इसमें कुछ बुरा
ई है तो यह स्वार्थी ही इसको क्यों लेना है
और सुनिये कि जब खेत जोतते हैं तब दैवयोगसे
नीचे पृथवीमें सांप कुचल मरजाता है तो किसान लोग
पापोंके उपदेशानुकूल हल बैल भी और फाली पाया
और हालिया नी हलजोतने वाले को भी गुजरानीको
देदेते हैं और भी बहुत सी सामग्री अन्नादि उसके
साथ देकर पराछत करते हैं और फिर उस दान किये
हाली को कुछ श्रद्धा पूर्वक मोल देकर लौटाते हैं औ
र फिरभी बर्षों तक डरते रहते हैं कि कभी हमारे घर
में कुछ विघ्न नहो जावे और जो असंख्यात और जीव
प्रतिदिन हलसे दले जाते हैं उनका कोई भी प्रायश्चि
त आदि नहीं करता क्या वह जीव जान नहीं रखते
प्रश्न) सांप देवता था इसलिये उसके मरने से परा
छत करना लिखा है
(उत्तर) धन्य है आपकी और आपके स्वार्थ कृत
शास्त्र को जिसमें सर्प को देवता लिखा है और क्यों न
हो विष लकड़ी देवता जिसके पुजारी ठग ये देवता
भाई सर्पका देवता होना किसी मत्य शास्त्रमें नहीं
है हां प्राणों का हरयता तो शास्त्र सेभी प्रत्यक्षमें

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

विषभी जानते हैं भ्रातृगणों दिन धोले क्या अन्धेर मचा रक्खा है कोई रम्माल नालिब मन लूबकी शकाल निकाल कर अपना मनलब घड़ लेते हैं कोई तेल या राजा बन कर त्रिलोकी का हाल तेल में ही देखना कहकर मर्दों की आंख बचा कर जेष्ठके दो पहरमें स्त्रियोंके हाथमें छल्ला अंगूठी तक नहीं छोड़ते कोई डकोत सवापहरदिन चढ़े तक सरस्वती का बाक्य सिद्ध बन कर घरोंमें कपड़ा तक नहीं छोड़ता कोई अड़ अड़ पोपों रंगा स्वामी रंगा स्वामी कह कर और एक पट्टी पर लाल काले रंग का हाथ का पंजा लिखा कर फिर स्त्रियों के हाथ पकड़ मस्छ रेखा कर्मरेखा बता और गड़ गड़ बड़ बड़ कर घरों में बरतन भांडा नहीं छोड़ते जैसे कोई निर्बुद्धि बालक को गुड़ की डली दिखा कर या कान काटने का डर दिखा कर रोचक और भयानक बातें सुना कर धूर्त बालक का गहना उतार ले जाते हैं इसीप्रकार यह धूर्तानन्द दिन धोले बालक समान निर्बुद्धिस्त्री और पुरुषों की बुद्धिपर कपट धूल डाल रात दिन लूटते रहते हैं हम नहीं जानते कि हमारी सरकार ने इन ठगोंके वास्ते कोई दंड एक्ट क्यों नहीं जारी किया हमको अपने गवर्नमेंट की न्याय नीतिकी ओर

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

देखनेसे यही जाना जाताहै कि उनके कान तक ऐसी अंदाधुन्दी की कुछ खबर नहीं पहुंची हमको आशाहै कि राज अधिकारी अब ज़रूर इस ग़दर की खबर सरकार को करके प्रजाको इन लुटेरों के हाथ से बचावेंगे-

देखो इन ज्योतिषियोंके भरोसे यहां के राजपाट नष्ट होगये जब किसी शत्रुने हमारे देश के राजाओंपर चढ़ाई की उसी समय ज्योतिषियोंने पत्रा उथलपथल कर राजासे कह दिया कि महाराज आज अमुक लग्न है जो तुम आज शत्रुके सन्मुख युद्ध को गये तो तुम्हारी आवश्य मेव हार होगी परसों पौने अढ़ाई घड़ी दिन चढ़े ऐसा श्रेष्ठ लग्न आकर पड़ेगा कि यह शत्रु आपसे आप धूंदके बादल के तुल्य क्षय हो जावेगा जो है सो कर करके बस राजा साहिब लग्न के भरोसे मग्न रहे दूसरोंने तलवार पकड़ लग्न आदि सब इखट्टे कर दिये जोतषी जीने अपने मन में यह सिद्धान्त बिचारा कि जो राजा को युद्ध की सम्मती दी तो राजा जीके साथ युद्ध समय हमको भी जाना होगा सच कहाहै कि आप गलते पांडे यजमानभी घाले इन लोगोनें देशमें बड़ी बड़ी हानी पोहंचाई और पोहुंचा रहे हैं गांवमें जहां किसी

बिपत्ती के मारे ज़मी दारने इनसे पूछा कि महाराज हमा
रे तो अति तंगी आ गई बस इन्होंने झट साफेसे प
त्रा खोल कह दिया कि अभी अढ़ाई बर्षका और
कष्ट रहा है और इस देवता का जप आदि कारा दो
तो अभी इसका बल घट जावेगा बस यह सुनकर
वह मूर्ख जो कुछ नली नपड़ी घरमें होती है वह
भी इन धूर्त्तों को देकर और भी दारिद्री हो जाता है जो
कभी फिर पोपजी से कहा कि महाराज जो तुमने
कहाथा वह भी हमने पुण्य दान आपको दिया तो
भी कुछ उन्नति न हुई तब पोपजी बोले कि महारा
ज धर्म करने होवे हान जब भी न छोड़े धर्मकी बान
और परमेश्वर अपने भक्तों को कसाही करता है
लोग कुछ भी बिचार नहीं करते भेड़िया धसान
के तुल्य एक एक के पीछे कुये में गिरते जाते हैं
किसी दूसरे के पाठ करने से अपनी क्या उन्नति हो
गी हां उसके पाठ करने वाले की तो प्रत्यक्ष उन्नति हो
गई मुफ़्त धन मिलगया और जो कोई आप ही कि
सी पुस्तक का पाठ करे तो इतना ही फ़ायदा होगा
कि वह पाठ उसको कंठस्थ हो जावेगा और जो
पाठ पूजा करने कराने से पदार्थ आपड़े तो पोप
जी आप ही राजा न हो बैठें भीक मांगते क्यों फिरें

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पदार्थ तो पुरुषार्थ से मिला करते हैं सो पुरुषार्थ से ही उन्नति सबको समझना चाहिये और परमेश्वर स्व पने भक्त को कभी नहीं कसता उसकी आज्ञा पाल न की जो कोई भक्ती करेगा वह कभी न कसा जायेगा क्योंकि वह तो परम पिता है जो कोई शत्रु को भी शरण जाता है और उसकी आज्ञा को पालेगा तो व ह भी शत्रु भाव को त्याग कर शरण आये की रक्षा ही करता है जो कोई ऐसा कहे कि नहीं परमेश्वर भी भक्त की श्रद्धा और धीरजता की परीक्षा किया करता है सो यह भी भ्रम मात्र है परीक्षा करना का म अल्पज्ञ का होता है सर्वज्ञ का नहीं जो सबका अन्तरयामी है वह किसकी परीक्षा क्या करता और जो यह कहते हैं कि धर्म करते होवे हान वह भी महामूर्ख हैं धर्म से सदा सुख ही हुवा करता है और अधर्म से दुख इन पाखंडी लोगों के उपदेश ने देश का सत्या नाश करा दिया हम देखते हैं कि गांवमें जमीदार हाथ पर हाथ धरे पूजा पाठ ही के भरोसे पुरुषार्थ को त्याग चौपालों में दिन भर बैठ टड़ टड़ हुक्का बजाते रहते हैं न खेत देखते हैं न क्यार देखते हैं और जो कोई कुछ करता भी है तो उनको भी पोपजी हानी ही पोहुंचाते रहते हैं

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

भरीभरी पूरी पूरी वर्षामें गांव गांव धनवानोंको रोक दिया कि आषाढ़ सावन आदिमें एक बूंद० वर्षा नहीं है बस लोगों ने धानोकी क्यारियों में मकी ही बीजदी चारके चारमास पड़ीजो मूसलधार पोपजी का घरभी धारो धार हुवा और सब खेती मकी आदि गलगई लोगों को सूखीनो जीदेनी पड़ी पोपजी कह बैठे कि आप जानते हैं कि शास्त्र तो झूठा होये नहीं सक्ता और ऐसा कहना भी पाप है इस देशमें नहीं तो किसी और देश में वर्षा कम हुई होगी होय शोक लोग इतनाभी नहीं सोचते कि जो पोपजी इतना जानते होते कि इस वर्ष धान कम पैदा होंगे तो आपही दोसो चारसोके चावल खरीद डालते और फिर महंगे भावमें बेच कर नफ़ा उठालेते

(प्रश्न) देखो जो ज्योतिष सत्य न होता तो पृथ्वी पर कोई सूर्य चन्द्रमा का हाल ग्रह का न बन लासक्ता अब कहो

(उत्तर) हम जोतिषको असत्य नहीं बताते हमने पहले ही लिख दिया है कि जोतिष सत्य शास्त्र वेदका अंग है और उसमें ऐसे ही हिसाब लिखे हैं अमुक तिथिको चन्द्रमा अमुक स्थान

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पर और पृथवी अमुक स्थान पर घूमती हुई सूर्य चन्द्रमा के बीचमें आजावेगी और पृथवी का साया चन्द्रमाके ऊपर इतनी देर रहेगा फिर वह घूमते हुये अलग होनेसे सूर्य की खुली किरण चन्द्रमा पे पड़ैगी तब ग्रहण यानी साया हट जावेगा जैसे कोई हिसाब लगा कर बता दे कि कल पडवा है सायंकालके समय पश्चिम दिशामें चन्द्रमा एक लकीरके आकार दिखाई देगा मेरे पास एक यंत्री है मेरे क्या बहुतों के पास होगी उसमें एक हिसाब लिखा है उससे चाहे जिस साल का आगेका हाल ग्रहण का ठीक ठीक मालूम करलो भला जो कोई उस यंत्री को देख कर किसी मोटे ताजे आरोग्य मनुष्य को यह कहने लगे कि तू आठ दिनमें मरजावेगा तो सिवा धूर्तके इसको क्या कहें

(प्रश्न) भाई जोतिष तो ठीक है और उसमें मनुष्य का शुभ अशुभ का हाल भी जान पड़ता है परन्तु कोई बिचारने वाला ही नहीं है न ही तो पूरी विध मिल जावे-

(उत्तर) अच्छा ऐसा कहने से तो कुछ ऐसी हानी नहीं परन्तु इतनी कृपा करो कि जब तक कोई पूरा जोतिषी पैदा न हो तब तक इन झूठे जोतिष के ग्रन्थो को दोशालेमें लपेट कर और शुभ

लगन देख कर नाक में रखदो कीड़ा कांटा लगने से सांप की कांचली उसमें रखदो और परमेश्वर से तुमभी और हमभी प्रार्थना करें कि हे सत्स्वरूप सतविद्या प्रकाशक तू हमारे आर्य्यावर्त्त देशमें फिर ऐसे विद्वान सत्य वादी चार वेदों का ज्ञाता जैसा शरीर श्री मद्दयानन्द सरस्वती स्वामी का प्रघट कियाथा कर जो इन झूठे ग्रन्थों को स्वाहा करदे और हमारे राजा की भी ऐसी नीति प्रचलित कर कि जो ऐसे जाली ग्रन्थ छापे वा रखे या ऐसे धोके से किसी का धन हरे उसको दरयाय शोर के दर्शन कराये

(प्रश्न) भला विवाह भी सुझाना चाहिये या नहीं यह काम बिना जोतिष कैसे चलेगा

(उत्तर)

विवाह तो अवश्य सुझाना चाहिये और कामकी सूझ पीछे परन्तु विवाह की सूझ पहले करनी चाहिये पर विवाह के सुझाने वाले विद्वान होने चाहियें। विवाह की सूझ वेदों में लिखी है जो कोई वेद नहीं पढ़ सक्ता वह मनुस्मृति से सुझाले जो उसको भी नहीं पढ़ सक्ता वह श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज के बनाये हुये ग्रन्थ

सत्यार्थ प्रकाश से सुनाले सो यहां भी कुछ लिख ते हैं क्योंकि इस बिवाह कारज के सूत्र की बड़ी आवश्यकता है जो इसमें व्याख्या बदे भी नो चिन्ता नहीं

अथ बिवाह की सूत्र

अथ विद्या अनुकूल

वेदानधीत्य वेदौवा वेदंवापियथाक्रमम्
अविलुप्त ब्रह्मचर्यो गृहस्थाश्रममाविशेत्

यह मनु महाराज के धर्म शास्त्र का वचन है इसका अर्थ यह है कि जब यथावत ब्रह्मचर्य आचार्यानुकूल वर्त्त कर धर्म से चारों तीन वा दो अथवा एक वेद को साङ्गोपाङ्ग पढ़के जिसका ब्रह्मचर्य खंडित न हुवा हो वह पुरुष वा स्त्री गृहाश्रम में प्रवेश करें

मनु॥ तं प्रतीतं स्वधर्मेण ब्रह्म दाय हरं पितुः
स्रग्विणं तल्प आसीन मर्हयत्प्रथमं गवा २

यह भी मनु का बचन है इसका अर्थ है कि जो स्वधर्म अर्थात् यथावत आचार्य और शिष्य का धर्म है उस से युक्त पिता जनक वा अध्यापक से ब्रह्म दाय अर्थात् बिद्या रूप भाग का ग्रहण और माला का धारण करने वाला अपने पलंग पर बैठे हुए आचार्य को प्रथम गोदान से सत्कार ऐसे लक्षण युक्त बिद्यार्थी को भी कन्या का पिता गोदान से सत्कार करे

मनु॥ गुरुणानुमतःस्नात्वासमावृत्तोयथाविधिः
उद्वहेत द्विजोभार्यांसवर्णांलक्षणान्विताम्॥३॥
यहभी मनुस्मृतिका श्लोक है कि गुरुकी आज्ञा ले
स्नान कर गुरु कुल से अनुक्रम पूर्वक आके ब्राह्मण
क्षत्रीय वैश्य अपने वर्णानुकूल सुन्दर लक्षणयुक्त
कन्यासे विवाह करे

मनु॥ असपिंडाचयामातुरसगोत्राचया पितुः
साप्रशस्ता द्विजातीनांदारकर्मणिमैथुने।४।
जो कन्या माताके कुलकी छः पीढियोंमें न हो और
पिताके गोत्रकी न हो उस कन्यासे विवाह करना उचि
त है इसका यह प्रयोजन है कि

परोक्षप्रियाइवहिदेवाःप्रत्यक्षद्विषः
यह शतपथ ब्राह्मण ग्रंथका बचन है
यह कि जैसी परोक्ष पदार्थमें प्रीति होती है वैसी प्र
त्यक्षमें नहीं होती जैसे किसीने मिश्री के गुण सुने
हों और खाई न हो उसका मन उसीमें लगा रहता
है जैसे किसी परोक्ष वस्तुकी प्रशंसा सुनकर मि
लनेकी उत्कट इच्छा होती है वैसी ही दूरस्थ अ
र्थात् जो अपने गोत्र वा माता के कुल में निकट
सम्बन्धकी न हो उसी कन्यासे वरका विवाह हो
ना चाहिये निकट और दूर विवाह करनेके गुण

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

यहहैं (१) एकतोजो बालक अवस्था सेनिकटरह

नेहैपरस्पर क्रीड़ा लडाई और प्रेम करते एकदूस

रे के गुण दोष भाव वा बाल्यावस्था के विपरीत

आचरण जानने और नंगे भी एक दूसरे को देखते

हैं उनका परस्पर विवाह होनेसे प्रेम कभी नही हो

सक्ता (२) दूसरा जेसा पानी में पानी मिलने से बिल

क्षण गुण नहीं होता विसे एक गोत्र पितृ वा मातृ कुल

में विवाह होनेसे धातु ओंके अदल बदल नहीं हो

नेसे उन्नति नहीं होती (३) तीसरा जैसे दुग्धमें मि

श्री वा शुंठ्या दि औषधियों के योग होनेसे उत्तम

होती हैं वैसे ही भिन्न गोत्र मातृ पितृ कुल मे पृथक

वर्तमान स्त्री पुरुषों का विवाह होना उत्तम है

(४) चोथे जैसे एक देशमें रोगी हो वह दूसरे देशमें

वायु और खान पान के बदलनेसे रोग रहित होता

है वैसे ही दूर देशस्थों के विवाह होने में सुख का

मान और विरोध होना सम्भव है (५) पांचवें निकट

सबन्ध करने में एक दूसरे के निकट होनेमें सुख

दुख का भान और विरोध होना भी सम्भव है दूरदे

शस्थें में नहीं दूरस्थों के विवाहमें दूर दूर प्रेमकी ल

खाई बढ़ती जाती है निकट विवाहमें नहीं

(६) छटे दूर दूर देश के वर्तमान और पदार्थों की आ

तोभी दूर संबंध होनेमें सहजतासे हो सकतीहै निकट विवाह होनेमें नहीं इसलिये

दूरिता दुर्हिता दूरे हिता भवतीति निरु०

कन्याका नाम दुहिता इस कारणसे हैकि इसका विवाह दूरदेशमें होनेसे हितकारी होती है निकटकानेमें नहीं

(७) सातवें कन्याकि पितृकुलमें दारिद्र होनेकाभी संभवहै क्योंकिजबजब कन्या पितृकुलमें आवेगीतब तब इसको कुछ न कुछ देना ही होगा

(८) आठवें कोई निकट होनेसे एक दूसरेको अपने अपने पितृकुलके सहायका घमण्ड और जब कुछ भी दोनोंमें वैमनस्य होगास्त्री रूट ही पिताके कुलमें चली जायगी एक दूसरेकी निन्दा अधिक होगी और विरोधभी क्योंकि प्रायः स्त्रियका स्वभाव तीक्ष्ण और मृदु होताहै इत्यादि कारणोंसे पिता के एक गोत्र माताकी छः पीढी और समीप देशमें विवाह करना अच्छा नहीं

महान्त्यपि समृद्धानि गोऽजाविधनधान्यतः
स्त्रीसंबन्धे दशैतानि कुलानि परिवर्जयेत् १

चाहे कितनेही धन धान्य गाय अजा हाथी घोडे राज श्री आदिसे समृद्धिये कुल होतोभी विवाहसंबन्धमें निम्नलिखत दश कुलोका त्याग करदे ॥१॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

हीनक्रियं निष्पुरुषं निश्छन्दो रोमशार्षसम्
स्यायामया व्यपस्मारि श्वित्रृ कुष्टिकुलानिच २
जो कुलसन क्रियासे हीन सत्पुरुषोंसे रहित वेदाध्ययन
से बिमुख शरीर पर बड़े बड़े लोम अथवा बवासीर क्ष
यी स्वांसी आमाशयमिरगी स्वेत कुष्ट और गलितकुष्ट
युक्त कुलों की कन्या यावर के साथ विवाह न होना
चाहिये क्योंकि यह सब दुर्गुण और रोग बिवाह कर
ने वाले के कुलमें भी प्रविष्ट हो जाते हैं इस वास्ते उ
त्तम कुलके लड़के लडकियों का आपसमें विवाह
होना चाहिये ॥२॥
नोद्वहेत्कपिलां कन्यानाऽधिकांगीनरोगिणीम्
नालोमिकांनातिलोमांनवाचाटान्नपिंगलाम् ३ अनु
नपीले वर्ण बाला ना अधिकाङ्गी अर्थात् पुरुषसे ल
म्बी चौड़ी अधिक बल वाली न रोग युक्ता न लोमरहित
न बहुत लोम वाली न बक वाद करने हारी और भूरे
नेत्र वाली न हो ॥३॥
नर्क्षवृक्षनदीनाम्नींनान्त्यपर्वत नामिकाम्
नपक्ष्यहि प्रेष्यनाम्नींनचाभीषणनामिकाम् ४
नक्षत्र अर्थात् अश्विनी भरणी रोहणी देई रेवती बाई
चित्तारि आदि नक्षत्र नाम वाली तुलसी गेंदा गुलाबो
चंपा चमेली आदि वृक्ष नाम वाली गंगा यमुना आदि

नदी नाम वाली चांडाली आदि अन्त्य नामा वाली वि न्ध्या हिमा लिया पार्वती आदि परवत नाम वालीको किला मैना आदि पक्षी नाम वाली नागी भुजंगी आदि सर्प नाम वाली माधो दासी मीरा दासी आदि प्रेष्य नाम वाली भीम कुआरि चण्डिका काली आदि भीषण नाम वाली कन्या के साथ बिवाह न करना चाहिये क्योंकि येह नाम कुत्सित और अन्य पदार्थों के भी हैं माता पिता को पहले ही ध्यान रखना चाहिये कि और पदार्थों के नाम पर सन्तानों के नाम रखें ॥ ४॥

अव्यङ्गाङ्गीं सौम्यनाम्नीं हंसवारणगामिनीम नतुलोमकेशदशनां मृद्वङ्गीमुद्वहेत्स्त्रियम ५ मनु॰

जिसके सरल सूधे अङ्ग हों विरुद्ध न जिसका नाम सुन्दर अर्थात् यशोदा सुखदा आदि हो हंस और हथनी के तुल्य जिसकी चाल हो सुक्षम लोम केश और दान्त युक्त और जिसके सब अङ्ग कोमल हों वैसी स्त्री के साथ बिवाह करना चाहिये ॥

(प्रश्न) विवाह का समय और प्रकार कौनसा अच्छा है

(उत्तर) सोलहवें बर्षसे लेके पच्चीसवें बर्ष तक कन्या और पच्चीसवें वर्षसे लेके ४८ वें बर्ष तक पुरुष का बिवाह का समय उत्तम है इसमें जो सोलह और पच्चीस में बिवाह करे तो निकृष्ट आठारह बीस की स्त्री तीस पैंतीस

वा चालीस वर्षके पुरुष का मध्यम चौवीस वर्षकी स्त्री और अड़तालीस वर्षके पुरुष और कन्याका विवाह उत्तम है जिस देशमें इसी प्रकार बिबाहकी बिधि श्रेष्ठ और ब्रह्मचर्य्ये विद्याभ्यास अधिक होता है बाल्यावस्था और अयोग्योंका बिबाह होता है वोह देश दुःखमें डूब जाता है क्योंकि ब्रह्मचर्य विद्याके ग्रहण पूर्वक बिवाह कि सुधारहीसे सब बातोंका सुधार और बिगड़नेसे बिगड़ होजाता है॥

(प्रश्न) अष्टबर्षाभवेद्गौरी नववर्षाच रोहणी
दशवर्षाभवेत्कन्याततऊर्ध्वंरजस्वला १
माताचैवपितातस्याज्येष्टोभ्राता तथैवच
त्रयस्ते नरकंयान्ति दृष्ट्वा कन्यारजस्वला २

अर्थ) यह श्लोक पाराशरी और शीघ्रबोधमें लिखा है अर्थ इनका येहै कि कन्या को आठवें बर्ष गौरी नवमेंवर्ष रोहणी दशवें वर्ष कन्या संज्ञा होजाती है।१॥ दशवें वर्ष बिवाह न करके रजस्वला कन्या को माता पिता और उस का बड़ा भाई येतीनों देखके नरकमें गिरते हैं

(उत्तर) ब्रह्मोवाच

एकक्षणाभवेद्गौरी द्विक्षणेयन्तुरो। हणी
त्रिक्षणासाभवेत्कन्या ह्यतऊर्ध्वंरजस्वला१
मातापितातथाभ्रातामातुलोभगिनीस्वका।

मर्येते नरकं यान्ति दृष्ट्वा कन्यां रजस्वलां २

यह संघो निर्मित ब्रह्मपुराण का बचन है

अर्थ॥ जितने समय में परमाणु ऐक पलटा खावे उतने समय को क्षण कहते हैं जब कन्या जन्मे तब एक क्षण में गौरी दूसरे में रोहिणी तीसरे में कन्या और चौथे में रजस्वला हो जाती है उस रजस्वला को देखके उसी की माता पिता भाई बहन सब नरक में जाते हैं

(प्रश्न) यह श्लोक प्रमाण नहीं

(उत्तर) क्यों प्रमाण नहीं क्या ब्रह्माजी के श्लोक प्रमाण नहीं तो तुम्हारे भी प्रमाण नहीं हो सक्ते

(प्रश्न) वाह वाह पाराशर और काशीनाथ का भी प्रमाण नहीं करते

(उत्तर) वाह जी वाह तुम ब्रह्माजी का प्रमाण नहीं करते क्या ब्रह्माजी पराशर और काशीनाथ से बड़े नहीं हैं जो तुम ब्रह्माजी के श्लोकों को नहीं मानते तो हम भी काशीनाथ पराशर के श्लोकों को नहीं मानते

(प्रश्न) तुम्हारे श्लोक असंभव होने से प्रमाण नहीं क्योंकि सहस्रों क्षण जन्म समय में ही हो जाते हैं विवाह कैसे हो सक्ता है और उस समय विवाह करने का कुछ फल भी नहीं दीखता

(उत्तर) जो हमारे श्लोक असंभव हैं तो तुम्हारे श्लोक भी

असंभव है क्योंकि आठ नव दशवें वर्ष भी विवाह करना निष्फल है क्यों कि सोलवें वर्ष के पश्चात चोबीसवें वर्ष पर्यन्त विवाह होनेसे पुरुष का वीर्य परिपक्व शरीर बलिष्ट स्त्री का गर्भाशय पूरा और शरीर भी बलयुक्त होने से सन्तान उत्तम होते हैं जैसे आठवें वर्ष की कन्यामें सन्तानोत्पत्ति का होना असंभव है ऐसे ही गौरी रोहणी नाम देनाभी अयुक्त है यदि गौरी कन्या न हो किन्तु काली होनी उसका गोरी नाम रखना व्यर्थ है और गोरी महादेवकी स्त्री रोहणी वसुदेवकी स्त्री थी उसको तुम पुराणि लोग मातृ समान मानते हो जब कन्या मात्रमें गोरी आदिकी भावना करते होतो फिर उनसे विवाह करना कैसे संभव और धर्म युक्त हो सक्ता है इसलिये तुम्हारे और हमारे वो दो श्लोक मिथ्या होंगे क्यों कि जैसे हमने ब्रह्मोवाच ॥ करके श्लोक बना लिया है वैसे वेभी पराशर आदिके नामसे बना लिये हैं इसलिये इन सबका प्रमाण छोड़के वेदोंके प्रमाणसे सब काम किया करो देखो मनुमे क्या लिखा है

त्रीणि वर्षाण्युदीक्षेत कुमार्यृतुमती सती ऊर्ध्वं तु कालादेतस्माद्विन्देत सदृशं पतिम्

अर्थ ॥ कन्या रजस्वला हुये पीछे तीन वर्ष पर्य्यन्त पतीकी खोज करके अपने तुल्य पती को प्राप्त होवे जब प्रतिमास

रजो दर्शन होताहै तोतीन वर्ष में छत्तीस वार रजस्वला हुये पश्चात् बिवाह करनायेाग्य है इसलिये पूर्वे नहीं उचित समयसे थोड़ी आयु वाली स्त्री पुरुष कोगर्भाधा नमें मुनीबरधन्वन्तरीजीसुश्रुतमेंनिषेधकरतेहैं उनका बचनहै

ऊनषोडशबर्षायामप्राप्तः पञ्चविंशतिम्
यद्या धत्ते पुमानगर्भंकुक्षिस्थःसविपद्यते १
जातो वा न चिरञ्जीवेज्जीवे द्वादुर्बलेन्द्रियः
तस्मादत्यन्तवालायांगर्भाधानंनकारयेत

अर्थ॥ सोलह बर्षसे न्यून वालीस्त्रीमें पच्चीस बर्षकमआ युवाला पुरुष जोगर्भ का स्थापन करेतो वोहकुक्षिस्थ हुवा गर्भ बिपत्ति को प्राप्त होता अर्थात् पूरण कालतक गर्भाशय में रहकर उत्पन्न नहीं होता अथवा उत्पन्नहो तो चिरकाल तक नजीवे और जोजीवे भीतो दुर्ब्बलेन्द्र यहो इसकारणसे अति बाल अवस्था वाली स्त्रीमें ग र्भस्थापन नकरे ऐसे रसे शास्त्रोक्त नियम और सृष्टी क्रमको देखने और बुद्धि और २५ बर्षसे कम आयुवा ला पुरुष कभी गर्माधान करनेके योग्य नहीं होता इन नियमोंसे बिपरीजो करतेहैं वोह दुखभोगते हैं

और स्वयंबरकी रीतिसे वर कन्या आप विवाहकीसर्क करें तो अति उत्तम है और माता पितादि कोभी अपनी

सन्तानें की सूझ बूझ भले प्रकार करनी चाहियेक्योंकि आजकल अविद्याके कारण स्वयंबर की रीतितोकुछ कालपाकर प्रचलित होती दीखती है. परन्तु कन्या आदि केमाता पितादिको तो अवश्य बर कन्या के गुण कम विचारकर बिवाह पूर्वोक्त रीति करना चाहियेऔर जैसे हमारे जोतशी जी बिवाह सुझाते हैं इसका नाम सूझ तो नहीं जोतशीजी को उन्माद रोग समझना चाहिये देखो बरकन्या कायोग मिलाना थाजोतशी जी राहुके तु आकाश के तारोंकायोग मिलाने लगे भला देखो जो हम किसीसे कहें कि हमारे पास एक घोड़ा हैतुम इस को देखलो और इसी के योग का दुसरा घोड़ा मिलाकर मोल लादो जो गाडीमें जोड़ी लगाई जावे और वोहम् ख् घोड़ेके मिलान की तो परीक्षा करे नहीं और विन्ध्याचल और हिमालय पहाड़ के फ़ासले देख दाखकर और अयोग्य घोड़ा ले आवेतो यह सूझ है या अनसूझ बस जोतशीजीनेनतोयह देखाकि लड़का लड़की पूरी विद्याभी पढ़चुकेया नहीं और लड़के लड़कीने सीतला आदि भयंकर रोगों सेभी छुट्टी पाली वा नहीं बस अन्धोंकीतुल्य मंगल कुछ बिचार अनुराधाधनिष्ठा धुकार थालीमें आ कुशुङ आदि मंगा गंगाजल उज्जल और जमनाजल निर्मल चिट्ठीमे लिख पत्री

के हलदी लगा मृतका का ढेला पुजा चिट्ठी दे नाई को
जलद पठा बिवाह रचा लेलिवा अलग होने हैं इतनाभी
देशाकालका बिचार नही करने कि एक साथ साहासु
गाने से देश में गदर हो जावेगा और प्रन्येक पदार्थ विवाह
वालेां को अति महगा मिलेगा बस स्वार्थियेां को क्या बुढ्ढा
मेरया जवान अपनी हन्या करने से काम फसल सी एक
ही साथ लूटलेने हैं इस बर्ष चमारों के कुल बिवाह जे
ष्ट और आषाढ़ के महीने में बना दिया और उनको यह
भय देदिया कि फिर नेड़े दिनों में साहाही नहीं है वृहस्प
ती डूब जावेगी कुल चमारोंने तीन तीन और चार चार
बर्ष के लड़के लड़कियेां के विवाह कड़ दिय जेष्ट के
आरंभ से आषाढ़ के अन्त तक हमारे हाली पालियेां को
ढाल के नाच से एक लहमा भी फुरसत न मिली और य
ही खेती कमका समय और दोनो फसलेां का सिर था ब
स सारी जमीन नप्पड़ और बंजड़ पड़ी रहगई अब क
हो भाई काश्तकारों जमीदारों यह हमारी तुम्हारी खे
ती डूवी या किपाप जोकी वृहस्पती डूबी जो इन जोतषि
यां के घर में खाने को नहीथा तो हमहीसे कहा होता
तो हम ही सिर माथा मार के एक सेर आटा और गुड़ की
डली और एक मन सूरी पेसा जो चमारों से मिला है था
लीमें यह सामग्री लेजाकर पाधजी की भेट करते

अन्धेर मचा दिया यह न समझा कि इन हाली पाली चमारों के विवाह माघ फागुणमें बतावें तौभी एक अंसमें समझ कहा जाय क्योंकि जब खेती काम वालों को सुविता और शक्कर चावल भी सस्ता होता है और गमन करने को और नाचने कूदने कोभी यह ऋतु सीतल और उत्तम होती है तीसरे एक पंथ दो काज विवाह का विवाह और फाग बसंत होलीकी होली और जो समझाने परभी नमानेगे तो लाचार इन जोतशियेांका प्रबन्ध सरकारसे फरयाद करके कराया जावेगा क्योंकि हमकोतो सरकारी माल देनाहै

(प्रश्न) भला यहतो हुवा जब हम किसी का विवाह जोतिषी से न सुझावें गेतो बिना जोतिष के रासी कैसे मिलेगी और जब तक रासियेां में मित्रता नहोवेतो मर्द व को पुरुष स्त्रीमें दंगा बखेड़ा रहेगा

(उत्तर) दोहा

ऊंटके गलमें टाल बंधावें कीडीके गल घंटा
बिना परीक्षा जोग मिलावें रहै रात दिन टंटा

यह किसी भुगते हुये महात्मा का वचन [illegible] सो सत्य [illegible] का मानना चाहिये क्योंकि जन्म [illegible] न मि[illegible] पुरुष स्त्रीमे बिरोध नही होता किन्तु स्वभाव के न मिलनेसे होताहै जब दोनों के स्वभाव गुण जहांतक एक तुल्य होंगे उतनी ही प्रीती परस्पर दोनो में होगी नो रास मिल

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

नेसे प्रीती होतीतो एक घड़ी में लाखों पदार्थ फलादिउत्प
न्न होतेहैं कोई मीठा कोई खट्टा कोई कड़वानीमआदि
और रासी कीतो क्या गणनाहै जो सया दिन रहतीहै और
प्रत्यक्ष देखो तो मुसलमान ईसाईतो रास नही मिलाते
उनमें प्रीति क्यों होतीहै जब हमारे देशमें गुण कर्मस्वभा
व अनुकूल मिलाकर विवाह होताथा तब ऐसी प्रीतिपुरु
ष स्त्रीमें होतीथी कि एक दूसरे के विछोवे से प्राण तक
त्याग कर देतथे और न व्यभिचार यहांथा क्योंकि एक दूसरे
के सिवाय दोनोंके और कोन अच्छा मालूम होता
(प्रश्न) दूसरे मतों में जहां कहीं प्रीती देखी तो अनुमान
से जानलो कि यातो दई योगसे रासी मिल गई होगी या
जो मिलालेते तो और भी विशेष प्रीती होजाती
(उत्तर) आपके कहेका प्रमाण भी याये कि जो कुछ हम
कहैं वो ही सत्यजान लो ऐसे तो हमभी कह दें कि जहां
कहीं प्रीती देखो वहां अनुमान करलो कि यहां रासी नहीं
मिली और रासी मिलजाती तो प्रीती नहोती स्वभाव ही एक
ता होगा नवही प्रीती होगी ग्रहोंके बीचमें डाल कर क्यों
झगड़ा डालते हो
(प्रश्न) क्या विधवा योगभी नदेखना चाहिये क्यो वो भी झूठ है
(उत्तर) हां झूठ है क्योंकि आपके जो तश में बहुत से वि
धवा योग हैं किसी बाल बिधवा योग कन्या से प्राप्त या

नीमिलाकर जिस पुरुष के अच्छे ग्रह हों बिवाह किया जाय जो स्त्री पहले मरी तो बिधवा योग झूठा जो पुर्ष पह ल मरा तो शास्त्र झूठी यह दोनो एक ही जोतश के अंग हैं

(प्रश्न) जो उसकी रास ही किसी से न मिलेगी

उत्तर) यह नहीं हो सकता पहले कह दिया है कि एक घड़ी में लाखों उत्पन्न होते हैं एक रास के होने से शास्त्र के सब दोष नाश हो जाते हैं

(प्रश्न) जो उस बिधवा योग स्त्री का बिबाह हीन किया जावेगा तब तो फिर जोतश सच्चा होगा

(उत्तर) बलहारी ऐसी तीक्ष्ण बुद्धि के फिर वोह बि धवा ही कैसी हुई और बिधवा योग और तुम्हारा जोतश झूठा हुवा

(प्रश्न) इसका विवाह हम ऐसे पुर्ष से करेंगे जिसके भी ग्रह क्रूर हों

(उत्तर) जो पुरुष पहला मरा तो उसके ग्रह झूठ जो स्त्री पहले मरी तो विधवा योग झूठा जो दोनो एक ही समय मरे तो दोनों योग झूठे न वोह विधवा हुई न वोह रंडवा हुवा

(प्रश्न) ऐसे विधवा योग का विवाह पहले किसी पत्थर या वृक्ष से करके फिर किसी पुर्ष से किया जावेगा

(उत्तर) मनुष्य का विवाह पत्थर वृक्षसे कैसा और फिर पत्थर वृक्षके होते उसकी स्त्री का दूसरे के साथ विवाह करदें परन्तु सच्चे पत्ती के मरने पर भी दूसरा विवाह न करने दें बाहरे जोतिश फलन गुडे गुडीके बिवाह में भला दोनो एकसे तो हुये हैं वाहजी तुम्हारी भी कोसी बात है मीदडी आपतो कानोंसे फडवाई है परन्तु औरोंको शकुन वतावे इनसे कोई पूछे कि तुम्हारे ही घरोंमें जिनके घरकी मोरुसी जोतिश विद्या है कैसा सहस्रों बाल बिधवा बैठी हैं तुमने तो बिचारने में कोई भी कसर न रखी होगी हठ को छोड़ कर देखो बाल बिधवा बाल्य बिवाह करनके कारण होती हैं जो वेद और धर्म शास्त्रों के बिरुद्ध है देखो चैत्र मासमें जितने फल आंब वृक्ष पर होते हैं आषाढ मासमें उससे सोवा अंस भी नहीं रहते इससे यह जानना कि बालक जन्मसे वीस बर्ष तक बोहत मरते हैं और बीस से तीस तक थोडे मरते हैं यह बात मरदम शुमारी और देशोके फोनी नामोंमें भले प्रकार मालुम होगई है भला विचार तो करो परसोंको तो भूख लगे और आज रोटी बना कर धरदें तो खवे ना नहीं तो क्या है कुत्ता बिल्ली आदिको से कडो चिंता है देखो जो भारत की जोती राज पूत आदि

तरुण अवस्था में विवाह करते हैं उनके यहां थोड़ी ही बिधवा है और जो हैं भी उनके कुछ सन्तान भी अवश्य ही होगी और जो कहीं कोई बाल बिधवा भी होगी तो वो ह इन्ही महाराज जो तनशियें की करतूत और इनके काशी नाथके शीघ्र नाश का प्रताप होगया होगा

प्यारे भाइयो चेतो अब नादर शाही नहीं जो कोई तरुण कारियें को मुसलमान छीन ले अब तो अंग्रेजी राजका दौर है देश में शान्ती के कारण सब बिगड़े व्यवहारों को सुधाराना चाहिये अब काशी नाथ के तीन से बर्षके नवीन शीघ्र बोधकी ढपडी मत पीटो अब तो बेदके नक़ारे की घोर है विद्या का दिन ब दिन जोर है जहां तहां समाजें और सभाओं का शोर है यह सब सनातन धर्म के फैलने का तौर है

(प्रश्न) भाई सुनो तुम नहीं जानते जिसके भाग में बिधवा होना लिखा है उसमें क्या तो जो तन शा करे और क्या बिचार करने वाला करे सारी बात तो ये है

(उत्तर) जब तुम यह निश्चे रखते हो कि सारी बात अच्छी बुरी भागसे होती हैं फिर तुम रात दिन क्यों लुटते फिरते हो कि हम अपने पूजा पाठसे तुम्हारे बिगड़े कारज सुधारदेंगे क्यों घरही भाग का आसरा लेकर नहीं बैठते और भाग आप कहते हो किसको

(प्रश्न) भाग हम उसको कहते हैं जो मनुष्यों के जन्मसम

य बेमाता उसके मस्तकमें अच्छे बुरे भोगके अक्षर पहले ही लिखदेती है

(उत्तर) फिर क्या वोह बेमाता उसके भागकी नकल तुम्हारे पास भी भेजदेती होगी जिससे तुम भाग का हाल बनाने लगने हो और वोह मस्तक की रेखा किन अक्षरोंमें लिखनी है फारसीमें या नागरी आदिमें या अंग्रेजी आदिमें

(प्रश्न) इन अक्षरोंमें नहीं है वोह तो अनूठे ही अक्षर हैं जैसे तुमने कभी किसी मुरदे की सूखी खोपरी में देखे होंगे

उत्तर) वोह अनूठे अक्षर तुमने फिर किस तरह जाना कि यह बेमाता का लेख है हमने तो वोह तन खोपरी देखी और उसमें अंग्रेजी के सी लिखन की एक पंगती भी देखी परीक्षा करनसे और डाकटरोंके पूछनेसे मालूम हुवा कि वोह खोपडी का जोड है वोही टेड़सी मालूम होती है सो यह सब तुम्हारा अन्धकार है इसी अन्धकारने चार चार पांच बर्षकी कन्या बिधवा करके बिठाई हैं

(प्रश्न) कुछ संदेह नहीं कन्या ही रांड होती हैं कोई गाय भैंस रांड नहीं हुवा करती

उत्तर) संदेह क्योंन हो संदेह है गर्भपात करनेका संदेह है स्वतंत्र के सारटी फिकट हासल करने का सन्देह है चकलेमें घर बांधनेका संदेह है घर का असदाब जेवर लेकर किसी भंगी चमारके साथ भाग जाने का

संदेह है माबाप की आबरू में धब्बा लगाने का सन्देह है वे सन्तान रहजाने का सन्देह है बदकार होकर गाँव महल्ले की स्त्रियों को विगाड़ देने का सन्देह है नसल कम होजाने का सन्देह है सतनारायण की कथा सुनने २ काले में धौले होजाने का सन्देह है रात दिन घरमें लड़ाई रखने का और बोहत सन्देह है जिनको सब जानते हैं लिखना कहना तो झूठ नाहि बोझ है

(प्रश्न) भाई सुनो भी होवा न तो सब ठीक तुमने कही और रयह तो हम भी जानते हैं कि ईश्वर की गती कोई भी नहीं जान सकता उसकी गती तो अर्जुन को भी मालूम नहीं हुई थी जो आठ पहर भगवान का रथ हांकता था परन्तु इतना है कि आज कली काल में दान पुन्य ऐसे कोई नहीं करता भला इतना तो है कि ग्रह आदि के डरसे चार पैसे हाथ से छोड़ही देता है आप जानते पुन्य के प्रताप से उसका भी कल्याण है बहाने से ही लोग पुन्य दान करते हैं

(उत्तर) हम पुन्य दान करने को बुरा नहीं कहते परन्तु ऐसे धोके से पुन्य करने वालों और करवाने वाले दोनों ही नर्क गामी होते हैं दान पात्र कुपात्र का विचार करके देना और लेना सब को उचित है एक तो दान उन को देना चाहिये जो बिद्वान देश के उपकारक और धर्म के सुधार में अपना समय खर्च करते हैं जो सत्य बादी और सब का कल्याण करने चाहने वाले ब्राह्मण गुण युक्त पुरुष हैं दूसरे विधा

नवंध पाठ शाला आदि के उपकार मे नीसरे गो रक्षा आ
दि देशोन्नती कार्जो में और भी जिस समय जिस प्राणी को जि
स पदार्थ की अवश्य कता हो उसी समय उसी प्राणी को
वो ही वस्तु दान देना परम दान है अब यह व्याख्यान ब
हुत बढ़गया बुद्धिमान थोड़े ही मे बहुत विचार करलें
गे अब परमेश्वर से यही प्रार्थना है कि हे सत्य स्वरूप तू
संसार से असत्य और पाखंड का नाश कर और भारत
सन्तान को ऐसी सुबुद्धि दे कि जिससे यह देश दुर्दशा
को देखकर सुदशा का बिचार करके उन्नति को प्राप्त हो

इति

ओ३म्

शान्तिः शान्तिः शान्तिः

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

आर्य्यसमाजके नियम

१। सबसत्यविद्या और जोपदार्थ विद्यासेजाने जाते हैं उनका आदि मूल परमेश्वर है

२। ईश्वरसच्चिदानन्दस्वरूप निराकार सर्वशक्तिमान् न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विर, अनादि अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक सर्वान्तर्यामी अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टि कर्ता है उसीकी उपासना करनी योग्य है

३। वेदसत्यविद्याओंका पुस्तक है वेदका पढना पढाना और सुन्ना सुनाना सब आर्य्योंका परम धर्म्म है

४। सत्यग्रहण करने और असत्यके छोडनेमें सर्वदा उद्यत रहना चाहिये

५। सबकाम धर्म्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्यको विचार करके करने चाहिये॥

६। संसारका उपकार करना इससमाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक आत्मिक सामाजिक उन्नति करना॥

७। सबसे प्रीति पूर्वक धर्म्मानुसार यथा योग्य वर्त्तना चाहिये

८। अविद्याका नाश और विद्याकी वृद्धि करनी चाहिये

९। प्रत्येकको अपनी ही उन्नतिसेनसंतुष्ट रहना चाहिये किन्तु सबकी उन्नतिमें अपनी उन्नति समझनी चाहिये॥

१०। सबमनुष्योंको सामाजिक सर्वहितकारी नियमपालनेमें परतन्त्र रहना चाहिये और प्रत्येक हितकारी नियममेंसब स्वतन्त्र हैं॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

Chhangamal Lalchand Goklani

बालक ग्रंथमाला नं० १२

महात्मा बुद्ध
का
जीवन-चरित

श्रीवृन्दावनलाल वर्म्मा द्वारा संकलित।

कुंवर हनुमन्त सिंह रघुवंशी अध्यक्ष
राजपूत ऐंग्लो-ओरियण्टल प्रेस
द्वारा मुद्रित और प्रकाशित ।

आगरा
राजपूत ऐंग्लो-ओरियण्टल प्रेस ।
सं० १९६५ वि०

प्रथमावृत्ति

मूल्य ।)

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सूचना ।

इस पुस्तक का पूर्ण मुद्रण-स्वत्व कुंवर हनुमन्त सिंह रघुवंशी अध्यक्ष राजपूत-ऐंग्लो ओरियण्टल प्रेस, आगरा को दिया गया है ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

भूमिका।

बुद्ध के जन्म के समय भारतवर्ष में वैदिक धर्म्म लुप्तप्राय होगया था और वाममार्ग की बड़ी प्रबलता होरही थी। यों तो महाभारत के सर्वनाशी भीषण संग्राम के बाद ही से भारत का अधःपतन आरम्भ होगया था परन्तु बुद्ध के ३ शताब्दी पहले (विक्रम के कोई एक हजार वर्ष पहले) भारतवर्ष की अवस्था बड़ी शोचनीय होगई थी। वाममार्ग ने भारत को हिंसा और दुराचार में ऐसा लिप्त किया, कि इसके उद्धार की बहुत थोड़ी आशा रही। अधिकांश लोग वेद का नाम तक भूल गये थे। इसी दुस्समय में, मानो भारत को बचाने के लिये, ईश्वर ने बुद्ध को जन्म दिया।

बुद्ध देव ने इन दुष्कर्मों को रोकने और हिंसारहित पवित्र जीवन व्यतीत करने का उपदेश दिया। महात्मा बुद्ध ने बड़े परिश्रम के साथ विद्याध्ययन और ज्ञान सम्पादन किया था। ये पूर्ण विद्वान्, सर्वशास्त्रवेत्ता और संयमी पुरुष थे। इनका जीवन निस्पृह और निर्दोष था। ये मनुष्यमात्र के हितकारी सिद्धान्तों का प्रचार करना चाहते थे। अतः इनको अपने उपदेशकार्य में बड़ी सफलता प्राप्त हुई। बहुत सुगमता के साथ सम्पूर्ण भारतवर्ष में बौद्धमत का प्रचार होगया। पीछे से बौद्धमत के प्रचारकोंने तिब्बत, नेपाल, तातार, मङ्गोलिया, जापान, चीन, अनाम, ब्रह्मदेश, सिंहलद्वीप (लङ्का), स्याम, मलाया, कोरिया, मंचूरिया, साइबेरिया का कुछ भाग, बाल्हीक (आधुनिक उत्तर अफ़ग़ानिस्तान, चित्राल और

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

बुख़ारा) गान्धार (आधुनिक क़न्दहार, उत्तरीय और पूर्वीय बलोचिस्तान और ग़ज़नी—यहां पर आर्य राजा राज्य करते थे) आदि दूर दूर तक के देशों में जाकर इस मत का प्रचार किया। इन में से बाल्हीक और गान्धार को छोड़ कर अन्य देशों में इस धर्म की जड़ जम गई। बौद्ध धर्म का प्रभाव अब भी उन देशों में बना हुआ है। भारतवर्ष से चीन में कुछ बौद्ध परिव्राजक इस धर्म का प्रचार करने गये थे। विक्रमी सम्वत् के १६० वर्ष पूर्व इन लोगों का जाना सिद्ध होता है।

विक्रमी सम्वत्के ४ वर्ष पूर्वतक चीनमें बौद्धधर्म बहुत शीघ्रता के साथ नहीं फैलसका, क्योंकि सब लोगोंका ध्यान इसकी ओर आकृष्ट न हुआ था। परन्तु जब (वि० पू० ४ वर्ष) चीन सम्राट् मिङ्ग-ती चीन के सिंहासन पर बैठे, तब यह चीन भर का धर्म हो गया। यहींसे यह जापान इत्यादि देशों में फैल गया। समय समय पर चीनी यात्री भारत में बौद्ध धर्म से सम्बन्ध रखने वाली नई बातें जानने के लिये आते रहे। उनकी प्रकाण्ड धर्म-रुचि का इस से अच्छा पता लगता है।

आज तक दुनिया में जितने धर्म निकले हैं, उनमें से सब से अधिक अनुयायी इसी धर्म ने आकृष्ट किये हैं,—दुनिया में बौद्ध सब से अधिक हैं। आजकल इस धर्मका यूरोप व अमेरिका में अधिक प्रचार हो रहा है। बहुधा विद्वान् पुरुष ईसाईमत छोड़कर बौद्धधर्म स्वीकार करते जातेहैं। इस मतके अनेक ग्रन्थोंके अंगरेज़ी आदि भाषाओं में अनुवाद हो गये हैं। इन यूरोपियन लोगों ने पाली भाषा बड़ी बड़ी कठिनाइयोंसे सीखकर, तथा बौद्ध ग्रन्थों

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

को बड़े परिश्रम से खोज कर उनका अंगरेज़ी, फ्रेञ्च, जर्मन आदि भाषाओं में अनुवाद किया है। खेद है कि जिन महात्मा बुद्ध के विचारों की अन्य देशों में इतनी क़दर हो रही है, उनका कोई विस्तृत जीवन-चरित्र अब तक भारत की भावी राष्ट्रीय भाषा हिन्दी में नहीं प्रकाशित हुआ। इस अभाव को देख कर, कुंवर हनुमन्तसिंह रघुवंशी अध्यक्ष 'राजपूत ऐंग्लो-ओरिएण्टल प्रेस आगरा' व सम्पादक 'स्वदेश-बान्धव' के अनुरोध से यह संक्षिप्त 'जीवन-चरित' अल्प समय में लिख कर पाठकों को भेंट करता हूं। यदि यह रुचिकर हुआ तो बहुत शीघ्र बुद्ध का विस्तृत जीवन-चरित्र प्रकाशित करूंगा।

मैं कुंवर हनुमन्तसिंह जी को बिना धन्यवाद दिये नहीं रह सकता। आप चाहते हैं, कि हिन्दी में उत्तमोत्तम पुस्तकें प्रकाशित करें, परन्तु जब तक उत्तम पुस्तकों को सर्व साधारण हिन्दी भाषी जनों में गुणग्राहकता न हो तब तक हिन्दी भाषा के साहित्य का उत्कृष्ट होना कठिन मालूम होता है।

मैंने इस पुस्तक के लिखने में J. Barthetemy Saint Hillaine कृत "बुद्ध का धर्म" और Marcus Dods, D. D. कृत "मुहम्मद, बुद्ध और ईसा" नामक पुस्तकों से बहुत कुछ सहायता पाई है, इस से मैं इनका कृतज्ञ हूं।

झांसी, बुन्देलखण्ड } वृन्दावन लाला वर्मा।
भाद्र शुक्ला तृतीया सं० १९६५ वि०}

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

महात्मा बुद्ध ।

विक्रमी सम्वत से ७०० वर्ष पहिले कपिलवस्तु नामक राज्य की राजधानी कपिलवस्तु* नगर में महात्मा बुद्ध का जन्म हुआ था। आज कल की अवध सीमा के उत्तर, नेपाल-पर्वतों के ठीक नीचे यह राज्य था।

लङ्का में एक ग्रन्थ महावंश नाम का है। उसमें बुद्ध के पैदा होने का वर्ष विक्रमी सं० से ५६६ वर्ष पहिले और निर्वाण ४८६ वर्ष पूर्व लिखा है, और महानिर्वाण ८० वर्ष पीछे। कई एक युरोपियन विद्वानों ने इस की जन्मतिथि ४२३ वर्ष वि०पू० (४८० ई०पू०) सिद्ध करना चाही है, और निर्वाणतिथि ठीक ८० साल बाद। इन सब में लंका के महावंश का महत्व विशेष है। यह ग्रन्थ पाली भाषा में लिखा गया है। यह ग्रन्थ सं० ५१६ और ५३४ के बीच में लिखा गया था, इस कारण प्राचीन है, और प्राचीन होने से क्या, तरतीबवार बहुत है इस कारण इस की तिथि अधिक मानने के योग्य है। कपिलवस्तु में सूर्य्य वंशीक्षत्रियों की शाक्य शाखा राजशासन करती थी। इन्हें गौतम भी कहते थे। बुद्ध जी के पिता का नाम

---

*विक्रमी सम्वत् की पांचवीं शताब्दी के आदि में फ़ाहियान नामक एक चीनी यात्री भारत में आया था। उस समय कपिलवस्तु उजाड़ हो गया था। इस के दो सौ वर्ष बाद लगभग सम्वत् ६८८ विक्रमी में ह्यू नसँग ने भी इन खंडहरों को देखा था। वह इन को बड़ी संख्या बतलाता है। राजा के महल और उपवन का चतुर्कोट ? मील की परिधि में बतलाता है। यह चतुर्कोट उस समय साफ़ दिखलाई देता था। इन खंडहरों में लोगों ने ह्यू नसँग को बुद्ध की माता का शयनागार और ... गौतम के बचपन का कमरा दिखाया था।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

शुद्धोदन था। यह उस समय राजा थे। बुद्ध की माता का नाम मायादेवी था। यह राजा स्वप्रबुद्ध की पुत्री थी।

मायादेवी रूप लावण्य में बहुत प्रसिद्ध थी। मायादेवी के शुभ गुण और उस की प्रतिभा, सुन्दरता से बहुत बढ़े हुए थे, क्योंकि उसे विद्या और धर्म के सर्वोत्कृष्ट और सर्वश्रेष्ठ तत्व प्राप्त हुए थे। शुद्धोदन अपनी रानी के योग्य था, वह नियमानुसार राज्यशासन करता था। शाक्य लोगों में कोई भी राजा अपनी प्रजा से—मन्त्रियों और दरबारियों से लेकर साधारण गृहस्थ और व्यापारियों तक से—इतना सन्मानित नहीं हुआ जितना शुद्धोदन हुआ था।

यह श्रेष्ठ घराना इसी योग्य था कि इस में महात्मा बुद्ध से जन्म ग्रहण करें। बुद्धदेव क्षत्रिय अर्थात् योद्धा-जाति से थे इसलिये अपने यौवन काल तक योद्धाओं के से कार्य करने योग्य गुण सम्पादन करते रहे और जब अन्त में उन्होंने धार्मिक जीवन स्वीकार किया तो अपने पुराने प्रसिद्ध घराने के नाम से शाक्य मुनि या अथवा गौतम कहलाये थे। इनके पिता ने इन का नाम सिद्धार्थ वा सर्वार्थसिद्ध रक्खा था। इन का यह नाम तब तक रहा जब तक कि युवराज थे।

गर्भवती होने पर प्रसव समय के निकट महारानी मायादेवी अपनी मातामही के लुम्बिनी* नामक उपवन में चली गईं। वहाँ पर उन के गर्भ से उत्तराषाढ़ की

---

* मातामही लुम्बिणी या लुम्बिनी के नाम से यह उपवन भी लुम्बिणी नाम से प्रसिद्ध हुआ। लुम्बिणी उपवन कपिलवस्तु के २४ मील उत्तर पश्चिम था। ह्यूनत्सेङ्ग इस स्थान पर गया था।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

तीसरी तारीख, या जैसा कुछ ग्रन्थ कहते हैं, वैशाख की १५ वीं को बालक सिद्धार्थ का जन्म हुआ। जिस समय सिद्धार्थ गर्भ में थे मायादेवी ने बड़े कड़े व्रत किये थे, इस कारण वह बहुत निर्बल हो गई थीं। ब्राह्मण पंडितों ने यह भविष्य वाणी की थी, कि होने वाला बालक योगी होगा, और भिक्षा वृत्यादि से जीवन निर्वाह करता हुआ मारा मारा फिरेगा। इस कारण उन का दिल टूट गया था। वह अपने बच्चे को माता को त्याग कर भीख मांगते हुए मारा मारा फिरते हुए नहीं देख सकतीं थीं। इन कारणों से सिद्धार्थ को जन्म देने के सात दिन बाद वह परलोकवासिनी हुईं। मातारहीन बच्चा मायादेवी की बहिन और सौत प्रजापति गौतमी के सुपुर्द हुआ। यह प्रजापति गौतमी सिद्धार्थ के बुद्ध होने पर उस के बड़े से बड़े भक्त शिष्यों में से एक थीं।

बालक अपनी माता सदृश ही सुन्दर था, और ब्राह्मण पण्डित असित ने, जो पुराने देवमन्दिर में लेजाने के कर्त्तव्य पर नियुक्त था, कहा, कि उस के चक्रवर्ती होने के ३२ मुख्य लक्षण हैं, और ८० दूसरे। कुछ हो, सिद्धार्थ चक्रवर्ती राजा नहीं तो चक्रवर्ती धर्माचार्य्य हुए। जब वह पाठशाला भेजे गये, उन्हों ने अपने गुरुजनों से भी अधिक प्रतिभा दिखाई। उन में से एक का नाम विश्वामित्र था, सिद्धार्थ उसी की शिक्षा में अधिक रक्खे गये थे, उस ने कुछ दिन पीछे कह दिया कि अब मेरे पास और अधिक कुछ भी सिखाने को नहीं है। अपनी उम्र वाले सहपाठियों के साथ यह बाल्यावस्था में खेल कूद में भाग नहीं लेते थे; उस समय भी वे उच्चतर

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

विचारों में मग्न दिखाई पड़ते थे । मनन करने के लिये वह प्रायः अलग रह कर एकान्त सेवन करते थे । एक दिन जब वे अपने साथियों के साथ ग्राम्यक्षेत्र देखने गये तो अकेले एक जंगल में घूमते फिरते चले गये । वहां वे कई घंटे रहे । कोई नहीं जान सका, कि कहां गये । शुद्धोदन बड़े चिन्तित हुए, और स्वयं ढूंढने को निकले । उन्हों ने सिद्धार्थ को जंगल में जम्बू वृक्ष की छाया में ध्यान में अत्यन्त निमग्न पाया ।

अब युवक राजकुमार के विवाह का समय निकट आ पहुंचा । शाक्य लोगों में से वृद्ध पुरुषों को ब्राह्मण पंडितों की यह भविष्य वाणी खूब याद थी कि राज-मुकुटकी अपेक्षा सिद्धार्थ योग-भस्म अधिक पसन्द करेगा । इस कारण उन लोगों ने राजवंश की वृद्धि के लिये राजकुमार के शीघ्र ही व्याह करने की प्रार्थना की । विवाह से नवयुवक को सिंहासन से चपेटने की उन्हें आशा थी । राजा सिद्धार्थ के विचारों से खूब जानकारी रखते थे । वे स्वयं उन से इस बात के छेड़ने का साहस न कर सके । उन्हों ने वृद्ध पुरुषों को बात चीत करने के लिये कहा । सिद्धार्थ ने, जोकि इन्द्रिय के बुरे प्रभावों से विष, अग्नि या तलवार की अपेक्षा अधिक डरते थे, सोचने विचारने के लिये सात दिन का समय चाहा । खूब सोचने पर प्रार्थना स्वीकार की । उन्होंने विचार किया कि पूर्व ऋषियोंने भी व्याह किये हैं, और उन के कर्त्तव्य में रुकावट नहीं डाल सका तो यह मेरे शान्त अध्ययन, ध्यान और मननमें भी विघ्न नहीं डाल सकता ।" इस तरह सोच विचार करने के बाद उन्होंने एक शर्त

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पर व्याह करना स्वीकार किया कि "मेरे विवाह के लिये जो स्त्री ठीक की जावे, वह नीचहृदया या अशुद्ध न हो। यदि वह वैश्य या शूद्र कन्या भी होतो कुछ हर्ज नहीं। मैं उसे उसी प्रसन्नता के साथ ग्रहण करूंगा जैसी ब्राह्मण या क्षत्रिय कन्या को। उस में मेरी इच्छानुसार गुण अवश्य होने चाहिये।" सिद्धार्थ जिन जिन गुणों को अपनी अर्द्धांङ्गिनी में चाहते थे उनको उन्होंने एक लम्बी सूची तय्यार की, और वृद्ध पुरुषों के हाथों दी कि उन लोगों को मनचाही दुलहिन ढूंढने में सहायता मिले।

अब राजपुरोहितने अपना काम आरंभ किया। वह इधर उधर आवश्यक लड़की की खोज करने लगा। नवयुवतियोंमें से सिद्धार्थके लिये योग्य जोड़ी ढूंढने लगा। सिद्धार्थ ने गुणों की जो सूची तय्यार की थी उस के अनुकूल योग्य कन्या का मिलना कठिन हो गया। अन्त में एक कुमारी में सब अभिलषित गुण पाये गये। उस ने पुरोहित से सिद्धार्थ की पत्नी होने की प्रार्थना की। निदान वह बहुत सी योग्य और सुन्दर सखियों के साथ सिद्धार्थ के यहां बुलाने पर गई। युवक गौतम ने उसे पसन्द किया और शुद्धोदन ने भी इस सम्बन्ध को स्वीकार कर लिया परन्तु इस लड़की का पिता, जो शाक्य घराने का था और जिस का नाम दण्डपाणि था, इस सिलवाड़ के विवाह से सन्तुष्ट नहीं हुआ। वह सिद्धार्थ को आलसी, निरुद्यमी, और एकान्त-सेवी समझता था। उसका विचार था कि गौतम में शाक्य गुणों की हीनता है, क्षत्रियोचित पराक्रम का अभाव है। दण्डपाणि ने स्पष्ट कह दिया, "पूर्व इस के कि सिद्धार्थ

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मेरी कन्या का पाणिग्रहण करे, उसे सब प्रकार की विद्या में अपने को सिद्धहस्त प्रमाणित करना पड़ेगा।" उस ने कुछ क्रोध पूर्वक यह भी कहा कि "राजकुमार महलों में आलस को गोद में खेलता है, परन्तु हमारी जाति का यह नियम है कि पुत्रियां केवल उन्हीं लोगों को दीजावें जो मर्दाना कामों में निपुण और अभ्यस्त हों, न कि उन को जो शस्त्र विद्या से अपरचित हों। इस कुमार ने कभी तलवार चलाना, मुष्टि प्रहार, धनुष को की प्रत्यञ्चा को चढ़ाना, मल्ल विद्या, और युद्ध शास्त्र नहीं सीखा है, तो फिर मैं कैसे एक ऐसे अयोग्य वर को अपनी प्यारी कन्या सौंप दूंगा?"

अब राजकुमार सिद्धार्थ उन गुणों के दिखाने को विवश हुए जो स्वयम्वर के लिये आवश्यक थे। स्वयंवर का यज्ञ आरम्भ हुआ। ५०० नवयुवा शाक्य वीर, जो शस्त्र संचालन में प्रसिद्धि प्राप्त कर चुके थे, एकत्रित हुए, और सुन्दर राजकुमारी जिसका नाम गोपा था जेता की अर्द्धांङ्गिनी होने की प्रतिज्ञा पर वहां उपस्थित हुई। राजकुमार सिद्धार्थ ने बहुत सुगमता से अपने को उन शाक्यों से बढ़ा चढ़ा सिद्ध कर दिखाया। उसके प्रतिस्पर्द्धी मुंह बाए रह गये। यह स्वयम्वर की परीक्षा दण्डपाणि ने बहुत सी विद्याओं में ली थी। सिद्धार्थ ने लेखन विद्या, गणित, व्याकरण, तर्क, न्याय, और वेद शास्त्र में अपने प्रतियोगियों से तो सर्वोपरि प्रमाणित किया ही, किन्तु जितने वहां परीक्षा के परीक्षक थे उन से भी अपना पद ऊंचा सिद्ध कर दिया। वे अपने परीक्षकों से भी अधिक विद्वान् और बढ़े चढ़े थे, वे लोग इनकी विद्यायोग्यता देख

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

दङ्ग रह गये। अब मानसिक अभ्यासों के पीछे शारीरिक व्यायामों का नम्बर आया। उन्होंने अपने सब साथियों को कूदने, फांदने, तैरने, दौड़ने, धनुष खींचने और दूसरे कामोंमें हरा दिया। इन बातोंमें उनकी जानकारी, और उनका अभ्यास पूर्णतः सिद्ध हुआ। उनके प्रतिद्वन्दियों में उनके दो चचेरे भाई भी थे। एक का नाम आनन्द था जो उनके बुद्धत्व पानेपर उनका एक बहुत बड़ा और पक्का भक्त शिष्य हुआ, और दूसरे का नाम देवदत्त था जो स्वयंवर में हार जाने के कारण बड़ा क्रोधित था, और अन्त में सिद्धार्थ का विकट शत्रु हो गया था। सिद्धार्थ को अपनी विजय का पारितोषिक सुन्दरी गोपा के रूप में मिला। गोपा भी जैसा अपने को समझती थी उसी योग्य पद पर पहुंचगई और युवराज्ञी पद से विभूषित हुई। उसने घर के लोगों के रोकने पर भी महल वालों के सामने अपना मुख ढांपना बन्द कर दिया। इस के लिये उसने प्रमाण दिया कि "वे जो धर्मात्मा हैं, चाहे बैठे हों, खड़े हों और फिरते हों सदा दर्शनीय हैं। एक मूल्यवान् दमदमाता हुआ हीरा झंडे की चोटी से और भी अधिक उज्ज्वल दिखाई पड़ता है। जो स्त्रियां अपने मन को अपने वशमें रखती हैं और जितेन्द्रिय हैं वे अपने पतिसे सन्तुष्ट रहती हैं, परपुरुष को तुच्छ समझती हैं और उस का विचार तक नहीं करतीं, उन्हें मुंह ढांपने और पर्दा डालने की कोई आवश्यकता नहीं है। वे तो सूर्य और चन्द्र के समान स्वयं उज्ज्वल हैं। श्रेष्ठ और पवित्रात्मा ऋषि, और दूसरे देवगण भी मेरे विचारों को जानते हैं, और मेरे चरित्र, धर्म, सत्य और नम्रता को खूब समझते

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

हैं तो फिर मुझे मुंह ढांपने की क्या आवश्यकता है ?"

ऐसे प्रेम और ऐसी पवित्रता के साथ यद्यपि इस जोड़ी का जीवन सुख पूर्वक व्यतीत हो रहा था, तथापि सिद्धार्थने जिन विचारोंका पहलेही से निश्चय कर लिया था उन्हें वे न बदल सके। वे अपने विशाल महल में हर तरहके भोग विलासके सामानों से घिरे हुए थे, और आमोद प्रमोदकी किसी वस्तु की कमी न थी परन्तु जिस पवित्र जीवन का उन्होंने दृढ़ संकल्प किया था उसे वे किसी तरह भी नहीं छोड़ सकते थे। एक दिन उन्होंने अपने मन में बड़ी उदासीनता के साथ कहा, "यह सम्पूर्ण संसार बुढ़ापे और बीमारी के दुःखों से परिपूर्ण हो रहा है। मृत्यु की आगसे निगला जारहा है और हर तरह के सहारेसे वञ्चित है। मनुष्य का जीवन आकाश में बिजली की चमक के समान है, जैसे एक झरना पहाड़ से नीचे झड़ाके के साथ बहता है उसी तरह यह जीवन विना किसी रोक टोक के बहुत जल्द चला जाता है। इतना जल्दी जाता है कि कोई रोक नहीं सकता। इस संसार में तृष्णा से और अज्ञान से जीव बुरे मार्गों में जा रहे हैं। जिस तरह कुम्हार का चक्र बार बार घूमता है, उसी तरह अज्ञान पुरुष भ्रमते फिरते हैं। तृष्णा की प्रकृति, जो कि भय और दुःख से मिली हुई है, सब कष्टों की मूल है। इससे तलवारकी तीक्ष्ण धार से भी अधिक डरना चाहिये और विषैले वृक्ष के पत्ते से अधिक भयङ्कर समझना चाहिये। यह छाया है, प्रतिध्वनि है, नश्वर है, स्वप्न के सदृश है, एक निस्सार और पोची कमल तार के समान है, जादू जैसी धोखेबाजी भरी हुई है, पानी के बबूले के बराबर है।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

रोग मनुष्य की शारीरिक सुन्दरता का नाश कर देता है, ज्ञानेन्द्रियों को निर्बल कर देता है, मनोवृत्तियों और बल का ह्रास कर देता है और धन व कुशलता का गला घोंट डालता है। इस से बार बार मौत होती है और आवागमन का पचड़ा लगा रहता है। प्रत्येक जीव चाहे वह कितना ही प्यारा, अत्यन्त सुन्दर और महा ममतापूर्ण हो परन्तु सदा के लिये आंखों की ओट हो जाता है। तब मनुष्य असहाय, अकेला और निराश्रित मारा मारा फिरता है। उसके पास केवल उसके सांसारिक कर्मों का फल रह जाता है और कुछ भी नहीं।"

इसी तरह और और निम्न लिखित उदासीनता के वाक्य वह प्रायः कहा करता था:—

सब संगठित वस्तुओं का नाश होगा। जो कुछ गठित है वह नाश्य है, यह मिट्टीके बासन के समान है जो थोड़े से धक्के से टुकड़े टुकड़े हो जावेगा, उधार के धन के बराबर है, रेत के बने हुए घर के या नदी के रेतीले किनारेके सदृश है। सम्पूर्ण गठित वस्तुऐं कार्य और कारण में परिणत हैं। एक दूसरे में इस तरह छिदी हुई हैं जिस तरह बीज में अंकुर, यद्यपि अंकुर बीज नहीं है। ज्ञानी और बुद्धिमान् दिखाऊ सूरतों के झंझट में नहीं फंसते। उदाहरण के लिये वह लकड़ी जो रगड़ी जाती है, और वह जिस से वह रगड़ जाती है और हाथों का काम, ऐसी तीन बातें हैं जिन से आग पैदा हो जाती है परन्तु वह आग विलुप्त हो जाती है और वह ऋषि जो उसे व्यर्थ ही ढूंढ़ता है, अचम्भा करता हुआ कहता है यह कहां से आई और कहां चली गई? जब जीभ होठों या तालू या

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

कण्ठ पर बल मारती है, तब शब्द निकलते हैं । और भाषा मस्तिष्क के सहारे बन जाती है परन्तु सम्पूर्ण बात चीत केवल प्रतिध्वनि मात्र है और भाषा का स्वयं अस्तित्व नहीं है । फिर सितार से जो ध्वनि निकलती है उस के विषय में ऋषि अचम्भित हो कर कहता है कि यह कहां से आई और कहां चली गई ?

इस तरह सब सूरतें कार्य और कारण से पैदा हुई हैं और योगी या ऋषि को ध्यान करने पर जल्दी मालूम हो जाता है, कि सूरतें कुछ भी नहीं हैं और यह अकेला कुछ नहीं का तत्व ही अपरिवर्त्तनीय है । जो वस्तुऐं हमें अपनी इन्द्रियों के द्वारा मालूम होती हैं वे असल में हैं ही नहीं, उनमें स्थिरता नहीं है और यह स्थिरता ही है जो धर्म का मुख्य लक्षण है ।

यह धर्म जो संसार को बचाने के लिये है, मैं समझता हूं और मेरा कर्त्तव्य है कि मैं इसे मनुष्यों पर प्रगट कर दूं । मैंने कई बार सोचा है कि जब मैं पूरा ज्ञान पाजाऊंगा, सब मनुष्यों को इकट्ठा करूंगा और उन्हें अमरत्व के द्वार में जाने का ढंग बतलाऊंगा । भवसागर के चौड़े समुद्र से उबार कर उन्हें सन्तोष और सहिष्णुता की पृथ्वी पर स्थित करूंगा । इन्द्रियों के कष्टप्रद विचारोंसे स्वतन्त्र करके मैं उन्हें शान्ति में स्थिर करूंगा । जीव जो अज्ञान के गहरे अंधेरे में सड़ रहे हैं उन्हें धर्म का प्रकाश दिखाने के लिये उन्हें नेत्र दूंगा जिन से वे पदार्थों को जैसे वे सचमुच हैं देखलें, मैं उन्हें निर्मल ज्ञान की सुन्दर चमक भेंट करूंगा, उन्हें अपवित्रता और खुटाई से रहित धर्म के चक्षु दूंगा ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

ये गम्भीर विचार युवक सिद्धार्थ को उस के स्वप्नों तक में सताते थे। एक दिन उसने सुना कि स्वप्न में कोई उस से कह रहा है कि "जो संसार पर प्रगट करना निश्चित कर चुका है उस का समय आ चुका है। जो स्वतन्त्र नहीं है वह दूसरों को स्वतन्त्र नहीं कर सकता। अन्धा अन्धों को मार्ग नहीं बतला सकता, जो उद्धार पा गया है वही दूसरों का उद्धार कर सकता है, जिस के आंखें हैं वह उन लोगों को मार्ग बता सकता है जो उसे नहीं जानते। उन लोगों को, चाहे वे कोई हों, जो सांसारिक तृष्णाओं से नष्ट हो रहे हैं, अपने घरों से चिपटे हुए हैं और अपने धन, आत्मज और पत्नी में रत रहते हैं उन्हें ठीक शिक्षा दो और उन में ऐसी इच्छा उत्पन्न करो कि वे संसार में भ्रमण करते हुए साधु सन्तों का पवित्र जीवन धारण करें।"

इसी बीच में राजा शुद्धोदन को इन बातों का कुछ सन्देह हो गया। वह उन बातों को ताड़ने लगा जो उसके लड़के के हृदय में उत्पन्न हो कर उस को बेचैन कर रही थीं। इस समय राजा की ममता और चिन्ता दुगुनी बढ़ गई। उसने सिद्धार्थ के लिये तीन नये महल बनवाये। एक बसन्त ऋतु के लिये, दूसरा गर्मियों के लिये और तीसरा जाड़ों के लिये। राजा डरता था कि कहीं राजकुमार सांसारिक दुःखों से घबड़ा कर निकल न जाये इसलिये उसने अत्यन्त कड़ी आज्ञा दे रक्खी थी, कि उस की प्रत्येक गति-मति पर दृष्टि रक्खी जावे। लेकिन यह सब होशियारी और सावधानी विफल हुई। जिन की कभी आशा न थी, जिन का कभी विचार

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

भी न था और जो विचित्र बातें थीं उन सबों ने मिल कर राजकुमार के निश्चय को और भी बढ़ता हुआ बल दिया। इन से सिद्धार्थ की दृढ़ता और भी दृढ़ हो गई।

यह एक दिन बहुत से लोगों के साथ लुम्बिनी उपवन को रथ में बैठ कर नगर के पूर्वी फाटक से जा रहे थे। यह उपवन इन्हें जन्म ही से प्यारा था क्योंकि यहां पैदा हुए थे। इस जगह जो इन्होंने बाललीला की थी उस की सुधि से यह उपवन और भी अधिक प्यारा हो गया था।

रास्ते में इन्हें एक बुड्ढा आदमी मिला। उस के बदन भर में झुर्रियां थीं और उसकी नसें और पुट्ठे ढीली रस्सियों की तरह मालूम होते थे, दांत बिलकुल हिलते थे, कठिनाई से दो चार घरीते और बिगड़ते शब्द बोल सकता था। ऐसा निर्बल था कि शक्तिहीन हाथ में लकड़ी का सहारा होने पर भी पग पग पर गिरा चाहता था और उसकी झुकी कमर और सूखे अंग पत्ते की तरह हिल रहे थे।

राजकुमार अपने सारथी से बोले "यह आदमी कौन है? इसका क़द ठिगना है, बल से हीन है, इस का मांस और रक्त सूख गया है, इस के पट्ठे खाल के थैले में लटक रहे हैं, बाल सफेद हैं, दांत हिलते हैं, और शरीर निकम्मा हो गया है, बिचारा लकड़ी पर झुका हुआ बड़ी कठिनाइयों और क्लेश के साथ पग पग पर गिरता पड़ता अपने को घसीटे लिये जा रहा है। क्या इस के घराने ही को यह विशेषता है? या यह नियम सम्पूर्ण मनुष्यों के लिये है?"

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सारथी ने कहा, "कुमार, यह पुरुष बुढ़ापे के कारण इतना निर्बल हो गया है, इस की सब इन्द्रियां अशक्त हो गई हैं, दुःखों ने इस के बल का नाश कर दिया है, इसके सम्बन्धियों ने इस से किनारा कर लिया है ; और इस का कोई रक्षक नहीं है, प्रत्येक काम में निकम्मा होने के कारण, यह जङ्गल में पड़ी हुई लकड़ी की तरह फेंक दिया गया है। यह कुछ इस के घराने की विशेषता नहीं है। जितने जीव हैं उन सब का यौवन बुढ़ापे से विजित हो जाता है, आप के माता पिता आदि सम्पूर्ण सम्बन्धी और बन्धु वर्ग का भी इसी तरह अन्त होना। यह सब के लिये स्वाभाविक बात है।"

यह सुनकर सिद्धार्थ ने कहा "अज्ञान और निर्बल पुरुष में दूरदर्शिता नहीं होती, इसी कारण वह जवानी के मद में चूर हो कर घमण्ड करता है और आने वाले बुढ़ापे का विचार नहीं रखता। अब मैं आगे नहीं जाऊंगा। रथवान तुरन्त रथ को लौटाओ। मैं भी बुढ़ापे से आक्रमणित होने वाला हूं, फिर सुख भोग का क्या अर्थ ?" लुम्बिनी गये बिना ही राजकुमार लौट आये।

फिर एक दूसरे दिन बहुत से सखियों के साथ वह आनन्द उद्यान की तरफ़ दक्षिणी फाटक से जा रहे थे कि वहां उन्होंने एक ज्वरपीड़ित, जीर्ण, क्षीण, मलीन और और बन्धुहीन बूढ़े को आह भरते मौत की बाट जोहते हुए पाया। अपने उसी रथवान से प्रश्न कर यथोचित उत्तर पाने पर कहा:—

" तब निरोगता केवल एक स्वप्न है और रोगों की अशक्त यातना से कोई बच नहीं सकता है। यह ज्ञानी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पुरुष कहां है, जो इसे देख कर आगे के सुख और भोग विलास का अनुमान करे ?" इस तरह बिना आगे गये ही राजकुमार फिर नगर को लौट आये।

फिर एक दूसरे दिन वह पश्चिमी फाटक से आनन्द उद्यान को जा रहे थे कि मार्ग में उन्होंने एक मुर्दे को काठी पर जाते देखा, ऊपर कपड़ा पड़ा हुआ था, उस के साथ रोते हुए बान्धव जा रहे थे, अपनी चीत्कारों से, बाल खींचने से, मस्तक पर धूल डालने से, और छाती पीट पीट कर चिल्लाने से उन लोगों ने यह दृश्य और भी अधिक करुणापूर्ण कर रक्खा था। राजकुमार ने अपने रथवान से कहा "हा! शोक! उस जवानी पर जिसे बुढ़ापा नष्ट कर डालता है, हा! शोक! उस स्वास्थ्य और आरोग्यता पर जिसे रोग मटियामेट कर डालता है। हा! शोक! उस जीवन पर जो मनुष्य को इतना थोड़ा समय देता है। क्या अच्छा होता है यदि बुढ़ापा, रोग, या मृत्यु एक भी अस्तित्व न रखता होता। अहा! क्या अच्छा हो यदि बुढ़ापा, रोग और मौत सदा के लिये नष्ट कर दिये जाते।"

इस तरह अपना विचार प्रगट कर कुमार ने कहा "घर लौट चलो, मैं स्वतन्त्रता की प्राप्ति का उपाय अवश्य सोचूंगा।"

अन्तिम संयोग* ने सिद्धार्थ की सब चिन्ता और हिचकिचाहट दूर कर दी। अन्त में एक दिन वह आ-

---

*ये भिन्न २ संयोग बौद्ध पुराणों में प्रसिद्ध हैं। जहां जहां सिद्धार्थ का इन संयोग से मिलाप हुआ वहां वहां सम्राट् अशोक महाराज ने स्तूप और विहार बनवाये थे। विक्रमी सम्वत् की सातवीं शताब्दी के आदि में हुएनसैङ्ग ने इन के खंडहर देखे थे।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

नन्द उद्यान के लिये नगर के उत्तरीय फाटक से जा रहे थे। उस जगह उन्हों ने एक शान्त, शुद्ध और गम्भीर प्रकृत ब्रह्मचारी भिक्षु को देखा उस की आखें नीचे को थीं, इधर उधर चञ्चलता से न डुलाता था और बड़े निस्पृह भाव के साथ अपने लबादे को पहने कमण्डल लिये जारहा था।

राजकुमार ने पूछा "यह कौन है ?"

रथवान ने उत्तर दिया "यह एक भिक्षु है। इसने सम्पूर्ण तृष्णामय इच्छाओं को त्याग दिया है और बहुत पवित्र जीवन व्यतीत कर रहा है। यह जितेन्द्रिय होने का प्रयत्न करता है और विरक्त साधु हो गया है। अब न तो इस में इच्छा का प्रचण्ड स्रोतः है और न इस में ईर्ष्या है, भिक्षा के सहारे रहता है।"

सिद्धार्थ बोला "ठीक कहा, बहुत ठीक है। ऋषियों ने पहले ही से इस उत्तम जीवन का आदर्श उपस्थित कर दिया है। यही मेरा आश्रय होगा और यही दूसरों का भी। यही जीवन सुख और शान्ति मय है।"

इस के बाद युवक सिद्धार्थ अपने घर बिना लुम्बिनी गये ही एक निश्चित विचार पर दृढ़ीभूत हो कर लौट आये।

अब सिद्धार्थ का हार्दिक भाव बहुत दिनों तक न छिपा रहा। राजा को किसी ने शीघ्र सब हाल सुना दिया, और उन्होंने और भी अधिक कड़ाई के साथ पहरा और देख रेख का प्रबन्ध कर दिया। हर जगह प्रहरी बड़ी सावधानी से नियुक्त किये गये, सब फाटकों पर प्रहरी रहने लगे, और राजा के सेवक सब दिन रात बड़ी चिन्ता में रहने लगे। पहले पहले सिद्धार्थ ने

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

चालाकी से निकल भागना घृणास्पद समझा, और इसे किसी आवश्यकता के समय के लिये छोड़ दिया। उन्हें अपनी पत्नी गोपा पर बहुत विश्वास था। एक रात स्वप्न देखते देखते ये चौंक पड़े, ऐसा बहुधा हुआ करता था, गोपा ने इन स्वप्नों का कारण पूछा। उन्होंने साफ़ साफ़ बता दिया, और अपना भेद भी समझा दिया। भावी विछोह की चिन्ता में वह घबड़ाई परन्तु उन्होंने समझा बुझाकर शान्त किया। उसी रात को वे अपने पिता के पास गये, और बहुत ही आदर सन्मान और सङ्कोच के साथ बोले "महाराज अब वह समय आगया जिस समय मुझे पृथ्वी पर स्पष्टतया प्रगट होना चाहिये, मैं विनय करता हूं, कृपया विरोध मत कीजिये, और उसके कारण दुःखित भी न हूजिये। हे महाराज! कृपा कर के मुझे छुट्टी दो, अपने कुटुम्ब और प्रजा से विदा होने की आज्ञा दो।"

राजा की आंखों में आंसू आगये, और भरे हुए गले से उत्तर दिया, "बेटा तुम्हारे प्रयोजन के सिद्ध करने के लिये कहो मैं क्या कर सकता हूं?" सिद्धार्थ ने नम्रता पूर्वक कहा "मुझे चार वस्तुओं की इच्छा है जिन्हें मैं आप से मांगता हूं, और आशा है कि आप स्वीकार करेंगे। यदि आप इन्हें मुझे दे सकें, तो मुझे सदा अपने घर में देखोगे, और मैं कभी आप से अलग न होऊंगा। महाराज इन बातोंकी मुझे दीजिये, कि बुढ़ापा मुझे कभी न दबोचे, मैं सदा जवान और स्फूर्तिमय तेजस्वी रहूं, रोग का आक्रमण मेरे ऊपर न हो, और मेरा जीवन न तो कभी अंत होवे, और न मुझको कर फीका पड़े।"

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

इन बातों को सुन कर राजा को बड़ा दुःख हुआ। उन्होंने कठिनाई से कलेजा थाम कर कहा "प्यारे बेटे, तुम जो कुछ चाहते हो वह मिल नहीं सकता, मैं असमर्थ हूं। यहां तक कि ऋषि लोग भी इन से छुटकारा नहीं पा सकते। बुढ़ापा, बीमारी, ह्रास और मृत्यु सब के भाग्य में साधारणतः एक से हैं।"

उस विचारशील नवयुवा ने फिर कहा "यदि मैं वृद्धावस्था, रोग, मृत्यु और क्षीणता से नहीं बच सकता और यदि महाराज, आप मुझे उपरोक्त बातें नहीं दे सकते तो कृपा करके कम से कम एक वस्तु, जो कम महत्व की नहीं है, तो देही दीजिये कि मैं मरने के बाद आवागमन के पचड़ों से उद्धार पा जाऊं"।

अब राजा ने समझ लिया कि ऐसे दृढ़ विचार का विरोध करना व्यर्थ प्रयत्न है, प्रातः ही उन्होंने सम्पूर्ण शाक्यों को बुला कर दरबार किया और वह शोकप्रद समाचार सुनाया। उन लोगों ने राजकुमार के भागने का बलात् रोकना निश्चित किया। उन लोगों ने स्वयं महल के फाटकों पर पहरा देने का भार अपने ऊपर लिया। युवा पुरुष पहरे वालों का काम करने लगे। और जो वृद्ध थे उन्होंने यह सूचना नगर में फैला दी कि सब लोग आने वाले समय के लिये तय्यार हो जावें। राजा शुद्धोदन, स्वयं ५०० चुने हुए शाक्य क्षत्रियों के साथ महल के बड़े फाटक पर जाकर डट गये। राजा के तीन भाई, युवा सिद्धार्थ के चाचे, नगर के अन्य फाटकों पर जा कर अड़ गये। और शाक्य लोगों का एक सरदार नगर के केन्द्र में आकर बस गया, और देखने लगा, कि राजाज्ञा नियम

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

और पाबन्दी के साथ बर्ती जाती है या नहीं। महल के भीतर भी सिद्धार्थ की माता की बहिन प्रजापति गौतमी ने स्त्रियों का कड़ा पहरा लगाया और स्वयं उन का निरीक्षण करने लगी और नीचे का वचन कह कह कर सब को पहरे के लिये उत्साहित करने लगी।

"राजमहल और देश छोड़ कर यदि कुमार सन्तों की तरह निकल कर चला गया तो महल भर दुःखसागर में डूब जावेगा, और यह राजघराना, जो इतना पुराना है, बुरी तरह से अंत हो जावेगा।"

ये सब प्रयत्न व्यर्थ सिद्ध हुए, एक रात जब देर तक पहरा देने के सबब सब प्रहरी नींद की चपेट में आगये तो युवक राजकुमार ने अपने रथवान चाण्डक को अपना घोड़ा कण्ठक सजने को कहा, और नगर से सब की आंख बचा कर निकल भागने में सफलीभूत हुए। स्वामिभक्त अनुचर चांडक ने कुमार की आज्ञा पालन करने के पहले अश्रूपूर्ण नेत्रों से बहुत समझाया और कहा, "कुमार, इस खिले हुए गौरवपूर्ण यौवन को कष्टपूर्ण विरक्त जीवन में नष्ट करने को क्यों उतारू हुए हो? ये विशाल सुन्दर महल सुख, और आनन्द, विलासके सदन हैं, इन्हें मत त्यागो।" परन्तु दृढ़प्रतिज्ञ सिद्धार्थ ने अपने प्यारे रथवान की एक न सुनी, किन्तु उसे यह उत्तर दिया:—

"हे चाण्डक, मैं अच्छी तरह जानता हूं। सांसारिक इच्छाएँ सब गुणों की मिट्टी पलीद करदेती हैं; मैं इन्हें खूब जानता हूं, अब मुझे इन से अधिक सुख नहीं मिल सकता; ऋषि लोग इन्हें सांप के फन की तरह त्याग देते हैं, और अपवित्र बर्तन की तरह सदा के लिये

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

इन से हाथ धो बैठते हैं। मेरे ऊपर यकायक वज्रपात हो जावे सो मुझे पसन्द है, सैकड़ों बाण यकायक आकर शरीर भेद दें सो पसन्द है, जलते हुए लाल भाले मेरे ऊपर गिरें सो पसन्द है, जलते हुए पर्वत से अग्निमय चट्टानें अभी आकर मुझे चूर चूर करदें सो भी पसन्द है, परन्तु फिर से इस पृथ्वी पर जन्म लेना स्वीकार नहीं, फिर मैं कैसे फिर कर गृहस्थ आश्रम की इच्छाओं और चिन्ताओं में जाकर फँस जाऊं ?"

आधी रात थी जिस समय सिद्धार्थ ने कपिलवस्तु छोड़ा। सिद्धार्थ पुष्य नक्षत्र में उत्पन्न हुए थे। इस समय भी इसी का उदय था। सब प्यारी प्यारी वस्तुओं को त्यागने के समय उस नवयुवा का हृदय एक पल के लिये कुछ मन्द हुआ और फिर अपने कपिलवस्तु की तरफ़ एक दृष्टि डाल कर धीमे स्वर से अपने आप बोले:—

"मैं तब तक कपिल नगर को नहीं लौटूंगा जब तक जन्म मरण से बचने की औषधि न ढूंढ़ लूंगा; मैं तब तक फिर कर न आऊंगा जब तक उस उच्चस्थान और पवित्र ज्ञान को न पा जाऊंगा जो अवस्था और मृत्यु से परे है। जब मैं लौटूंगा तो कपिल नगर भी नींद में मग्न न रह कर, आगतावस्था को प्राप्त होगा।" और सचमुच १२ साल तक न तो उन्होंने अपने पिता को देखा और न कपिलवस्तु को। जब आये तब नये धर्म में सब को पलट दिया।

सिद्धार्थ रात भर घोड़े पर चढ़े चले गये; शाक्य और कोलिय लोगों के देश पीछे छोड़ते हुए और मल्ल लोगों के प्रदेशको त्यागते हुए वे मैनेय नगर से होते हुए आगे निकल

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

गये। सूर्य निकलने तक वह १८ कोस निकल आये थे। यहां पर वह घोड़े से कूद पड़े, लगाम चाण्डक के हाथ में देकर, सब आभूषण और रत्न उतार उसके हाथ में दे, उसे विदा किया।

ललित विस्तर ग्रन्थ, जिस से ये सब बातें ली गई हैं, कहता है कि जहां सिद्धार्थ ने चाण्डक को विदा किया वहां एक चैत्य—एक प्रकार का पवित्र स्तूप—खड़ा किया गया था और, वह ग्रन्थकार के समय तक चाण्डक निवर्त्तन के नाम से प्रसिद्ध था"। ह्यूनसैङ्ग ने भी इस स्तूप को देखा था। वह कहता है, "यह स्तूप सम्राट् अशोक ने एक जंगल की नुक्कड़ पर बनवाया था, जहां से सिद्धार्थ अवश्य निकले होंगे। यह कुशीनगर को जाने वाली राह पर बना था। इस के ५१ साल बाद इन्हों ने कुशीनगर में निर्वाण पाया था, इस से सिद्ध होता है कि घर से भागने के समय सिद्धार्थ की आयु २९ वर्ष की थी, क्योंकि वे ८० वर्ष की अवस्था में निर्वाण पद को प्राप्त हुए थे।

जब राजकुमार अकेले रह गये तो इन्होंने जाति और पद के शेष चिन्हों से भी छुटकारा पाया। पहले उन्होंने अपने लम्बे लम्बे बाल तलवार की धार से काट कर हवा में छितरा दिये, इस के बाद उन्हों ने अपने रेशम के राजसी वस्त्रों को एक शिकारी के पुराने मृगचर्म के वस्त्रों से बदल लिये। पहले तो शिकारी कुछ हिचकिचाया पर जब उसने देखा, कि किसी बड़े आदमी से व्यर्थ ही विरोध करना पड़ेगा तब उस ने प्रसन्नता से अपने चर्म-चोगड़े उतार कर दे दिये।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जैसे ही राजा शुद्धोदन को सिद्धार्थ का भागना मालूम हुआ, उन्होंने बहुतेरे दूत उन की खोज में भेजे परन्तु वे सब अकृतकार्य्य हुए। अपनी ढूंढ़ खोज में उन लोगों को वह शिकारी राजसी ठाठ में मिला, उसे वे लोग अवश्य हैरान और तङ्ग करते, किन्तु चाण्डक साथ था इस से वह बचगया, क्योंकि उसने यथार्थ बात बतला कर उन लोगों की कोपाग्नि शान्त कर दी। उस ने राज-कुमार के निकल भागने का सब कच्चा पक्का हाल कह सुनाया। राजा की आज्ञा के अनुसार वे लोग फिर कुमार की खोज में चल पड़ने वाले थे, परन्तु चाण्डक ने उन लोगों को समझा बुझा कर रोका। उसने कहा "तुम लोग कुमार को लौटा लाने में सफलमनोरथ न होगे। वे अपने विचार, पुरुषार्थ, और निश्चय में अत्यन्त दृढ़ हैं। कुमार ने जाते समय कहा था, " कपिलवस्तु को मैं उस समय तक नहीं लौट सकता जब तक मैं पूर्ण ज्ञान न प्राप्त कर लूंगा और बुद्ध न हो जाऊंगा। वे अपने विचार को पलटने वाले पुरुष नहीं हैं। जैसा उन्होंने कहा है वैसा ही होगा, वे अपने विचार बदलने वाले नहीं हैं।" चाण्डक ने लौट कर राजा को सब समाचार दिये। उस ने प्रजापति गौतमी को सिद्धार्थ के सब रत्नजटित आभूषण सौंपे, परन्तु उसने वे दुःखदायक सुधि दिलाने वाले आभूषण अपने पास न रख कर एक सरोवर में डाल दिये। वह तब से आभूषण-पुष्कर कहलाने लगा। सिद्धार्थ की नवयौवना पत्नी गोपा अपने पति के दृढ़ निश्चय को खूब जानती थी। वह इस दुःख-दायक वियोग के लिये पहले ही से बहुत कुछ तय्यार

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

थी, परन्तु तो भी वह उस दिन से बहुत उदास रहने लगी। चाण्डक ने उस से गौरवपूर्ण भविष्य की बातें बहुत कुछ कहीं, पर स्त्री के जलते हुए हृदय को शान्त करना कठिन है। वह प्रायः दुःखित ही रहा करती थी।

लगातार बहुत से ब्राह्मणों का आतिथ्य स्वीकार करते हुए, युवा राजकुमार अन्त में वैशाली के विशाल नगर में पहुंचे। इस समय वैदिक धर्म का प्रचण्ड दीपक टिमटिमा रहा था। इस अंधकार के समय में बहुत से अंधेर-मय सिद्धान्त प्रचलित हो गये थे। जाति का झगड़ा असली प्रयोजन से हटता हटता मूर्खता की अन्तिम श्रेणी को पहुंच गया था। नीच जाति के लोग बिलकुल अंधकार में थे, धर्म की केवल थोड़ी सी ज्योति विद्यमान थी। जैसा कि स्वाभाविक है, ब्राह्मणों की क्रमशः बढ़ती हुई प्रधानता लोगों पर असह्य भार हो रही थी। धर्म केवल नाम मात्र को रह गया था। वाममार्ग की प्रबलता थी। अधर्मसंगत बातों का बड़ा प्रचार हो रहा था। धर्म के नाम से लोगों को पाप में अधिक डूबते हुए देख कर अधर्मयुक्त सिद्धान्तों को उखाड़ने के लिये सिद्धार्थ ने दृढ़ता के साथ तय्यारी कर दी, पर शोक है कि भ्रान्ति पूर्ण कपिल ऋषि का मार्ग अनुवर्त्तन करने वाला सच्ची सिद्धार्थ भी एक पग फिसल गया और फिर ऐसा गिरा कि ईश्वर को ही भूलगया। इन का मत था कि अपने कर्म्म का फल हर दशा में मिलता है, अपने कर्म्मों के फल भोगने से कोई बच नहीं सकता इसलिये कर्म्म को प्रधानता दी। वैशाली में पहुंचने पर उन्होंने बड़े बड़े ब्राह्मण सिद्धान्तों को ढूंढ कर

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

साक्षात् किया और उन से शास्त्रों का पढ़ना आरम्भ किया, क्योंकि बिना ऐसा किये वे उन लोगों के सिद्धन्तों का खण्डन भी नहीं कर सकते थे। अन्त में उन्होंने आचार्य अलारकालाम्*[1] से भेंट की। ये बड़े बड़े विद्वान् अध्यापकों और आचार्यों में श्रेष्ठतम समझे जाते थे। इन के पास बहुत से श्रोताओं के सिवाय ३०० शिष्य भी थे। सिद्धार्थ बहुत ही सुन्दर रूपवान् थे। जब वे उपरोक्त आचार्यके आश्रममें गये तो लोग उनकी सुन्दरताकी मन ही मन में बड़ी सराहना करने लगे; विशेषतः आचार्य ने उनको बहुत ही अधिक सराहा। इसके बाद ही सिद्धार्थ की विद्वत्तासे वे ऐसे प्रसन्न हुए, कि वे उनकी विद्याकी सुन्दरता से भी बहुत अधिक प्रशंसा करने लगे। सिद्धार्थ बहुत शीघ्र इतने योग्य होगये, कि आचार्य ने उन्हें अपनी बराबरी का शिक्षक बनने को कहा, परन्तु सिद्धार्थने नम्रता पूर्वक अस्वीकार कर दिया। इस नवीन ऋषि ने अपने मन में सोचा:—

"आचार्य का यह सिद्धान्त यथार्थ स्वतन्त्रता देने वाला नहीं है। इसका अभ्यास मनुष्य जाति को दुःख से बिलकुल नहीं छुड़ा सकता। इस सिद्धान्त को यथेष्ट बनाने के लिये प्रयत्न करूंगा। केवल भूखों मरने और इन्द्रियों के जीतने से क्या होगा? इस से भी कुछ अधिक —पूरी स्वाधीनता—पाने के लिये मुझे कुछ और खोज करनी पड़ेगी।

सिद्धार्थ कुछ समय तक वैशाली में रहे, इस नगर को

---

* इस नाम में कुछ गड़बड़ मालूम होती है। अंगरेजी में "Alarkalam" लिखा है।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

छोड़ कर वह मगध देश में आये, और उसकी राजधानी राजगृहमें पहुंचे। उनके आनेसे पहले ही उनकी सुन्दरता और विद्या की ख्याति यहां आपहुंची थी। ऐसी सुन्दरता को भिक्षु के दुःखपूर्ण लिबास में देख कर लोग अचम्भे में आगये और उन्हें चारों तरफ से घेरने लगे। उस दिन गलियों में इतनी भीड़ हुई, कि नीची जाति के लोगों ने मद्यपान करना छोड़ दिया, बाज़ार बन्द होगये और क्रय विक्रय बंद होगया, क्योंकि सब कोई उस श्रेष्ठ भिक्षु त्यागी महात्मा को निहारने की लालसा रखते थे। स्वयं राजा बिम्बसार उन्हें देख कर उनके आतंक में आगया था। जब वे उस के महल की खिड़की के नीचे से उत्साही और जोशीले लोगों में होकर जारहे थे तो उस समय राजा ने भी स्वागतसूचक शब्द कहे। सिद्धार्थ का निवास स्थान पाण्डव-गिरि की ढाल पर था। बिम्बसार ने उसे अपनी आखों से वहां तक पहुंचाया और आदर प्रदर्शित करने के लिये, बहुत से सरदारों के साथ उन के पास स्वयं गये। बिम्बसार सिद्धार्थ की ही आयु का था। सिद्धार्थ जिस विचित्र दशा में थे उसका बिम्बसार के हृदय पर बड़ा असर हुआ, उन के मधुर भाषण और शान्त स्वभाव ने उसे मोह लिया। उनकी धर्म्मशीलता और सद्गुणों ने बिम्बसार को लुभा लिया, और उसी समय से उसने सिद्धार्थ के सिद्धान्तों का संरक्षकत्व स्वीकार किया और मरण पर्य्यन्त उन की रक्षा करता रहा। बिम्बसार ने इस संसारत्यागी विरागी को बहुत ही चित्ताकर्षक जगहों के देने का लालच दिखा कर फिर संसार में खींचने का उद्योग किया, परन्तु निस्पृह महात्मा

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अपने दृढ़ निश्चय से किञ्चित् भी चलायमान न हुए। कुछ दिनों राजगृह में रहने के बाद वह नेरञ्जना नदी—आधुनिक फल्गू—के किनारे सांसारिक झगड़ों और झंझटों से आंख हटा कर आ गये और विरक्तों की तरह रहने लगे।

लङ्का में बड़े भारी महत्व की एक ऐतिहासिक पुस्तक महावंश नाम की है। यह पुस्तक विक्रम की पांचवीं शताब्दी में लिखी गई थी। इस का लेखक महानाम है। इस महानाम ने अत्यन्त प्राचीन बौद्ध पत्रों और चिट्ठों से इकट्ठा करके लिखा था। इस में लिखा है कि बिम्बसार बौद्ध हो गया—या ग्रन्थकार के शब्दों में विजेता के दल में मिल गया। उस में यह भी लिखा है, कि वह जब ३१ वर्ष यानी अपने राज्य काल के १६ वर्ष में था तब बौद्ध हुआ था। वह १५ साल की आयु में राजसिंहासन पर बैठा था और उसने ५२ वर्ष तक राज्य किया था। बिम्बसार का पिता राजा शुद्धोदन—सिद्धार्थ का पिता—का परम मित्र था, उन दोनों में अत्यन्त प्रीति थी। इसी कारण सिद्धार्थ और बिम्बसार में भी घनिष्ट मित्रता हो गई थी। बिम्बसार को उस के लड़के अजातशत्रु ने मार डाला था; क्योंकि वह पहले बुद्ध के अहिंसा और दया के विचारों से उससे सहमत नहीं था, बुद्ध को भी उसने खूब सताया और तङ्ग किया था, परन्तु फिर वह भी उस का अनुवर्ती हो गया। कैसे हो गया सो आगे चल कर कहेंगे। गौतम को बहुत से राजाओं और मनुष्यों का आश्रय था। यद्यपि उन लोगों ने गौतम के नये सिद्धान्तों का बड़े जोश के साथ स्वागत किया था, तथापि उन्हें अपने ऊपर अभी पूरा भरोसा

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

न था, इस से उन्होंने अपनी योग्यता की एक पक्की और अन्तिम परीक्षा लेनी चाही।

हमने पहले एक ब्राह्मण आचार्य का वर्णन किया है उस से भी बढ़ कर राजगृह में एक विद्वान् था। राम नामक एक विद्वान् था उसका ही पुत्र यह आचार्य उदरक नाम का था और सचमुच यह एक असाधारण विद्वान् था। उसकी बराबरी आस पास के बहुत कम पण्डित कर सकते थे, और बढ़ कर तो कदाचित् उन में कोई नहीं था। सिद्धार्थ उन के पास गये और अपना शिष्य बना लेने की उन से प्रार्थना की। कुछ शास्त्रार्थ के बाद उदरक ने सिद्धार्थ को अपनी बराबरी का पद देकर उन्हें अपने आश्रम में एक अध्यापक नियत किया, और कहा हम दोनों मिल कर अपने सिद्धान्त लोगों को सिखावेंगे। उक्त अध्यापक के ७०० शिष्य थे।

जिस तरह वैशाली में हुआ था, उसी तरह यहां भी राजकुमार की विद्या की श्रेष्ठता झलकने लगी, और सिद्धार्थ को लाचार होकर उन लोगों से यह कह कर जुदा होना पड़ा "मित्र, यह मार्ग मनुष्यों का उद्धार नहीं कर सकता, इससे कामेन्द्रियां नहीं जीती जा सकतीं और न इस से मनुष्य आवागमन के दुःखों से बच सकता है, न यह पूर्ण ज्ञान और शान्ति की ओर जाता है, और न इस से श्रमण अवस्था प्राप्त हो सकती है और न निर्वाण।" इसके बाद वे उदरक, और उनके समस्त शिष्यों के समीप से चले गये।

उदरक के पांच शिष्य श्रमण गौतम की मोहिनी वक्तृता, चरित्र और मुखों की पवित्रता से लुभाकर उन

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

के साथ चल दिये । उन्हों ने अपने पहले गुरु का साथ छोड़ दिया और सिद्धार्थ के शिष्य हो गये । वे सब लोग उच्चजाति के थे । उन सबों के साथ ये नवीन आचार्य्य पहले गया पर्वत की ओर चले गये, फिर नैरञ्जना नदी के किनारे पर उरुवेल नामक गांव के निकट आये । यहां इन्होंने अपने सिद्धान्तों को फैलाने के पहले उन पर विचार किया । उस समय के सिद्धान्तों और ब्राह्मणों की विद्या से इनका जी फिरगया । उन में जो कुछ त्रुटि थी, ये समझ गये, और इस तरह इन्होंने उन लोगों से अपने को योग्यता में अधिक समझा । इस पर भी इन्हें अपनी निर्बलता को ही दूर करने के लिये अधिक बल प्राप्त करना था, और यद्यपि ये उस समय के संन्यास की कड़ाइयों को बुरा समझते थे तथापि इन्होंने तप और आत्मदमन कई साल तक करते रहने का दृढ़ निश्चय कर लिया । इस के दो कारण थे:— एक तो यह कि, इन्हें ब्राह्मणों ही के सदृश लोकप्रियता प्राप्त करनी थी, और दूसरे इन्हें इन्द्रिय दमन भी पूरा करना था ।

इस तप के लिये उरुवेल गांव बौद्ध इतिहासों में प्रसिद्ध है । सिद्धार्थ ने यहां ६ वर्ष तक बराबर उग्र तप किया था । उन्हों ने अपनी इन्द्रियों के अत्यन्त भयानक आक्रमणों का खूब प्रतिहार किया ।

६ वर्ष के अन्त में अत्यन्त इन्द्रिय-दमन, उपवास, कष्ट सहन और आत्मसंयम के बाद सिद्धार्थ को मालूम हुआ कि इस तरह पूर्ण ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता, और इस कारण उन्होंने यह अत्यन्त दुःखदायी संयम शेष करने का नियम कर लिया । अब वे नियमानुसार भोजन

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

करने लगे । यह भोजन एक ग्रामीण बालिका सुजाता नाम की प्रति दिन लाया करती थी । थोड़े ही दिनों में उन्होंने अपनी शारीरिक शक्ति और सुन्दरता, जिन्हें उन्होंने अत्यन्त कठिन संयमों से बिगाड़ दिया था, फिर प्राप्त कर लीं। उन के पांचों शिष्यों को, जो अब तक उन के बड़े श्रद्धालु भक्त थे और उन्हीं की देखा देखी घोर तप करते थे, अब उनकी इस निर्बलता पर बड़ी घृणा हुई । उन्हें छोड़ कर काशी की ओर ऋषिपाटन नामक स्थान में चले गये । यहां पर अन्त में इन लोगों का गौतम ऋषि से मिलाप हो गया था ।

सिद्धार्थ ने अब तपस्या और उपवास का त्याग कर दिया । अकेले उरुवेल के निकट आश्रम बना कर, मनन करते हुए रहने लगे । इस में कोई संदेह नहीं, कि इसी जगह सिद्धार्थ ने अपने नवीन धर्म्म के सिद्धान्त निश्चित किये, और अपने अनुयायियों के लिये नियम बनाये । जो भेष और नियम वे अपने अनुयायियों के लिये बनाना चाहते थे उन का वे स्वयं उदाहरण बने ; क्योंकि ऐसा किये बिना उनके महाभक्त शिष्य भी सिद्धान्तवेधक किये बिना न रहते, और नियमों का बर्ता जाना भी कठिन हो जाता । जो वस्त्र उन्होंने ६ साल पहले एक शिकारी से बदले थे वे बिल्कुल चिथड़े होगये थे । उन्हीं वस्त्रों से वे नगर नगर घूमते थे, और ऋतुओं का कठोर प्रभाव भी उन्हीं से सहा था, तात्पर्य यह, कि उन्हीं से उन्होंने अभी तक इतने बड़े दिन बिताये थे । अब वे चिथड़े खुले मैदान के काम के न रहे, इस कारण नये वस्त्रों की आवश्यकता हुई । सुजाता उरुवेल के सरदार

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

की लड़की थी। इसका कुछ वर्णन पहले भी आचुका है। यह सिद्धार्थ में बड़ी भक्ति रखती थी। यह दस स्त्रियों के साथ आकर सिद्धार्थ को भोजन देजाया करती थी। इसकी एक दासी थी उसका नाम था राधा। यह हाल ही में मर गई थी। इस की अन्त्येष्टि क्रिया का एक बड़ा पुराना वस्त्र सिद्धार्थ को मिल गया। उसे धोकर उसने एक चोगा तय्यार किया। इस तरह वे बौद्ध साधुओं के लिये उदाहरण रूप हुए। जिस जगह उन्होंने यह वस्त्र तय्यार किया था उसे पांसुकूल—सीवन कहते थे। उनके अनुयायी साधुओं में यह नियम प्रचलित होगया, कि जब कभी वस्त्र की अत्यन्त आवश्यकता पड़े तो फेंके हुए चिथड़ों और सड़े कपड़ों से वे अपने ही हाथों तय्यार किये जावें। इससे किसी बौद्ध साधु को यह कहने की जगह न थी, कि वस्त्र खराब हैं, क्योंकि बौद्ध धर्म्म के स्थापक, शाक्य वंश के एक मात्र प्रतिनिधि, एक बड़े राजा के उत्तराधिकारी, और स्वयं महापरिहत सिद्धार्थ ने जब वैसा किया तब दूसरे के लिये ऐसा करने में क्या आपत्ति?

इन दुःखदायी तपों का अन्त समय निकट आगया। सिद्धार्थ को अब केवल एक पग आगे बढ़ना था। वे अपने भावी शत्रुओं को जानते थे, और अपने आप को भी पहचानते थे; वे उन लोगों की निर्बलता को जानते थे और अपने बल को भी समझते थे परन्तु उन की दूरदर्शिता ने उन्हें अभी ठहरा रक्खा था। वे अपने आप विचार करने लगे, कि मैं अभी मनुष्य जाति के मोक्ष का द्वार खटखटाने योग्य हो गया हूं या नहीं। मुझमें संसार में सत्य प्रगट करने की पूरी शक्ति आगई है या

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

नहीं। उन्होंने एक बार अपने आप कहा, "जो कुछ मैं ने अभी तक किया है, या प्राप्त किया है, उस से मैं मानुषिक-धर्म से आगे बढ़ गया हूं? अभी तक मैं उस पद पर नहीं पहुंचा हूं जहां उच्च ज्ञान को स्पष्टतया समझा सकूं। मैं अभी तक ज्ञान के सच्चे रास्ते पर नहीं आया हूं, और न उस मार्ग पर पहुंचा हूं जिस से बुढ़ापा, रोग और मृत्यु की सच्ची औषधि मिल जाती है।" कभी कभी उन्हें अपने बचपन की सुधि आती थी, उन्होंने अपने पिता के उपवन में जम्बू वृक्षके नीचे जो जो स्वप्न देखे थे वे सब धीरे धीरे उस के हृदय पर उतरने लगे और उन्होंने अपने आप प्रश्न किया, "क्या वे स्वप्न अवस्था और विचारों की प्रौढ़ता के साथ सच्चे होंगे? क्या मेरे बचपन के विचारों ने जो मुझे विचित्र विचित्र वचन दिये थे वे पूरे होंगे? क्या मैं मनुष्य जाति का मोक्षदाता होऊंगा?" ऐसी ऐसी बातें वे पूरे एक सप्ताह तक सोचते रहे। अंत में उन्होंने अत्यन्त प्रसन्न हो कर अपने प्रश्नों का हां में उत्तर दिया।

"हां, अब मैं ने महत् होने का सच्चा मार्ग ढूंढ़ निकाला है। यह मार्ग आत्मबलिदान का है और यह ऐसा है कि कभी नहीं चूकेगा, कभी विफल न होगा और कभी निरुत्साह न करेगा। यह मार्ग पवित्र पुण्य का है; इस मार्ग में कोई कांटा, कङ्कड़ नहीं—इस में द्वेष, ईर्ष्या, अज्ञान और तृष्णा दूर रहेंगीं; यह वह मार्ग है जिस से स्वाधीनता मिलती है, और जिस से पाप जड़ मूल से उखड़ जाता है। यह वह मार्ग है जिस से आवागमन का डर न रहेगा, यह वह मार्ग है जिस से विश्व,

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

विद्या अधिकृत होती है, यह अनुभव और न्याय का मार्ग है, यह बुढ़ापे और मृत्यु को कोमल कर डालता है, यह वह प्रान्त मार्ग है जिस में पाप का भय नहीं है और निर्वाण की ओर सीधा चला गया है।" तात्पर्य यह कि सिद्धार्थ इस समय से अपने को बुद्ध समझने लगे।

जिस जगह सिद्धार्थ बुद्ध हुए वह कथाओं में उतनी ही प्रसिद्ध है जितनी कपिलवस्तु नगरी। ये चार स्थान एक ही से प्रसिद्ध हैं, कपिल वस्तु, उरुवेल-जहां ६ साल घोर तप किया, वह स्थान जहां उन्होंने बुद्धत्व पाया और कुशीनगर—जहां उनका निर्वाण हुआ। जिस स्थान पर सिद्धार्थ बुद्ध हुए, उसे बोधिमण्ड कहते हैं इस का अर्थ है सम्पूर्ण बुद्धि का स्थान। इन बातों को बौद्धों की अगणित पीढ़ियों ने रक्षित रक्खा है।

गौतम ऋषि बोधिमण्ड को जा रहे थे कि नैरञ्जना के किनारे उन्होंने सड़क के दाहें ओर एक घास बेचने वाले को, जिस का नाम स्वस्ति था, घास खोदते हुए देखा। बोधिसत्व-भावी बुद्ध—उस की तरफ फिरे और थोड़ा सा घास मांगा। पश्चात् घास लेकर उस की जड़ें ऊपर की तरफ और नोकें नीचे की तरफ कर चटाई का आकार बनाया, और पूर्व दिशा की ओर मुंह कर के बैठ गये। जिस पेड़ के नीचे वे बैठे थे उसका नाम बोधिद्रुम पड़ा।

आसन लगाने पर उन्होंने अपने आप कहा, "जब तक मैं पूर्ण ज्ञान प्राप्त न कर लूंगा तब तक यहां से न उठूंगा, चाहे खाल, हड्डी, और मांस क्यों न नष्ट हो जावें।"

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

विना हिले डुले वे २४ घंटे आसन पर बैठे रहे। जिस समय धीरे धीरे प्रातःकाल हो रहा था, जिस समय नींद सब को आदबोचती है उसी समय गौतम मुनिने पूर्ण बुद्धत्व और ज्ञान प्राप्त किया।

उस समय वे यकायक चिल्ला उठे, "हां! निःसन्देह अब इस तरह मैं मनुष्य जाति के कष्टों को दूर करूंगा। पृथ्वी पर हाथ पटक कर—आवेश में आ उन्होंने कहा, "पृथ्वी मेरी साक्षी हो, यह सम्पूर्ण जीवों का निवास स्थान है, इस में चल अचल सब विद्यमान हैं, यह पक्षपातरहित है, यह साक्षी देगी, कि मैं झूंठ नहीं बोल रहा हूं।"

इस समय बुद्ध छत्तीस वर्ष के थे। जिस पेड़ के नीचे बोधिमण्ड में बुद्ध ने बुद्धत्व प्राप्त किया था, वह पीपल का वृक्ष था। इस पीपल के पेड़ को बौद्ध लोग बोधिद्रुम कहते थे। सम्वत ६८९ विक्रमी में बुद्ध की मृत्यु के १२०० साल बाद चीनी यात्री ह्यूनसैङ्ग ने यह वृक्ष देखा था। ललितविस्तर में लिखा है, कि यह मगध की राजधानी राजगृह से ४५ मील की दूरी पर था, और नैरंजना से कुछ दूर नहीं था। इस पेड़ के चारों तरफ पक्की पक्की बड़ी दीवारें थीं, जो पूर्व पश्चिम की ओर बढ़ती चली गई थीं, और उत्तर दक्षिण की ओर बराबर ओछी थीं। सदर फाटक पूर्व की ओर था। वृक्ष के सामने नैरंजना नदी थी। दक्षिणी फाटक के सामने एक बड़ा पोखरा था। इस में कोई सन्देह नहीं यह वही होगा जिस में बुद्ध ने यह बड़ा गला कपड़ा धो कर अपने पहरने के लिये तय्यार किया था।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पश्चिम की ओर बहुत से ढालू पहाड़ थे, और उत्तर की ओर यह स्थान एक मठ से मिला हुआ था। इस पेड़ की पेड़ी सफ़ेदी लिये हुए पीली थी, इस की पत्तियां चिकनी, चमकदार और हरी थीं, इस पेड़ के नीचे हर साल बुद्ध-निर्वाण-दिवसोत्सव पर नृपतिगण, मन्त्री लोग और न्यायाधीश जुड़ा करते थे। इस पेड़ को इस दिन दूध से सींचते थे, दीपक जलाते थे, पुष्प वर्षा करते थे, और गिरी हुई पत्तियां बीन कर चल देते थे।

बोधिद्रुम के पास ह्यूनसँग ने बुद्ध की एक मूर्त्ति देखी उसको उसने साष्टांग प्रणाम किया। कहा जाता था कि इसको मैत्रेय ने बनवाया है। वह बुद्ध का अत्यन्त भक्त शिष्य था। उस मूर्त्ति और वृक्ष के चारों ओर एक छोटी सी जगह में, बहुत से धर्म सम्बन्धी स्तूप खड़े थे। ये किसी न किसी पवित्र यादगार में बनवाये गये थे।

भक्त यात्री बतलाता है, कि उसे इन मूर्त्तियों के एक एक कर पूजन करने में ८—६ दिन लगे थे। वहां हर तरह के रूप और आकार के विहार, स्तूप और मठ थे। चीनी भक्त को वज्रासनम् नामक पहाड़ी मुख्य कर दिखाई गई थी। यह वह पहाड़ी थी जिस पर बुद्धदेव बैठा करते थे।

यद्यपि इस समय घटनास्थल पर पहले के वृक्षों का कोई चिन्ह नहीं, परन्तु भूमि नहीं बदली जा सकी है। खंडहरों के चिन्ह अब भी दिखाई पड़ते हैं। ललित विस्तर, फाहियान और ह्यूनसँग के प्रामाणिक लेखों की सहायता से बोधिमण्ड का पता लगा लिया गया है, और प्रत्येक पूर्व लिखित वस्तु का ठीक ठीक स्थान

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मालूम कर लिया गया है।

बोधिमण्ड के पीपल के वृक्ष के नीचे बुद्ध का वैराग्य कुछ ऐसा गुप्त नहीं था कि लोग उन से भेट करने में वंचित रह जाते। सुजाता और उस की सखियों के अतिरिक्त, जो उसे भोजन इत्यादि से सहायता देतीं चली आईं थीं, बुद्ध ने दो मनुष्यों को और भी अपनी दीक्षा दी। ये दोनों सहोदर भाई थे। व्यापार किया करते थे। दक्षिण की ओर से माल लाद कर उत्तर की ओर जा रहे थे। बीच में बोधिमण्ड पड़ा था। उनके जो साथी थे, वे भी संख्या में बहुत थे, क्योंकि उनके साथ कई सौ छकड़े लदे चले जा रहे थे। उनकी कुछ गाड़ियां कीचड़ में बेतरह फँस गईं। दोनों भाई जिनका नाम त्रिपुष और भल्लिक था, महात्मा बुद्ध के पास सहायता के लिये आये। बुद्ध के कथनानुसार उन्होंने यत्न किया और कृतकार्य्य हुए। वे लोग उन के सद्गुणों और अलौकिक ज्ञान से मुग्ध हो गये। ललितविस्तर कहता है, "वे दोनों भाई और उनके सम्पूर्ण साथी बुद्ध के सिद्धान्तों के अनुयायी हुए।"

सफलता के इन पहले शुभ लक्षणों के होते हुए भी, बुद्ध अब भी हिचकिचाते थे। अब आगे से उन्हें अधिक विश्वास हो गया, कि सत्य पूर्णतया मेरे आधीन हो गया है। परन्तु सन्देह था कि मनुष्य मेरे नूतन मार्ग का अवलम्बन करने को तय्यार होंगे या नहीं? मैं मनुष्यों के लिये प्रकाश बाहर लाया हूं परन्तु क्या मनुष्य उसके लिये अपने नेत्र खोलना स्वीकार करेंगे? क्या वे उस मार्ग का अनुसरण करेंगे जिस के लिये उन से कहा जावेगा? अब इस तरह के विचार बुद्ध को सताने लगे। वे फिर विरक्त

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

होकर एकान्त सेवन करने लगे। ध्यान करते करते उन्हीं ने एक बार हृदय में सोचा :—

जो सिद्धान्त मैं ने निकाला है गूढ़, गम्भीर और सूक्ष्म है और मनन करने में कठिन है; इसे अलग अलग कर के समझने में बुद्धि हार खाजाती है, और यह तर्क शास्त्र की सम्पूर्ण शक्तियों की पहुंच के बाहर है; इसे केवल ज्ञानी और बुद्धिमान् पा सकते हैं; इस में संसार की सम्पूर्ण बुद्धि का समावेश है। इस से निर्बोध सुगम और सहज हो जाता है। परन्तु यदि मैं, जो सत्यज्ञानसम्पन्न बुद्ध हूं, इस सिद्धान्त को लोगों को सिखाऊं तो वे इसे समझेंगे नहीं, और मुझे उलटे उनके अनुचित कटाक्ष झेलने पड़ेंगे और गालियां सहनी पड़ेंगीं। नहीं, मैं इस तरह करुणा के वशीभूत न होऊंगा।

बुद्ध तीन बार इस निर्बलता से दबजाने वाले थे, और कदाचित् वे अपने इस बड़े भारी पराक्रम को सदा के लिये त्याग भी देते, और अन्तिम उद्धार का सिद्धान्त अपने ही साथ ले मरे होते, परन्तु एक ऊंचे विचार ने अन्त में उन्हें इन सब अड़चनों और हिचकिचाहटों को दूर करने में दृढ़ कर दिया।

उन्होंने सोचा :—

"चाहे ऊंचे हों वा नीचे, चाहे बहुत अच्छे हों वा बहुत बुरे, या विरुद्ध स्वभाव के हों मनुष्य तीन श्रेणियों में विभक्त किये जा सकते हैं। उन में से एक तिहाई भ्रम में भूले हुए हैं और सदा भूले रहेंगे, एक तिहाई के अधिकार में सत्य धर्म है, और शेष एक तिहाई अनिश्चय और अविश्वास के किनारे खड़े हैं। चाहे मैं सिखाऊं

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

या न सिखाऊं जो लोग सन्देह के अन्धकूप में सड़ रहे हैं कदापि अधिक ज्ञान न पा सकेंगे ; चाहे मैं सिखाऊं या न सिखाऊं जो आप ज्ञानी और बुद्धिमान् हैं सदा बुद्धिमान बने रहेंगे; परन्तु वे प्राणी जो अनिश्चय और अविश्वास में ग्रस्त हैं यदि मैं सिखाऊं तो अवश्य ज्ञान प्राप्त कर लाभ उठाऐंगे और यदि न सिखाऊंगा, तो वे नहीं सीख सकेंगे ।

जो लोग अनिश्चय के गड्ढे में पड़े हुए थे, उन के ऊपर बुद्ध को बड़ी दया आई, और उनके विचार करुणा से तो भरे थे ही उन्होंने कर्त्तव्य क्षेत्र में उतरने के लिये दृढ़ता से निश्चय कर लिया । जो लोग अनिश्चय और अविश्वास में थे उन के लिये वे अमरता का द्वार खोलने को उद्यत हुए । उन्होंने अन्तमें ४ श्रेष्ठ और सत्य सिद्धान्त ध्यानसागर से खोज निकाले । इन सबों को वे भूले हुए लोगों को बचाने के लिये प्रकाश करने को उतारू हुए ।

अपने सिद्धान्त के आधार को एक बार पक्का और निश्चय कर लेनेपर और अपने विचारोंको फैलाने के यत्न में आने वाली आपदाओं और कठिनाइयों का सामना करने का विचार दृढ़ कर लेनेपर, उन्हें यह विचार हुआ, कि मैं पहले पहले किसे अपना धार्मिक सिद्धान्त जताऊं । यह कहा जाता है कि पहले उन का विचार अपने पुराने गुरुओं को राजगृह और वैशाली में जाकर सिखाने और उपदेश देने का हुआ । कुछ दिनों पहले जब वे उन लोगों के पास गये थे तब उन्होंने उनका खूब आगत स्वागत किया था;

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

उन्होंने उन दोनों को शुद्ध, पवित्र, ईर्ष्यारहित और तमोगुणहीन, ज्ञान और सत्य से पूर्ण पाया था। जिस प्रकाश को उन्होंने स्वयं खोजा था, वह उन लोगों की शिक्षा दीक्षा का ही फल था। इस नवीन प्रकाश की जड़ जमाने वाले वे ही लोग थे। वाराणसी [काशी] में जा कर उपदेश देने के पूर्व उन्होंने रामाह्मज उद्रक, और अलारकालम्, जिन्हें वे कृतज्ञता के साथ याद किया करते थे, को सिखाने की इच्छा की। परन्तु इसी बीच में वे दोनों परलोकवासी हो गये थे। जब बुद्ध ने सुना तो उन्हें बड़ा दुःख हुआ। उन्हों ने सोचा कि मैं ने इन दोनोंको बचा लिया होता, और अवश्य ही वे मेरे उपदेशों की अवहेलना न करते। अब उन का ध्यान उन पांचों शिष्यों की ओर गया जो उन के एकान्त सेवन के साथी रहे थे, और उनके तपों और कड़े व्रतों में दिल से उनकी सुधि लेते और चिन्ता रखते थे। यह सच था, कि उन लोगोंने आवेश की अधिकताके कारण उन्हें त्याग दिया था, परन्तु वे महात्मा सदृश पुरुष, जो उच्च जाति और श्रेष्ठ वंशके थे, तो भी बहुतही भले आदमी और सत्य उपदेश ग्रहण करनेको तय्यार रहते थे, वे लोग कड़े तपों और व्रतों के करने में अभ्यस्त थे। यह स्पष्ट था, कि वे लोग मोक्ष की ओर झुके हुए थे और सचमुच वे लोग उन बहुत सी रुकावटों को दूर कर चुके थे जो और लोगों की उन्नति में बाधा डालती हैं। बुद्ध जानते थे, कि वे लोग मुझे घृणा की दृष्टि से नहीं देखेंगे, इसी कारण उन्होंने उन लोगों की खोज निकालने का निश्चय कर लिया। उन्होंने बोधिवृक्ष छोड़ा और उत्तर की

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

ओर चलते हुए गया गिरि पार किया। यह थोड़ी ही दूरी पर था। इस जगह उन्होंने कलेवा किया। मार्ग में जाते हुए रोहितवस्तु, उरुवेल, कल्प, अनाल, और सारथी में ठहरे। यहां के मुख्य गृहस्थों ने उनका आदर सन्मान किया, और आतिथ्य सत्कार का पुण्य लाभ किया। इस तरह वे वृहन्नदी गङ्गा के निकट पहुंच गये। वर्षा के कारण उस समय पानी बहुत चढ़ा हुआ था और बड़े वेग के साथ बह रहा था। बुद्ध ने एक मल्लाह से विवश हो कर पार उतारने को कहा, परन्तु उनके पास देने को एक कौड़ी भी न थी इसलिये कुछ कठिनाई के साथ पार उतरने का प्रबन्ध कर पाये। जैसे ही नरेश बिम्बसार ने इस अड़चन की बात सुनी उसने तुरन्त सब साधुओं के लिये बिना किराये लिये पार उतारनेकी आज्ञा दे दी।

वे अब वाराणसी पहुंच गये, और सीधे अपने पुराने शिष्यों के पास चले। वे इस समय मृगदाव नामक वन में रहते थे। इसे ऋषिपाटन भी कहते थे। यह काशी के बिलकुल पास था, उन्होंने दूर से महात्मा बुद्ध को आते हुए देखा, जो जो बातें बुद्ध के विरुद्ध उन लोगों के हृदय में भड़भड़ा रही थीं, वे फिर लहलहा उठीं। वे सब आपस में कहने लगे हम लोग इन के साथ मिल कर कोई काम नहीं कर सकते; न तो हमें उन का आगे बढ़ कर स्वागत करना चाहिये, और न उन के आने पर अभ्युत्थान करना चाहिये, न हमें उन का धार्मिक-वस्त्र उतार कर लेना चाहिये, और न भिक्षा-पात्र छूना चाहिये, न हमें उन के लिये अर्घ तय्यार

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

करना चाहिये, न आसन देना चाहिये। हम अपने आसनों पर बैठे रहेंगे, वे चटाई से नीचे बैठ जावेंगे। परन्तु उनकी यह उदासीनता और असन्तोष देर तक नहीं ठहर सका। जैसे जैसे गुरु निकट आते गये तैसे तैसे उन्हें अपने आसनों पर बैठा रहना कठिन मालूम होने लगा, और किसी एक भीतरी गुप्त शिक्षक ने उन लोगों से उन के सामने खड़े होने की इच्छा प्रकट की। यह अन्तःकरण पर प्रकृति की टङ्कार थी। सचमुच शीघ्र ही बुद्ध का आतङ्क, और तेज सँभालना उन के लिये अत्यन्त कठिन हो गया, वे लोग एक एक करके खड़े होगये, वे लोग अपना निश्चय दृढ़ नहीं रख सके। कुछ ने उन्हें आदर सन्मान के लक्षण दिखाये, कुछ ने आगे बढ़ कर उनका स्वागत किया, और उनसे सादर उनका कोपीन, धार्मिक वस्त्र और भिक्षापात्र ले लिया, उनके लिये एक चटाई बिछाई और पैर धोने के लिये पानी भरा, फिर कहने लगे :—

"महात्मन् आप का स्वागत है; चटाई पर विराजमान हूजिये।"

इस के पश्चात् उनसे उन उन विषयों पर बात चीत आरम्भ की, जिनसे उन्हें आशा थी, कि वे प्रसङ्ग हो आवेंगे। वे सब उन के निकट ही एक ओर बैठ गये और बोले :—

आयुष्मन गौतम की इन्द्रियां बिलकुल पवित्र हो गई हैं, और त्वचा पूरे तौर से शुद्ध हो गई है। आयुष्मन गौतम, क्या तुम्हारे वे ज्ञान चक्षु खुल गये हैं जिन से पवित्र ज्ञान बिलकुल स्पष्ट दिखाई देता है, वह

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पवित्र ज्ञान जो मानुषिक नियम से बहुत परे है ?"

बुद्ध ने उत्तर दिया "मुझे आयुष्मन की पदवी मत दो। बहुत दिनों से मैं तुम्हारे किसी काम का नहीं रहा और न तुम्हें सहायता दी है और न विश्राम। हां, अब मुझे साफ़ सूझने लगा है कि अमरता क्या है, और वह मार्ग भी जिस से अमरता मिलती है। मैं बुद्ध हूं; मैं सब जानता हूं, सब देखता हूं, मैं ने पाप को धो डाला है, मैं धर्म के नियमों का गुरु हूं, आओ मैं तुम्हें सत्य का प्रकाश दिखाऊं, ध्यान पूर्वक मेरे कथन को सुनो, मैं तुम्हें उपदेश द्वारा समझाऊंगा, और तुम्हारी आत्मा को पापों को छीज कर उद्धार-मार्ग पाने का उपाय और स्पष्ट आत्मज्ञान बतलाऊंगा। तुम यह सब करने में समर्थ होगे जो आवश्यक है, और फिर तुम आवागमन से पूर्णतया रहित हो जाओगे—बस यही तुम लोगों को मुझ से सीखना है।" इसके बाद उन्होंने नम्र भावसे उन लोगों को वे सब बातें कहीं जो उन्होंने दुराग्रह वश उन का अपमान करने को उन के आने के पहले गांठी थीं। उनके पांचों शिष्य उनकी यह बात सुन लज्जित हो गये। अपने को उनके पैरों पर डाल उन्हों ने अपना अपराध स्वीकार किया और बुद्ध को संसार का दीपक मान उन के नये सिद्धान्त और धर्म को सादर स्वीकृत किया। इस पहली बात चीत में और रात के अन्तिम पहर तक बुद्धने उन लोगों को अपने सिद्धान्त समझाये। यदि कुछ महत्व के थे तो येही लोग थे जो पहले पहले उनके मतानुयायी हुए।

सनातन धर्मावलम्बी हिन्दुओं की दृष्टि में काशी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

बहुत पवित्र तीर्थ है, परन्तु उन से बढ़ कर बौद्ध लोग उसे पवित्र मानते हैं। पहले पहले बुद्ध ने इसी जगह अपना उपदेश दिया था, या जैसा बौद्ध पुराणों ने रूपक बांधा है, पहली बार धर्म का चक्र घुमाया था। यह चक्र* और उस में का धर्म सम्बन्धी लेख सब बौद्ध शाखाओं में प्रचलित है। उत्तर, दक्षिण और पूर्व में, तिब्बत और नेपाल से लेकर लङ्का और चीन† तक इसका प्रचार है।

सातवीं शताब्दी में ह्यूनसेङ्ग ने काशी‡ का जो वर्णन किया है, उससे सिद्ध होता है, कि बुद्ध के समय में काशी का उतना महत्व नहीं था, जितना उसके बाद हुआ। परन्तु उस समय भी वह एक बड़ा और विशाल नगर रहा होगा। हिन्दू धर्म के कई महा प्रधान केन्द्रों में एक यह अधिक महत्व का था और अब तक चला आता है। इस में कोई सन्देह नहीं, बुद्ध इसी कारण वहां गया था। वैशाली और राजगृह में ब्राह्मणों के सहस्रों शिष्य थे, और कदाचित् काशी में उनसे भी अधिक थे इस

---

* इस चक्र को, जो लट्टू की तरह का होता है, चीन व तिब्बत आदि देशों के लोग 'मानेफाने' कहते हैं और अंगरेज 'बुद्धिस्ट व्हील' कहते हैं। इस चक्र के भीतर यह मंत्र "ॐ मणि पद्म हुं" छपा रहता है।

† तिब्बतियों के प्रार्थना चक्रों पर वायट ने जो लेख लिखे हैं वे पढ़ने योग्य हैं। पार्थिव सूर्यों के स्वकीय चर्खों को इन लोगों ने चचर चचर वैसा ही नाम दिया है। ये लोग बड़े बड़े चक्र चलाते हैं, उन पर पवित्र प्रार्थनाएं लिखी रहती हैं और इस तरह ये लोग बुद्धदेव की प्रार्थना करते हैं।

‡ ह्यूनसेङ्ग कहता है कि काशी छः मील लम्बी और तीन मील चौड़ी थी, उसने यहां कई कोरिंथ स्तम्भों में एक स्तूपभी देखा था जो ११-१४ गज ऊंचा था और पास ही एक पाषाण स्तम्भ था जो २५-२९ गज ऊंचा था। इसे अशोक ने बनवाया था। यह ठीक उसी जगह था जहां बुद्ध ने अपना पहला व्याख्यान दिया था और धर्म का चक्र घुमाया था।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

कारण बुद्ध को अपने विचार और सिद्धान्त के फैलाने में इस से अधिक भयङ्कर और विस्तृत मैदान कोई नहीं मिल सका।

दुर्भाग्यवश, काशी में रहने का बुद्ध का अधिक वर्णन हमें नहीं मिला। ललितविस्तर ने विस्तार पूर्वक जिस कथा का वर्णन किया है वह पांच शिष्यों की बात चीत के बाद शेष हो जाती है। अन्य सूत्र शाक्यमुनि के जीवन-चरित की बातें शृङ्खलाबद्ध नहीं बताते। इसी कारण बुद्ध के काशी में ब्राह्मणों से जो शास्त्रार्थ सम्बन्धी झगड़े हुए होंगे, वे अधिकतर अज्ञात हैं। बुद्ध ने किस तरह विपक्षियों के विरोध का सामना किया, और किस तरह सफलता पाई ये सब बातें जानने को कौन उत्सुक न होगा परन्तु क्या कहें, अभी तक इनका ब्यौरेवार वर्णन प्रकाशित नहीं हुआ है। जब तक बौद्धों के नये २ सूत्र प्रकाशित न होंगे, तब तक यह चर्चा एक किनारे रखनी पड़ेगी। अब तक जितने सूत्र प्रकाशित हुए हैं उन से उपर्युक्त बातों का पूरा पता नहीं मिलता। बहुत से सूत्रों में बुद्ध के एकाध कार्य्य का ही वर्णन हुआ है। कोई कोई उसके बहुतों में से एकाध उपदेश की ही गाथा गाते हैं; परन्तु उनके जीवन का पूरा वर्णन कोई भी नहीं देता। किन्तु फिर भी उनमें इतना मसाला भरा हुआ है, कि छांट कर बुद्ध के जीवनचरित सम्बन्धी घटनाओं को सङ्कलित करने में कोई कठिनाई नहीं पड़ती। केवल उनका क्रम ठीक नहीं सो उसे ठीक करना सुगम है; क्योंकि घटनाओं की सचाई में कहीं अन्तर नहीं पाया जाता। बुद्ध के जीवन की कई मुख्य घटनाएँ कुछ गड़बड़ के साथ कही गई हैं, इस

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

कारण उनका इतिहास क्रमानुसार ठीक २ वर्णन करना कठिन है—सब घटनाओं को ऐतिहासिक तिथियों में विभक्त करना कठिन है।

यह मालूम पड़ता है कि शाक्यमुनि काशी में अधिक दिनों नहीं ठहरे। यद्यपि उन्हों ने वहां बहुत से शिष्य किये, किन्तु यह नहीं मालूम पड़ता कि वे वहां बहुत दिन ठहरे हों। सूत्रों का अधिकतर भाग यही बतलाता है, कि बुद्ध का समय गङ्गा के उत्तर में, या तो मगध के राजगृह में, या कौशल की श्रवस्ती नगरी में बीतता था। इन दो राज्यों में उस के जीवन का लगभग सम्पूर्ण भाग, जो ४० वर्ष का था, बीता था। उपरोक्त दोनों देशों के नरेश उनकी रक्षा करते थे। उन दोनों ने उनका धर्म अङ्गीकार कर लिया था। बिम्बसार मगध का राजा है। उसने बुद्ध के आरम्भिक सन्यास में उन पर जो कुछ कृपा दिखाई थी, उसको पहले ही कह चुके हैं। अपने सम्पूर्ण राज्य-काल में उसने उस कृपा में कमी कभी नहीं की। राजगृह मगध राज्य के लगभग केन्द्र में था। वहां बुद्ध सहर्ष रहते थे क्योंकि वहां से वे आस पास के देशों में अपने विचारों का प्रचार सुगमता से कर सकते थे। ये सब स्थान बुद्ध को अवश्य ही प्यारे रहे होंगे क्योंकि उनके बाद ये सब स्थान उनकी स्मृति में पवित्र माने जाने लगे थे। राजगृह से कोधिमवह और उरुवेल कुछ दूर न थे। वहां से ६—७ मील की दूरी पर गृद्ध-कूट नाम का एक पहाड़ था। यदि ह्यूनसेङ्ग का कहना सत्य है तो इसकी एक चोटी गृद्ध के रूप, आकार से बहुत मिलती थी। यह पर्वत मनोहर वृक्षों से भरा हुआ रहता था;

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

तरह तरह के सुन्दर, हरे भरे पुष्पमय, वृक्षों से परिपूर्ण था ; मीठे पानी के चमकते हुए झरने पर्वत की सुन्दर प्राकृतिक छटा का प्रत्येक समय भांति भांति के प्रतिबिम्ब उतारा करते थे। इस पर्वत के आस पास बुद्ध प्रफुल्ल-चित्त होकर घूमा करते थे। बहुत से शिष्यों से घिरे रह कर, बुद्ध ने यहीं महाप्रज्ञा पारमिता सूत्र, और अन्य बहुत से सूत्र पढ़ाये थे।

राजगृहके उत्तरीय फाटक पर एक विशाल विहार था यहां पर बुद्ध प्रायः रहा करते थे। यह कालान्तक था कालान्तवेलु वन कहलाता था। ह्यूनसैङ्ग के लेखानुसार कालान्त एक व्यापारी का नाम था। उसने अपना उपवन पहले ब्राह्मणों को दान किया था। पीछे बुद्ध के विचारों की झनकार कान में पड़ने पर उसने ब्राह्मणों से अपना दिया हुआ दान छीन कर, बौद्धोंके हवाले किया। वहां उसने एक मनोहर विशाल भवन बनवाया, और बुद्ध को भेंट किया। इसी स्थान पर बुद्धने अत्यन्त प्रसिद्ध शिष्य अपने धर्म में मिलाये थे। उन के नाम थे शारि पुत्र, मुगल्लान और कात्य यन। इसी भवनमें बुद्धकी मृत्यु के बाद पहली बौद्ध महासभा हुई थी।

राजगृह से थोड़ी ही दूरी पर एक जगह थी उसका नाम था नालन्द। मालूम होता है बुद्ध ने यहां अपना आनन्दमय वास बहुत दिनों किया होगा। यहां पर भक्त राजाओं ने बहुत से मूल्यवान् कीर्त्ति स्तम्भ बनवाये थे, इसी से उपर्युक्त बात सिद्ध होती है। पहले २ इस स्थान पर आमों का एक बड़ा उपवन था, पास ही एक झील थी। उपवन का स्वामी एक धनी पुरुष था।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

५०० व्यापारियों ने मिल कर इसको क्रय किया, और बुद्ध को दान करदिया। बुद्ध ने इसके पहले तीन महीने उन लोगों को अपने धर्म में दीक्षित किया था। नरेश बिम्बिसार के उत्तराधिकारियों ने इसे बहुमूल्य भवनों से सजाया था। वहां पर उन लोगों ने छः मठ बनवाये थे। ये सङ्घाराम कहलाते थे। इन में से प्रत्येक एक दूसरे से बड़ा था। एक नरेश ने इन सबों को एक में जोड़ने के लिये ईंटों की दीवार से घेर दिया था।

ह्यूनसेङ्ग ने लिखा है कि भारतवर्ष भर में इन की बराबरी की लम्बाई चौड़ाई और मनोहरता में एक भी इमारत नहीं है, ये ही सर्वश्रेष्ठ हैं। वह कहता है, कि वहां राजा की उदारता से दस सहस्र साधु अर्थात् विद्यार्थी रहते थे; इन के लिये कई नगरों का भूमि कर व्यय होता था। नालन्द विश्वविद्यालय के मठों के भीतर ही आचार्य्य नित्य शिक्षा दिया करते थे, और विद्यार्थी अपने विद्वान् अध्यापकों का तेजस्विता और आवेश के साथ अनुसरण करते थे। सहिष्णुता भी वहां की विचित्र थी। सब मिलजुल कर विद्याध्ययन करते थे। वेद और बौद्धसूत्र बराबर निष्पक्षपातसे पढ़ाये जाते थे। इनके अतिरिक्त आयुर्वेद और गूढ़ दर्शन, विज्ञानादि शास्त्र भी पढ़ाये जाते थे। बुद्ध का यह प्राचीन निवास स्थान चीनी यात्री के समय में भी पवित्र समझा जाता था, और आदर सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। यह पवित्र विश्वविद्यालय सात सौ वर्ष का प्राचीन था जिस समय कि ह्यूनसेङ्ग ने इसे देखा था। वहां पर यह यात्री कईवर्ष रहा और आनन्दके साथ अतिथिसत्कार भोगता

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

रहा । नालन्द विश्वविद्यालय के गुणग्राही एवं अतिथिसत्कार कारी विद्वानों ने इसका पूर्णतः आदर सम्मान किया था । इसे सुख पहुंचाने में उन लोगों ने कोई बात उठा नहीं रक्खी थी । इस बात को यह स्वयं कृतज्ञता के साथ स्वीकार करता है । यहां हम नालन्द का अधिक वर्णन नहीं कर सकते । अपने प्रधान लक्ष्य बुद्धके इतिहास के विषय को फिर ग्रहण करते हैं ।

बिम्बसार अल्पवयस ही में सिंहासनारूढ़ हुआ था । नवीन धर्म में दीक्षित होने पर उस ने सांस वर्ष राज्य किया । उसका पुत्र और उत्तराधिकारी अजात शत्रु, जिस ने पितृहत्या कर राजसिंहासन पाया था, पहले इस नये धर्म से चिढ़ता था । उसे यह पसन्द नहीं था । सिद्धार्थ के चचेरे भाई दुष्ट देवदत्त की बाबत आरम्भ के पृष्ठों में हम कुछ कह आये हैं । स्वयम्वर के समय से वह गौतम का शत्रु हो गया था । उसकी मन्त्रणा से अजातशत्रु ने बुद्ध को फांसने और कष्ट पहुंचाने के लिये बहुतेरे फन्दे रचे; परन्तु वह कृतकार्य नहीं हुआ । उलटा उसके शुद्ध गुणों, परिष्कृत और परिमार्जित बुद्धि और पवित्र उपदेशों से वह उसके ऊपर रीझ गया, और उसने बुद्ध से दीक्षा लेली । उस ने जिस तरह अपने पिता का सिंहासन पाया था, वह घोर अपराध भी बुद्ध के सामने खोल कर स्वीकार किया । लङ्का के एक बौद्ध सूत्र का नाम है सामञ्ञफल सूत्र । इस समस्त सूत्र में अजातशत्रु की दीक्षा ही की बातें भरी हैं । इस का कारण यह है कि बुद्ध को इसी एक मनुष्य को अपने धर्म में दीक्षित करने में बड़ी बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

था। यह महात्मा-बुद्ध की सब से कठिन, किन्तु सब से अधिक गौरवस्वरूप विजय थी। अजातशत्रु उन आठ पुरुषों में से एक है जिसने बुद्ध के स्मृति-चिन्हों का बँटवारा किया था।

चाहे बुद्ध का मगध पर कितना ही प्रेम रहा हो क्योंकि मगध उनके महाकठिन एकान्तवास और गौरव-स्वरूप विजय का रङ्गस्थल था पर यह मालूम होता है कि वह अधिकतर कोशल में रहा करते थे। यह देश, जिस का काशी भी एक भाग है, मगध के उत्तर पश्चिम में स्थित था। इसकी राजधानी श्रावस्ती थी। प्रसेनजीत राजा था। श्रावस्ती का स्थान आधुनिक फ़ैज़ाबाद के आस पास ही रहा होगा।*। प्रसेनजीत ने एक निमन्त्रण पत्र भेजा था, जिसको स्वीकार कर बुद्ध बिम्बसार की इच्छा से वहाँ गये। अनाथ पिण्डक या अनाथ पिण्डद का प्रसिद्ध उद्यान, जो जेतवन कहलाता था, बुद्ध की व्याख्यानों से गूंज गया। सूत्रों में जिन जिन व्याख्यानों का सार दिया है वे लगभग सब ही यहीं लोगों के कर्ण कुहर में पड़े थे। हूनसेङ्ग कहता है कि अनाथ पिण्डक ने, जिस की प्रसिद्ध असीम उदारता और दानशीलता में, निर्धनों और अनाथों की सहायता में विख्यात थी, यह उद्यान बुद्ध को दान कर दिया था। अनाथ पिण्डक राजा प्रसेनजीत का मन्त्री था। उसने इस सम्पत्ति को बहुत से रुपये देकर राजा के ज्येष्ठ पुत्र जेत से मोल लिया था इसी कारण इस उद्यान का नाम जेत वन पड़ा। अत्यन्त

* जनरल कनिंघमने अवध प्रान्त के सहेत महेत नामक गांव के खंडहरों को श्रावस्ती के खंडहरों से मिलाया है

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मनोहर, सुन्दर और सायादार वृक्षों के नीचे जेत वन के बीचों बीच अनाथ पिण्डक ने एक विहार बनवाया। यहां पर बुद्ध २३ वर्ष रहे प्रसन्नजीत ने स्वयं नवीन धर्म में दीक्षित होने पर नगर के पूर्व की ओर एक व्याख्यान शाला बनवाई थी। ह्यूनसैङ्ग ने इस के खँडहर देखे थे। इन के ऊपर एक स्तूप था। इस से थोड़ी दूर एक बुर्ज था। यह एक प्राचीन विहार के खँडहर के रूप में था। इस विहार को बुद्ध की मौसी प्रजापति गौतमी ने बनवाया था। इस घटना से सिद्ध होता है कि बुद्ध के घर के लोग अधिक नहीं तो कुछ उनसे इस प्यारी जगह में आन मिले थे। उस जगह में जो बुद्ध को आनन्ददायक थी और जहां के निवासी उन्हें बहुत अधिक चाहते थे अपने चचेरे भाई आनन्द के बहुत कुछ कहने सुनने पर उन्होंने महाप्रजापति गौतमी को अपने धर्म में दीक्षित किया था। यही पहली स्त्री थी, जो पहले पहले बौद्ध हुई। दीक्षित करने के उपरान्त उसने गौतमी को धार्म्मिक जीवन बिताने की आज्ञा देदी थी।

श्रवस्ती से १८-१९ मील दक्षिण ह्यूनसैङ्ग को वह स्थान भी बताया गया था, जहां १२ वर्ष के वियोग के बाद बुद्ध अपने पिता से मिले थे। शुद्धोदन को अपने पुत्र से बिछड़ने का महाशोक हुआ था, और उन्हों ने उन्हें पुनः जंजाल में घसीटने के निरन्तर प्रयत्न किये थे। एक के बाद दूसरा, दूसरे के बाद तीसरा इसतरह ८ दूत उन की खोज में भेजे थे परन्तु कैसे आश्चर्य की बात है कि वे सब राजकुमार के मनोहर व्याख्यानों और चरित्र की श्रेष्ठता पर ऐसे लुब्ध हुए कि फिर कभी न फिरे, वे लोग

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

उनके संग में जा मिले। अन्त में राजा ने अपने एक मन्त्री को भेजा। इसका नाम चरक था। दूसरे दूतों की तरह यह भी बौद्ध होगया, परन्तु यह राजा के पास लौट कर गया, और बुद्ध के आने का समाचार सुनाया। मालूम होता है कि शुद्धोदन बुद्ध के आने की बाट न देख कर स्वयं ही उनके पास चले गये। बुद्ध पिता से मिले, और थोड़े दिनों में कपिलवस्तु चले गये। शुद्धोदन की देखा देखी अन्य शाक्य भी बौद्ध होगये। सचमुच उनमें से बहुतेरों ने बौद्धों के धार्मिक वस्त्र भी पहिन लिये। बुद्ध की तीन पत्नियों गोपा, यशोधरा और उत्पलवर्णा ने, और अन्य बहुत सी स्त्रियों ने बौद्ध साध्वी होना स्वीकार किया।

जन साधारण की सहानुभूति का आधार होते, और बड़े २ बली राजाओं की सहायता और रक्षा पाते हुए भी बुद्ध को ब्राह्मणों से अत्यन्त विकट मुक़ाबिला करना पड़ा था। उन लोगों की प्रतिद्वन्द्विता कभी कभी बुद्ध के लिये महा भयङ्कर होजाती थी। इतिहासलेखकों ने जो ब्राह्मणों की धर्मपद्धति को नीचा दिखाने और घृणित बनाने के प्रयत्न किये हैं वे कुछ छिपे नहीं हैं। उनके किसी भी ग्रन्थ को लीजिये, यूरोपीय धमण्डी विद्वान् उन सब की—यद्यपि वे उनके विषय से थोड़ी ही जानकारी रखते हैं—सदा निन्दा किया करते हैं, और किसी न किसी बहाने उनका खण्डन किया करते हैं। फ़ाहियान और ह्यूनत्संग ने जो यात्रा-पुस्तकें लिखी हैं, वे सर्वथा यथार्थों का कोष नहीं हैं। उन में से बहुत सी बातें पूछ कर लिखी गई होंगी, कुछ धर्मात्मक बुद्धि से, कुछ दुरा-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

ग्रह से और कुछ मूढ़ विश्वास से लिखी हुई मालूम होती हैं। हम यह नहीं कहते हैं कि ल्यूनसेङ्ग ने जो भारतवृत्तान्त लिखा है, वह, सर्वथा ही भ्रममूलक और असत्य है। ह्यूनसेङ्ग ने ब्राह्मण पण्डितों की हर जगह बुराई की है, और बौद्धों की प्रत्येक जगह प्रशंसा। बुद्ध के धर्म की जो उन्नति उस समय हुई, उसके तीन मुख्यकारण हैं। १—वेदों की संस्कृत समझना बहुत ही कठिन होगया था। २—छोटे अपढ़ लोग धार्मिक विषय में प्रत्येक बात के लिये ब्राह्मणों का मुंह ताका करते थे। ३—उन लोगों में सरलता और उदारता की जगह धीरे धीरे अकड़ और घमण्ड होता जाता था। लोग उनसे उकता चले थे। बुद्धने धर्म को सब के सन्मुख प्रकट किया। परन्तु ब्राह्मणों ने लापरवाही के कारण उस ओर ध्यान नहीं दिया। बुद्ध को राजाओं की रक्षा का सहारा था, इससे उन्हें प्रजा का चित्त आकर्षण करने में कोई बाधा नहीं पड़ी, क्योंकि प्रजा राजा की प्रायः नकल करती है। बुद्ध का शील चरित्र बहुत बढ़ा चढ़ा था। उन के पवित्र गुणों और चित्ताकर्षक व्याख्यान ने बहुतों का हृदय मोह लिया था। बुद्ध ने यह कभी नहीं कहा कि बौद्ध धर्म कोई नया धर्म है। उनकी बातों से प्रकट होता है कि वे केवल सुधारक थे, नवीन धर्म प्रचारक न थे परन्तु पीछे वे नवीन धर्म प्रचारक माने गये, यद्यपि उस समय ऐसा होने की बहुत कम सम्भावना थी। ब्राह्मण लोग बुद्ध के सिद्धान्तों को केवल दर्शन की एक नई परिपाटी मानते थे। वह आवागमन को मानते थे, केवल मोक्ष के मार्ग में कुछ थोड़ा सा अन्तर था। सब को दर्शन की

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

नई परिपाटी समझ,—जैसा भारतवर्ष में सदा ही हुआ करता था—विचारक लोग नये २ सिद्धान्त निकालते थे। उन लोगोंने मामूली खण्डन के सिवाय कुछ अधिक ध्यान नहीं दिया। इसी कारण बौद्ध धर्म की उन्नति होती चली गई, और अन्त में उसने वह जोर पकड़ा, जो बड़ी ही कठिनाई से तोड़ा जा सका था।

ब्राह्मण लोगों के धर्म ग्रन्थ संस्कृतमें थे, इससे साधारण लोग उनके समझने में असमर्थ थे, और इसी कारण घोर अन्धकार में पड़े रहते थे। बुद्ध के व्याख्यान उस समय की प्रचलित भाषा (पाली) में हुआ करते थे। अपढ़ से अपढ़ लोग भी उन्हें समझ जाते थे। वेद की बातों को वे उपरोक्त कारण से जानते तो थेही नहीं, इस कारण उनमें खण्डन की शक्ति नहीं थी। उन्होंने बुद्ध से जो कुछ सुना लगभग सच्चा ही जाना, और उन के मधुर और चित्ताकर्षक व्याख्यानों पर मुग्ध होकर उनके अनुयायी हो गये। इन कारणों के अतिरिक्त और भी कई छोटे मोटे कारण हैं, परन्तु उनके उल्लेख की कोई आवश्यकता नहीं है।

बुद्ध ब्राह्मणों के निरन्तर आक्रमणों से खीज कर उन लोगों पर बड़े २ कटाक्ष और मर्मवेधी टीका टिप्पणी किया करते थे। वे उनकी प्रत्येक दर्शन पद्धति का खण्डन करते थे और ब्राह्मणों को भण्ड, पाखण्डी, और मक्कार कहा करते थे तिसपर भी दोनों दलों में कोई बड़ा भेद नहीं था। यहाँ पर यूरोप के विरुद्ध प्रत्येक को धर्म स्वातंत्र्य रहा है। यदि यूरोप में बुद्ध का जन्म होता तो वे या तो जला दिये जाते, या न्याय के लिए

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

से मारडाले जाते, परन्तु भारत में सब को अपने अपने विचार प्रकट करने की स्वाधीनता थी, और इस पर भी ब्राह्मणों ने मारे घमण्ड के ज्यादती की, बस फिर क्या था, बौद्ध धर्म की अच्छी बन पड़ी। प्रतिहार्य सूत्र नाम की एक कहानी की पुस्तक है। उस में प्रसन्नजीत के सन्मुख ब्राह्मणों और बौद्धों का जो शास्त्रार्थ हुआ था, उसका वर्णन है। उस शास्त्रार्थ में ब्राह्मण हार गये थे। यह एक तरह का दङ्गल सा था। इस में राजा और प्रजा निबटेरा करने वाले बनाये गये थे। बस इन्हीं सब बातोंका उपरोक्त सूत्रमें समावेश है। इससे भी अधिक विचित्र कहानी में एक कथा लिखी है। वह इस प्रकार है:—

भद्रङ्कर नाम का एक गांव था। वहां के नागरिकों से ब्राह्मणों ने वचन लेलिया था, कि वे लोग बुद्ध को अपने नगर में नहीं घुसने देंगे। परन्तु जब भागवत (बुद्ध) ने नगरमें प्रवेश करना चाहातो एक ब्राह्मणी, जो कपिलवस्तुकी निवासिनी थी, और भद्रङ्करमें ब्याही थी, चुपकेसे रात को दीवार लांघ कर बुद्ध के पास पहुंची। वह उनके पैरों पर गिर पड़ी और नवीन धर्म की शिक्षा पाने की प्रार्थना करने लगी। उसका अनुकरण एक अत्यन्त धनी नागरिक ने, जिसका नाम मेन्धक था, किया। उसने सब लोगों को जोड़ कर व्याख्यान दिये और सब को स्वतन्त्र कर्त्ता के लिये जीत लिया। यह ही क्यों और भी बड़े बड़े झगड़े हुए होंगे। फ़ाहियान और ह्यूनसैङ्ग, जो कि बुद्ध के सहस्र वर्ष उपरान्त आये, लिखते हैं कि लोगों ने बुद्ध के मार डालने का भी बहुत बार चेष्टा की थी परन्तु बुद्ध इन सब आपत्तियों से बचते गये।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

बुद्धके जीवन सम्बन्धी घटनाओं के वर्णन में कुछ न कुछ गड़बड़ अवश्य है ; परन्तु जहां उनकी मृत्यु हुई उसके विषय में सब एक मत हैं। सब कुशीनगर में उनका देहान्त होना बताते हैं। यह नगर इसी नाम के राज्य का राजस्थान था। इसमें कोई संशय नहीं कि यह प्रसन्नजीत के कोशल का एक भाग होगा। इस समय बुद्ध की आयु ८० वर्ष की थी। वे मगध की राजधानी से राजगृह को लौटे थे और अपने चचेरे भाई आनन्द और बहुत से लोगों के साथ आरहे थे। गङ्गा के दक्षिणीय किनारे पर पहुंच, पार उतरने के पहले, एक वर्गाकार बड़े पत्थर के ऊपर खड़े हुए और बड़े प्यार के साथ अपने साथियों की ओर प्रेम की दृष्टिपात कर बोले "यही सब से अंतिम समय है जो राजगृह और प्रजासनम् के देखने का है। अब मैं इन स्थानों को फिर कभी नहीं देखूंगा।"

गङ्गा के पार उतरने के उपरान्त वह वैशाली नगरी में गये और वहां भी उन्हों ने वेही विदाई के मर्मस्पर्शी वाक्य कहे। यहां पर कई मनुष्य उनके अनुयायी साधु होगये। इन में सब से अन्तिम सन्यासी सुभद्र नाम का था। कुशीनगर ग्राम के आध मील उत्तर पश्चिम, अचिरावती नदी के पास, मल्ल देश था। वहां पर वे यकायक मूर्छित होगये। शाल वृक्षों की एक कुञ्ज के नीचे उन की श्रेष्ठ आत्मा ने उनका साथछोड़ दिया, या जैसा बुद्ध पुराण कहते हैं, वह निर्वाण के द्वार में प्रविष्ट होगये। ह्यूनसेङ्ग ने चार शाल के पेड़ देखे थे। वे चारों एक सी ऊंचाई के थे। कहा जाता था, कि बुद्ध ने इन के नीचे अपना प्राण छोड़ा था। लङ्का का इतिहास कहता है कि अजातशत्रु

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

के आठवें राज्यवर्ष में बुद्ध ने निर्वाण प्राप्त किया था।

तिब्बती दल्व कहता है कि बुद्ध की अन्त्येष्टि क्रिया [चितादाह] बड़े समारोह के साथ की गई थी। यह उतनी ही बढ़ी चढ़ी हुई थी, जितनी किसी एक चक्रवर्ती राजा की की जाती है। उनका सब से अधिक प्रसिद्ध और योग्य शिष्य अभिधर्म का रचयिता, जिसने पहली बौद्ध महा-सभा में सब से अधिक काम किया था, इस समय वहां न था। वह राजगृह में था। परन्तु ज्योंही उसने बुद्ध के परलोकवास का समाचार पाया त्योंहीं वह तुरन्त कुशी नगर को दौड़ा चला आया। बुद्ध का शव उनके देहान्त के आठ दिन पीछे तक नहीं जलाया गया था। बहुत लड़ाई झगड़े के बाद, जो लोहू लुहान तक पहुंच गया था, और जो केवल उस नम्रता और शान्ति द्वारा ठण्डा पड़ा था जिसकी बुद्ध मूर्त्ति थे, और जिसे उन्होंने अपने शिष्यों के रक्त में खूब भेद दिया था, अन्त में यह ठहरा कि बुद्ध के शव के आठ भाग किये जावें। इन में से एक कपिलवस्तु के शाक्यों को दिया गया था।

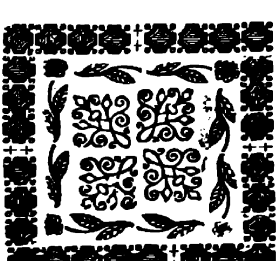

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

उपसंहार।

महात्मा बुद्ध के जीवन-चरित्र की यदि कुछ बातें छोड़ दी जावें तो यह अपूर्ण रहेगा। इस कारण इस महा विद्वान् के धर्म्म सम्बन्धी विचारों की भी कुछ चर्चा करना ज़रूरी है।

शाक्यमुनि तत्ववेत्ता थे, ऋषि भी हो सकते हैं, परन्तु उन्हें कुछ और मान लेना भूल है। बुद्ध ने कभी अपने को ईश्वर का अवतार नहीं कहा। सचमुच वह उस समय के बिगड़े हुए वैदिक धर्म का सुधार मात्र करना चाहते थे, परन्तु करते २ उनके सिद्धान्त कुछ के कुछ हो गये। उस समय जाति विभाग की कठिनाइयां असह्य हो चली थीं, ब्राह्मण लोग निम्न श्रेणी के लोगों को बिलकुल अन्धकार में ढकेलने लगे थे, और उन के साथ कुछ २ निर्दयता का भी बर्ताव हो चला था। इन्हीं कारणों से बुद्ध के हृदय में अपूर्व दया का संचार हुआ। उन्होंने सचमुच संसार को पाप से बचाने की चेष्टा की। इस उद्देश्य की पूर्त्ति के लिये उन्हों ने भोग विलास छोड़ा, घर द्वार छोड़ा, और संसार भी छोड़ा। अहा, कैसा अपूर्व आत्मत्याग था!

इसमें कोई सन्देह नहीं, कि बुद्ध के बराबर वाग्मी महात्मा न कोई कभी हुआ, न है, और न होगा। उनमें मोह लेने की जो शक्ति थी, वह अभूतपूर्व थी। उन की वक्तृत्व शक्ति की उपमा शङ्कराचार्य को छोड़कर, संसार में किसी से भी नहीं दी जासकती। जो लोग केवल तत्वजिज्ञासावश उन के व्याख्यान सुनने जाते थे, जो लोग उनके विरुद्ध मनसूबे गांठकर उसके सामने पहुंचते थे, वे भी उनका धर्म अङ्गीकार कर लेते थे।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पहले बुद्ध का विचार वेदप्रचार ही का था, उन्हों ने अपने जन्म भर वेद के महत्त्व के विरुद्ध कोई बात नहीं कही। हाँ, धीरे २ उन के विचार बदलते गये। फिर तो वे वेद ही क्या, वेद के आधार ईश्वर को भी भूल गये। उन्होंने केवल असीम स्वावलम्ब का नमूना लोगों के सामने रख दिया। कहा, अपने ही बाहुबल से तुम भवसागर पार कर सकते हो। बुद्ध ने स्वर्ग माना है, नरक माना है और सब माना है, केवल एक जगदाधार ईश्वर को ही वे भूल गये।

बुद्ध का उद्देश्य बहुत ही श्रेष्ठ, और लक्ष्य बहुत ही ऊंचा था, परन्तु जो विषय उन्हों ने उनके सिद्ध होने के लिये चलाये, वे अन्त में चिरस्थायी न ठहरे। यह बात ब्रह्मदेश, स्याम, जावा, चीन, तिब्बत, मङ्गोलिया और कई अंशों में जापान में भी प्रत्यक्ष दिखाई देती है। बिना ईश्वर के अन्तःकरण को शान्ति नहीं मिलती। उस के बिना यह चञ्चल हो कर भटकता लगाता रहता है। यही कारण है, कि उपर्युक्त देशों में बौद्ध धर्म—बुद्ध के निश्चित सिद्धान्त—अपनी पहली हालत में नहीं हैं। बुद्ध ने मूर्त्तिपूजा के लिये कब कहा था? परन्तु जितनी मूर्त्तिपूजा बौद्ध धर्मानुयायियों में होती है, उतनी किसी में नहीं। बुद्ध ने कब कहा, कि मैं किसी महाशक्ति का अवतार या स्वयं कोई महाशक्ति हूं?—याद रखिये, बुद्ध ईश्वर को ज़रा भी न मानते थे। परन्तु फिर भी सम्पूर्ण बौद्ध बुद्ध बुद्ध रटा करते हैं। यह क्यों? बुद्ध ने तो कभी इन बातों का उपदेश ही नहीं किया। बुद्ध के न कहने पर भी लोग मूर्त्तिपूजा करने लगे, और दूसरे रूप में ईश्वरवाद भी करने लगे।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

बुद्ध की युक्ति बहुत प्रबल होती थीं, उनकी बुद्धि-कुशाग्रता अपूर्व थी, उनके ज्ञान के सामने बड़े २ विद्वानों की बुद्धि चकरा जाती थी, वे बहुत सी बातों के जानने वाले थे, उनके बराबर करुणा किसी में न रही होगी, वह सच्चे दिल से मानव जाति का उद्धार करना चाहते थे, वह जो कुछ कहते और करते थे, अपने अन्तःकरण से कहते और करते थे, परन्तु उन के विचारों की, उनके सिद्धान्तों की जड़ कच्ची थी। जिस नींव पर अपना धर्म खड़ा करना चाहते थे, वह नींव ही कच्ची थी। उन्हों ने संसार को अत्यन्त विरक्त भाव से देखा है। उन्हें संसार में दुःख के महा ऊंचे २ पहाड़ों के सिवाय और कुछ भी न दिखाई दिया। उनका सिद्धान्त था, कि दुनिया में सिवाय दुःख के सुख रत्ती भर क्या, परमाणु भर भी नहीं। यह उन की बड़ी भारी भूल थी। निःसन्देह संसार में दुःख है, परन्तु जहां दुःख है, वहां सुख ज़रूर है। यदि ईश्वर ने संसार को केवल दुःखमय और पीड़ापूरित ही बनाया होता तो इसका बनाना और न बनाना दोनों बराबर था। दुःख है परन्तु सुख भी है। यदि संसार में दुःख है, तो उसे दूर करो, उस से डर कर और निराश होकर भागना कायरता का काम है।

बुद्ध के धर्म ने भारत को लाभ भी पहुंचाया, और उस की हानि भी कुछ थोड़ी नहीं की। इस धर्म के साथ २ यहां वैद्यक विद्या, शिलालेख प्रणाली, और नये २ दर्शन शास्त्र के विचारों ने खूब उन्नति की। पूर्वी दुनिया ने भारत से धर्म के साथ सभ्यता सीखी। जिन देशों ने भारत से उसका पैदा किया हुआ, यह नया मत सीखा, वे इसे परम पवित्र मानने लगे। भारत की इस तरह दूसरे देशों से

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जानकारी बढ़जाने से यहां शिल्प की खूब उन्नति हुई और यह देश धन धान्य से परिपूर्ण होने लगा। अब भारतवर्ष—यद्यपि उसका उत्तरोत्तर पतन ही होता जाता था—संसार भर के सब देशों का सिरमौर होगया। आप कहते होंगे, कि बाबुल, मिश्र, यूनान, फ़ारस (संस्कृत पारस) और रोम देश भी तो भारत से कुछ कम सभ्य न थे। हम मानते हैं, कि सभ्य थे, परन्तु इस भारत के मुक़ाबले में कुछ भी न थे। याद रखिये कि जिस समय उपरोक्त देश "सभ्य" कहलाते थे, उस समय भारत पतन-मार्ग पर होने पर भी उन से ऊंचा था। यदि यूनान में अफ़लातून (Plato प्लेटो) हुआ तो भारत में उस से बढ़ कर कपिल हुए थे, यदि यूनान में अरस्तू (Aristotle एरिस्टोटिल) हुआ, तो उसके गुरुतुल्य यहां वशिष्ठ हुए, यूनान में प्रसिद्ध इतिहासकार हैरोडोटस हुआ तो उसको लज्जित करने वाले यहां कृष्णद्वैपायन व्यास हुए, यदि यूनान में महाबली हरक्यूलीज़ था तो उस से कई गुने बल वाले अमोघवीर्यशाली भीमसेन, अर्जुन और हनुमान थे। चरक, सुश्रुत और वाग्भट के वैद्यक की समता करना आज भी कठिन है। मिश्र के पिरामिड देखकर क्या कोई यहां के पहाड़ काट काट कर बनाये हुए विशाल, विचित्र, अनुपम और सुन्दर मन्दिर भूल सकता है? बाबुल का व्यवहार सदा भारत से रहा है। यहां के नक़्क़ाशी किये हुए पत्थर वहां की इमारतों में लगाये जाते थे। यहां के रेशमी और ज़री के वस्त्र बाबुल के तो क्या, सभ्य संसार के समस्त स्त्री पुरुष शौक़ के साथ पहनते थे। रोममें ग्लेडियेटर फ़ाइट (Gladiator fight) एक तरह की लड़ाई, जिसमें सिंह, भालू इत्यादि जङ्गली

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जन्तुओंसे मनुष्य लड़ाये जाते थे, के विशाल भवनके चंदोवा किस देश के वस्त्रों का बनाया जाता था ? भारत रेशम, ज़री और पच्चीकारी के काम के लिये प्राचीन काल से प्रसिद्ध है। यहां के ये वस्त्र रोम में बहुतायत से जाते थे। दक्षिण में क्लाडियस के ज़माने के रोमन सिक्के मिले हैं, इस से यह बात सिद्ध होती है कि पाश्चात्य देशों में भारत की सभ्यता का नमूना—व्यापार—खूब चमका था। एक बार, इस भारतीय व्यापार से रोम को ऐसा चक्कर लगा था, कि वहांका वाणिज्य व्यापार और शिल्प डूबने लगा, तब वहां वालों ने एक क़ानून बना कर यहां के माल का बहिष्कार तक कर डाला था। अब हम अपने वीरवर भीष्म पितामह को सामने रखते हैं। हमें विश्वास है, कि कोई भी देश इतने भारी महात्मा का गर्व और दावा नहीं कर सकता। फिर बालक, किन्तु अनन्य वीर अभिमन्युकी भी कोई समता किसी देशमें नहीं है ? ये सब बातें भारत की प्राचीन सभ्यता का थोड़ा सा नमूना दिखाने को कही गई हैं।

महाभारत से भारत का सम्पूर्ण शरीर जर्जर हो गया था, उसके शारीरिक घाव अभी सूखने भी न पाये थे—बहुत से तो सड़ तक गये थे,—कि बुद्ध ने उसकी चिकित्सा करनी चाही। बुद्ध का इरादा बहुत ही अच्छा था, यह हम पहले ही कह आये हैं,—परन्तु जिस औषधि को उन्होंने भारत के मानसिक रोग के लिये उपयोगी समझा था, वह बिलकुल उलटी हुई। "मर्ज़ बढ़ता गया ज्यों ज्यों दवा की"।

बुद्ध ने स्वयं कुछ नहीं लिखा, उन के पीछे उनके शिष्यों ने उनके उपदेशों को इकट्ठा कर पुस्तक का रूप

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

दिया। अपने धर्म का खूब प्रचार करने के लिये बुद्ध ने जो व्याख्यान दिये थे उन के शिष्यों ने उनको उस समय की प्रचलित भाषा [पाली] में लेखबद्ध किया। बरनफ (Burnough) कहता है, कि बौद्ध सूत्रों की लेखन-प्रणाली बड़ी वाहियात है और उनका साहित्य भी जरा हुआ नहीं है; क्योंकि बौद्धों को किसी तरह की भी कला में निपुणता प्राप्त न थी, विरक्त ही ठहरे।

लङ्का, ब्रह्मा, पीगू, स्याम और चीन में जो चार "सत्य" कहे जाते हैं उनका बड़ा भारी आदर है। इनको सम्पूर्ण बौद्ध जानते हैं। ये "आर्याणि सत्यानि" कहलाते हैं। उनका ब्यौरा इस प्रकार है :—

पहला सत्य, दुःख की वह दशा, जो मानव जाति को एक या दूसरे रूप में सताती है, अवश्यम्भावी है; चाहे मनुष्य की कुछ भी स्थिति क्यों न हो। (यह "सत्य" बिल्कुल सत्य है, परन्तु इस से छुटकारा पाने के उपाय उतने ही अधूरे हैं जितना यह सत्य है।)

दूसरा सत्य, इन्द्रियों को वश में न रखने से, पापपूर्ण वासनाओं में लिप्त रहने से, सब दुःख होते हैं। [इस में कोई सन्देह नहीं।]

तीसरा सत्य, उपर्युक्त दोनों क्लेशों की सान्त्वना के लिये यह तीसरा सत्य है। निर्वाण, जो कि मनुष्यमात्र के प्रयत्नों का सार है, इन क्लेशों से बचा सकता है।

चौथा सत्य, क्लेशों के बचाने वाला मार्ग है। यह मार्ग, वही निर्वाण है। इस को दूसरे शब्दों में मोक्ष का उपाय भी कह सकते हैं।

फिर निर्वाण पाने के लिये "आठ श्रेष्ठ उपाय" हैं। वे इस प्रकार हैं:—

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पहला है, भक्ति और धर्मदृढ़ता; दूसरा है, सत्यपूर्ण न्याय जिस से संशय दूर हो जाते हैं; तीसरा, सत्य संभाषण, अर्थात् झूठ का सर्वथा त्याग और प्रत्येक बात में सत्य ही बोलना और उसी के अनुसार करना; चौथा, सत्यपूर्ण उद्देश्य, अर्थात् सदा खरी ईमानदारी का व्यवहार; पांचवां, जीवन का न्यायपूर्ण पोषण अर्थात् दोषरहित और पापहीन कामों से—सन्यासी होकर—जीवन निर्वाह करना; छठवां धर्म में ठीक २ और पूरा मन लगाना; सातवां सच्ची स्मृति का रखना, अर्थात् वे बातें जो हो चुकी हैं, उनका ठीक २ याद रखना; आठवां और अन्तिम है, सत्यपूर्ण ध्यान (इसे बौद्ध लोग भावना कहते हैं) जिस से मनुष्य इसी लोक में शान्ति, जो निर्वाण के बराबर के दर्जे की है, पासकता है।

उपर्युक्त चार " आर्य्यानि सत्यानि " बुद्ध को बोधिवृक्ष पर बोध वृक्ष के नीचे प्राप्त हुए थे । ये सिद्धान्त बुद्ध ने पहले काशी में फैलाये थे, और फिर कौशल के अधकचरे पण्डितों को हराकर उन्होंने ये सिद्धान्त सम्पूर्ण देशों में फैलाये । इन चार सत्यों को इस तरह भी दुहरा सकते हैं दुःख का अस्तित्व, दुःख का कारण, दुःख का नाश, और दुःख के नाश करने का उपाय । एक तरह से ये " सत्य " ही बौद्ध धर्म की नींव हैं । बौद्ध सन्त इन को बड़े प्रेम के साथ दुहराते हैं और ये लगभग बुद्ध की सम्पूर्ण मूर्त्तियों के नीचे खुदे हुए भी पाये जाते हैं ।

इन " सत्यों " और " उपायों " के बाद कुछ उपदेशपूर्ण सिद्धान्त वाक्य भी हैं । ये बहुत ही सीधे साधे हैं । इन्हीं में एक भाग पांच सिद्धान्तों का है और दूसरा भी पांच का । इस तरह सब मिलाकर, ये दस होते हैं ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

ईसाइयों ने अवश्य ही कुछ अदल बदल के साथ इन्हीं दसों को अपने यहां भी स्थान दिया है। इस से साफ सिद्ध हो जावेगा, कि कुछ परिवर्त्तन के साथ, ईसाई धर्म बौद्ध मत ही से निकला है। केवल दो बातें परिवर्त्तन में भुला दी गई हैं। एक तो अहिंसा और द्वितीय पुनर्जन्म। अहिंसा बिना जीवन निर्वाह कठिन समझा होगा और पुनर्जन्म का सिद्धान्त समझ में आया न होगा। बाबू हरिश्चन्द्र ने लिखा है, कि भारत के उत्तर और पूर्वोत्तर देशों में गौतम को गौडमा कहते हैं। बिगड़ते २ गौडमा का अपभ्रंश गौड होगया। क्या यही शब्द बाइबिल का गौड (God) है? अस्तु, कुछ ही हो, यह निर्विवाद है, कि अशोक के भेजे हुए उपदेशकों के उपदेश ईसा के समय में भी मिश्र, बाबुल, बैक्ट्रिया, और एशिया माइनर में फैले हुए थे। उन्हीं उपदेशों को—जो पुराने पड़गये थे—ईसा ने परिमार्जित कर लोगों में फैलाये होंगे। बहुत से (जर्मनी के कई विद्वान्) तो इस बात की भी शङ्का करने लगे हैं कि ईसा नामक पुरुष इस संसार में कभी पैदा हुआ या नहींहुआ। अस्तु, वे दस उपदेश बुद्ध के इस तरह पर हैं—

पहले पांच (इनका अवश्य ही पालन होना चाहिये)

(१) हत्या मत कर, [ईसाई केवल मनुष्य हत्या न करने को कहते हैं।] (२) चोरी मत कर, (३) व्यभिचार मत कर, (४) झूंठ मत बोल, (५) मद्य मत पी।

दूसरे पांच (ये ऐसे हैं, जो महत्व के होने पर भी, ज्यादा ध्यान से नहीं माने जाते)

(१) नियत समय के सिवाय कभी भोजन मत कर, (२) नाचना, गाना, सङ्गीत और नाट्याभिनय को देखने तक का निषेध, (३) नरम नरम बिछौनों [जिस में भोग

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

विलास की सूझे] पर मत सो । [४] पुष्पमाला या वस्त्र का व्यवहार मत कर । (५) सोना या चांदी स्वीकार न करना चाहिये ।

इन दसों नियमों या आज्ञाओं को वैराजिनी भी कहते हैं । प्रत्येक बौद्ध मत में विश्वास रखने वाले को इन बातों का जानना परम आवश्यक है । पहली पांच आज्ञाएँ प्रत्येक बौद्ध को माननी चाहिये । पिछली पांच केवल परिव्राजकों, सन्यासियों, सन्तों या साधुओं के लिये हैं । इन पिछलों के लिये और भी बहुत से नियम हैं । ऊपर के नियम वेद और ब्राह्मणों ही से लिये गये हैं । बुद्ध ने जो साधुओं के लिये नियम बनाये थे वे बहुत ही कड़े थे । उन्होंने एक तरफ से जातिबन्धन ढीला कर दिया, दूसरी तरफ ये नियम उस बन्धन से भी ज़ियादह कड़े बना दिये । परन्तु वे स्वयं इन नियमों का पूरा पूरा पालन करते थे । भिक्षु, श्रमण इत्यादि उपाधियां जो बौद्ध साधुगण अपने लिये लगाते थे वे स्वयं उपर्युक्त बात को प्रतिध्वनित करती हैं । बुद्ध भी इन उपाधियों को अपने लिये प्रयोग करने में सङ्कोच न करते थे । वे अपने को कई जगह महा-भिक्षु और श्रमण गौतम कहते हैं । निःसन्देह, उपरोक्त नियमों का पालन करने वाला महात्मा हो सकता है । परन्तु समाज का इन से हित होना बड़ा कठिन है ।

बुद्ध ने अपने धर्म्म का प्रचार सरलता से करनेकी आज्ञा दी है । उनके धर्म्म सिद्धान्तों का प्रचार तलवार के ज़ोर से नहीं हुआ था । वह कटाक्ष और तीव्र आलोचना भी न करते थे, जो कुछ करते थे, वह बहुत सरलता और नम्रता से करते थे । बुद्ध ने माता पिता की आज्ञा मानने और उनकी सेवा करने की भी कड़ी आज्ञा दी है । प्राचीन

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

ऋषियों और पूर्वजों का भी ये महात्मा बड़ा आदर करते थे। बौद्ध धर्म्म—ध्यानियों के लिये अच्छा होसकता है, परन्तु सर्व साधारण इस से कोई लाभ नहीं उठा सकते। इसके कारण आबादी भी बहुत कुछ घट सकती है; क्योंकि जब जिस के विरक्त भाव हो गये तो गृहस्थ क्यों होने लगा? मङ्गोलिया और चीन—जहां यह धर्म विशेष जमा हुआ है—तक के साधारण लोग इस धर्म के बहुत से तत्व नहीं समझते। अहिंसा तो वहां है ही नहीं-लोग कुत्ते बिल्ली तक मार कर खाजाते हैं—व्यभिचार का बड़ा भयानक प्रचार हो गया है। जब से उन लोगों ने पादरियों का तलाक़ (Divorce) वाला मन्त्र सीखा है, तब से तो इस में 'क्रूमन्तर' की सी बढ़ती हुई है। उपरोक्त देशों में किसी किसी मठ में पच्चीस पच्चीस हज़ार तक निठल्ले साधु भरे हुए हैं। इस से वहां की समाजों और उक्त देशों को बड़ा धक्का पहुंचा है।

बुद्ध लोगों को समझाने के लिये ऐसी ऐसी मनोहर और उपदेशपूर्ण कथाऐं कहते थे, कि उनकी स्फूर्त्ति और बहुज्ञता का उन से अच्छा पता लगता है। उन में से एक दो ये हैं:—

काशी के समीप एक लड़की रहती थी। इसका नाम था कृष्णा गौतमी। इसका विवाह कम अवस्था में होगया था*। इस से एक लड़के का जन्म हुआ। जब वह चलने फिरने लायक़ हो गया, तब वह मर गया। कृष्णा को अपने बच्चे से असीम प्रेम था। वह उसे गोद में लेकर द्वार द्वार पर औषधि पाने की लालसा से—बच्चे को पुनर्जीवित करने

* बाल विवाह की कुप्रथा यहां मुसलमानों के ज़माने से नहीं, कुछ पहले ही से चली आती है।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

की इच्छा से—मारी मारी फिरी, परन्तु मरे हुए बच्चे को कोई अच्छा न कर सका। अन्त में एक बुद्धिमान् पुरुष ने उसका वृत्तान्त सुनकर, अपने मन में सोचा "अफसोस! यह कृष्णा गोतमी मृत्यु का तत्त्व नहीं समझती। मैं इसे सान्त्वना दूंगा।" उस ने उस लड़की से कहा, "मेरी प्यारी बेटी, मुझे कोई ऐसी दवा नहीं मालूम जिस से तेरा पुत्र पुनः जीवन पा सके, परन्तु मैं एक ऐसे पुरुष को जानता हूं, जो तुझे दवा दे सकता है।" "कृपा कर के बताइये वह कौन है, बताइये बताइये" लड़कीने कहा। उसने जवाब दिया "उस का नाम बुद्ध है।" लड़की दौड़ी दौड़ी बुद्ध के पास पहुंची। सादर प्रणाम कर के उसने बुद्ध पर अपना अभिप्राय प्रकट किया। उसने उससे कहा, "हां मैं एक ऐसी दवा जानता हूं। मुझे तुम मुट्ठी भर सरसों लादो।" लड़की वहां से भागी। पर बुद्ध ने रोक कर उससे कहा, "इस बात का ध्यान रखियो कि जिस घर में न तो कोई लड़का मरा हो, और न पति, भ्राता, पिता या दास मरा हो, वहीं से सरसों लाइयो।"

"बहुत अच्छा" कह कर लड़की वहां से जल्दी जल्दी भागी। अपने मरे हुए बच्चे को भी वह पीठ पर लादे हुए लिये जारही थी। पहले जिस से वह सरसों के बीज मांगती वह यह कहता कि ये रहे, ले जाओ। पर ज्यों ही वह कहती, कि कोई—पति...दास इत्यादि—इस घर में मरा तो नहीं, तब उसे यही उत्तर मिलता, कि पति ...दास में से कोई न कोई मर गया है। एक ने उत्तर दिया, बाला, तुम यह कैसा अनोखा प्रश्न करती हो? जीवित मनुष्य कम हैं, मरे हुए ज्यादा हैं।" अन्त में, जब उसने किसी घर को मौत से बचा हुआ न देखा,

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

तब बुद्ध के पास लौट आई। बुद्ध ने उससे पूछा "क्या सरसों के बीज मिलगये ?" (इस के पहले ही वह अपने मृत बच्चे को जङ्गल में रख आई थी) उसने उत्तर दिया मैं नहीं ला सकी, गांव के लोग कहते हैं कि जीते कम हैं, मरे अधिक हैं।" तब बुद्ध ने कहा, "तुमने सोचा था, कि केवल तुम्हीं ने अपना बालक खोया है, मृत्यु के नियम के अनुसार सब जीवोंके जीवन में स्थिरता नहीं है।" इस तरह महात्मा बुद्ध ने उस लड़की का अन्धकार दूर कर दिया, उसे सान्त्वना दी और वह उन की चेली हो गई।

दूसरे प्रकार का एक दृष्टान्त यह है:—

पूर्ण नाम का एक धनी व्यापारी था। जिस समय वह अपने जहाज़ पर था, किसी ने उसे बुद्धका नवीन मत सुनाया। उसने तुरन्त ही इस नवीन मत को अङ्गीकार कर लिया, और त्यागी हो कर, दूसरे लोगों को इसी मत में लाने के लिये वह भयानक लोगों में वास करने के लिये जाने की तय्यारी करने लगा। बुद्ध ने बहुत कुछ समझाया, परन्तु उसने एक न सुनी। वह अपने निश्चय पर दृढ़ रहा। दोनों में इस प्रकार बातें हुईं:—

बुद्ध ने कहा, श्रोण प्रान्त के मनुष्य, जिनमें तुम जाकर बसना चाहते हो, क्रोधी, निर्दय, वासनालिप्त, भयानक और असभ्य हैं*। जब वे लोग तुम्हें दुष्टतापूर्ण, पाशविक, जङ्गली गालियों से भरी और असभ्य भाषा में सम्बोधन करेंगे, तब हे पूर्ण तुम क्या करोगे ?

पूर्ण ने उत्तर दिया, "जब वे लोग मुझे कुवचनों से

* ये लोग आज कल के मोहमन्द, बकाखिल इत्यादि पठानों के पूर्वज होंगे। ऊपर लिखे हुए दुर्गुण आज भी इन लोगोंमें पाये जाते हैं।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

भरी हुई सभा में सम्बोधन करेंगे तब मैं यह सोचलूंगा, कि ओख प्रान्त के मनुष्य सचमुच बड़े भले और सज्जन हैं जो मुझे देखते ही घूंसा और पत्थर से मेरी ख़बर नहीं लेते।" फिर उन दोनों में यों बात चीत हुई:—

"परन्तु यदि वे तुम्हें घूंसे और पत्थर ही मारें तो?"

"मैं उनको भला और सज्जन ही समझूंगा, क्योंकि उन्होंने मुझे लट्ठ या तलवार से तो न मारा।

"परन्तु यदि वे तुम्हारे तलवार ही मारदें तब?"

"मैं उन्हें भला और सज्जन समझूंगा, क्योंकि वे मेरी जान तो छोड़ देंगे।"

"परन्तु यदि वे तुम्हारी जान ही लेलें तब क्या करोगे?"

"फिर भी मैं उन्हें भला और सज्जन समझूंगा, क्योंकि वे दुर्वासनाओं से भरे मेरे इस शरीर को दुःखमय संसार से दूर कर देंगे।"

"साधु! पूर्ण साधु! तुम्हारा धैर्य्य प्रशंसनीय है। तुम ओख प्रान्त में जाकर रहो, तुम्हारा उद्धार होगया है, अब तुम दूसरों का उद्धार करो; तुम पार उतर चुके हो, दूसरों को पार उतरने में सहायता पहुंचाओ; तुम ने शान्ति पाई है, दूसरों को शान्ति पहुंचाओ; तुम पूर्ण निर्वाण पाचुके हो, दूसरों को भी उसी मार्ग पर चलाओ।

इस तरह उत्साहित होने पर पूर्ण इस कष्टसाध्य काम में निमग्न होगया। अहा! धर्म्म प्रचार के काम में और अन्य बातों में भी भारतवासियों की दृढ़ता और वीरता कैसी उज्ज्वलता के साथ दमदमाती है।

इस तरह के शौर्य्य और पुरुषार्थ से बौद्धों ने पृथ्वी की भयानक से भी भयानक जातियां शीलसम्पन्न कर डालीं।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

महा असभ्य, जङ्गली और क्रूर लोग भी दानशील, उदार और दयालु होगये हैं। मंगोलिया और लङ्का इस बात के उदाहरण हैं। धार्मिक आवेश के बौद्ध उपदेशकों के ऐसे असंख्य उदाहरण हैं।

बुद्ध मरते मरते तक उपदेश करते रहे। जिस रात को उनके गौरवपूर्ण जीवन पर अन्तिम पर्दा गिरा एक तत्व-वेत्ता ब्राह्मण शास्त्रार्थ करने आया। उसकी बोली पहिचान कर, बुद्ध ने उससे कहा "यह समय शास्त्रार्थ करने का नहीं है"। धर्म का एक ही मार्ग है। वह मार्ग मैं ने निश्चित कर दिया है। बहुतेरे उस के अनुयायी हो गये हैं। उन लोगों ने वासना, अहङ्कार, और क्रोध को जीत लिया है, इन के जीतने से वे अज्ञान, शङ्का, और असत्य पर भी विजय पा चुके हैं। वे लोग विश्व-दया के प्रशान्त मार्ग पर जा चुके हैं। उन लोगों ने इसी जीवन में निर्वाण पा लिया है। मेरे धर्म में १२ बड़े २ शिष्य हैं। वे लोग संसार भर को दीक्षित कर रहे हैं। उनके बराबर ज्ञानी दूसरे धर्म में कोई नहीं। हे सुभद्र! मैं उन बातों को नहीं कहता जिनका मुझे अनुभव नहीं। मेरी २९ वर्ष की अवस्था थी जब से मैं पूर्ण ज्ञान के पाने के लिये उद्योग कर रहा हूं। यही पूर्ण ज्ञान निर्वाण का साधन है।" इस के बाद उन्होंने अपने शिष्यों से कहा, "प्रियवर्ग! जिस कारण से जीवन होता है, उसी से क्षीणता और मृत्यु भी होती है। इस को कभी मत भूलना। इस सत्य को सदा मन में रखना। मैं ने तुम्हें यही कहने को बुलाया था।" ये बुद्ध के अन्तिम शब्द थे। इस के बाद उन का शरीरान्त हुआ।

॥ इति ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

राजपूत ऐंग्लो-ओरियण्टल प्रेस आगरा
की उत्तम और उपयोगी पुस्तकें।

मेवाड़ का इतिहास—मूल्य १)
सीता जी का जीवन-चरित्र (सम्पूर्ण वाल्मीकीय रामायण का सार)—मूल्य ॥।)
गृहिणी-कर्तव्य-दीपिका—मूल्य ।=)
राजर्षि भीष्म पितामह—मूल्य ।)
भारत-महिला-मण्डल दोनों खंड—मूल्य ॥।)
रमणी-रत्नमाला मूल्य ।=)
रमणी-पंचरत्न—मूल्य ।)
रूपवान, बुद्धिमान व बलवान सन्तान उत्पन्न करने की विधि—मूल्य ≋)
सतीचरित्र नाटक—मूल्य ।)
युवारक्षक—मूल्य ।)
छत्रपति शिवा जी—मूल्य ।)
चमन वृत्तान्त—मूल्य ॥)
गृहशिक्षा—मूल्य ≋)
चन्द्रकला उपन्यास मूल्य ।)
गारफील्ड का जीवन-चरित्र—मूल्य ।)
ढोरों की बीमारी का इलाज—मूल्य ।)
अबला-दुःख-कथा—मूल्य =)
गर्भाधान विधि व जन्मोत्तर विधि—मूल्य =)
बालहित—मूल्य -)॥
जगत् हितैषिणी—मूल्य ।)

मैनेजर राजपूत ऐंग्लो-ओरियण्टल प्रेस,
आगरा।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

શ્રી યશોવિજયજી જૈન ગ્રંથમાળા • ભાવનગર •

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com